आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 6 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जून, 2010 ★ ज्येष्ठ, 2067

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती
जयगुरु हीरा
जयगुरु मान
धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।
भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ
महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये
वेडिंग
ज्वेलरी कलेक्शन
ॲन्टीक
ज्वेलरी कलेक्शन
डायमंड
ज्वेलरी कलेक्शन
सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न
फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
शुद्ध चांदी के बरतन
रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520
सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903
उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644
Visit us at : rcbafnajewellers.com
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।
ग्राहक सेवेची पंचसुत्री
१ | प्रामाणिकता
२ | वाजिबता
३ | विविधता
४ | हजर स्टॉक
५ | सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail: jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तओ पुट्ठो आयंकेणं,
गिलाणो परितप्पइ।
पभीओ परलोगस्स,
कम्माणुप्पेहि अप्पणो।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.11

आतंकस्पृष्ट अज्ञानी फिर,
बन ग्लान तप्त मन होता है।
निज अशुभकर्म का चिन्तन कर,
परलोकभीत हो रोता है।।

जून, 2010
वीर निर्वाण संवत्, 2536
ज्येष्ठ, 2067

वर्ष 67 अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	आचार्य हस्ती के शिक्षासूत्र	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	वह सुख भी दुःखरूप है	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	11
हस्ती-शताब्दी-	उषा से संध्या तक उनका	-तत्त्वचिंतक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा.	15
	अमरत्व का वह उपासक (6)	-श्री सम्पतराज चौधरी	23
शोधालेख-	स्वाध्याय : स्वरूप और चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री	17
	The Historical Development of Jaina-Yoga-System (3)	*-Prof. Sagarmal Jain*	29
प्रासङ्गिक-	जनगणना में जैन लिखाएँ	-डॉ. दिलीप धींग	33
तत्त्व ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (59)	-श्री धर्मचन्द जैन	38
युवा-स्तम्भ-	युवा पीढ़ी की दुविधा	- श्री के.एस. गलुण्डिया	41
लघु-नाटिका-	संयम है अनमोल	- सुमन कोठारी	46
उपन्यास-	सुबह की धूप (16)	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	53
नारी-स्तम्भ-	ससुराल मेरी पाठशाला	-श्रीमती रतन चोरडिया	58
बाल-स्तम्भ -	आसमान में महल	-संकलित	63
श्रद्धा-स्मरण -	संयम में बल, भद्रता अपार	-श्री जिनेन्द्र कुमार जैन	16
कविता/गीत-	ऐसे मुनिवर का क्या कहना	-श्रद्धेय श्री बलभद्र मुनि जी म.सा.	22
	जन्म और मृत्यु से परे	-डॉ. दिलीप धींग	37
	क्या कहेंगे लोग	-श्री धीरज डोसी	120
विचार -	रचना प्रकाशन हेतु टिप्स	-श्री लक्ष्मीचन्द जैन	52
परिणाम -	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (25) का परिणाम		67
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (6)		70
संवाद -	संवाद (28)	-संकलित	72
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	73
शिविर-रिपोर्ट -	ग्रीष्मकालीन 32 शिविरों में संस्कारों का बीजारोपण	-श्री जितेन्द्र डागा	74
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		81
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		121

सम्पादकीय

आचार्य हस्ती के शिक्षासूत्र

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

मानव मात्र के ही नहीं प्राणिमात्र के हित-चिन्तक एवं करुणाशील युगमनीषी सन्त आचार्य श्री हस्ती का 21 अप्रेल 1991 को 13 दिवसीय तप-संथारे के साथ महाप्रयाण हो गया था। उनके जन्म को सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यह वर्ष उनकी जन्म-शताब्दी के अवसर पर अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। आचार्य हस्ती पार्थिव देह से भले ही हमारे बीच नहीं हैं, उनका तेजस्वी ललाट, चेहरे की मन्द मुस्कान, करुणा बरसाते नयन मात्र स्मृति पटल के विषय रह गए हैं, तथापि उनके द्वारा अभिव्यक्त विचार आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में समर्थ हैं। आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि वे हर घटना से शिक्षा ग्रहण करते थे तथा दूसरों को भी उनकी भूमिका के अनुसार शिक्षा देने हेतु जागरूक रहते थे।

आज उन्हें हम एक आध्यात्मिक संत के रूप में स्मरण करते हैं, किन्तु वे एक अच्छे विचारक एवं दार्शनिक भी थे। आगम मर्मज्ञ होने से आगमों की वाणी तो उनको आत्मसात् थी ही, किन्तु उनके द्वारा अभिव्यक्त विचार विश्व मानवता के मार्गदर्शक हैं। विद्वान होने के साथ पूज्यश्री ज्ञानी थे। उनका ज़ीवन ज्ञान एवं आचरण के समन्वय से ओतप्रोत था। उनके प्रवचनों में सरल भाषा में मर्म भरे वाक्य गूंथे रहते थे, जो उनकी मेधा व प्रज्ञा से उद्भूत थे। व्यक्तियों, घटनाओं, प्राकृतिक नियमों को जानने एवं समझने की उनमें विशेष क्षमता थी।

आचार्य हस्ती के ऐसे अनेक विचार हैं जो अल्प शब्दों में गम्भीर अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं तथा पाठक को एक सकारात्मक एवं रचनात्मक दिशा प्रदान करते हैं। आचार्य हस्ती के विचार दर्शन को समझने के लिए यहाँ उनके साहित्य से कुछ विचारों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

आम व्यक्ति को समझाते हुए वे कहते हैं- "एक ही चाबी को घुमाने से ताला बन्द होता है और उसी को घुमाने से ताला खुल जाता है, उसी प्रकार मन भी बुरे भावों से कर्म-बन्ध करता है और अच्छे भावों से कर्म-बन्ध तोड़ता है।"

अत्यन्त सरल रूप से धर्म के संदेश को मानव मस्तिष्क तक पहुँचाने का प्रयत्न है यह। मनुष्य को ज्ञात है कि वह एक ही चाबी से ताला बन्द करता है एवं खोलता है। इस उदाहरण से उसको यह बात हृदयंगम हो जाती है कि चाबी की तरह मन को अशुभ भावों की ओर मोड़ते हैं तो कर्म-बन्ध हो जाता है और दूसरी तरफ यानी शुभ भाव की ओर मोड़ते हैं तो कर्म-क्षय हो जाते हैं। इसी प्रकार आचार्य श्री एक अन्य वाक्य में कहते हैं- ''जिस तरह मनुष्य को अपनी जूती काट खाती है उसी तरह अपना ही मन जीव को दण्ड देता है।'' जिस प्रकार अपने ही जूतों से पैरों में छाले हो जाते है एवं मनुष्य को बड़े कष्ट का अनुभव होता है उसी प्रकार अपने दुर्मन से मनुष्य को कष्ट का अनुभव होता है।

अहंकार के सम्बन्ध में हम खूब पढ़ते हैं, किन्तु आचार्य श्री ने एक ही वाक्य में उसकी हेयता को जिस प्रकार प्रतिपादित किया है वैसा अन्यत्र पढ़ने में नहीं आया। आचार्यप्रवर ने फरमाया है-''अहंकार से सत्कर्म वैसे ही क्षीण हो जाते हैं जैसे मणों दूध पावरत्ती संखिया से ज़हरीला हो जाता है।'' संखिया एक प्रकार का विष है, जो दूध में मिल जाए तो उसे विषैला बना देता है। उसी प्रकार हमारे रहे हुए सद्गुणों का यदि हमें अहंकार हो जाए तो हमारे सद्गुण दूषित हो जाते हैं। अहंकार की त्याज्यता को आचार्य श्री ने प्रबल रूप से स्थापित किया है।

क्रोधी व्यक्ति को कोई पसन्द नहीं करता, हर व्यक्ति उसका बुरा मानता है। किन्तु आचार्य श्री का सोच है-''पागल की बातों को जैसे हम बुरी नहीं मानते, वैसे ही क्रोधादि से पराधीन व्यक्ति की बातों को भी बुरी नहीं मानना चाहिए, क्योंकि वह परवश एवं दया का पात्र है।'' परिवार एवं समाज में प्रायः जो विघटन होते हैं उनमें क्रोध प्रमुख कारण होता है। आचार्यश्री ने उनको सुन्दर दिशा निर्देश दिया है कि क्रोधी व्यक्ति की बातों की उसी प्रकार उपेक्षा कर दी जानी चाहिए जिस प्रकार पागल की बातों की हम उपेक्षा कर देते हैं। क्रोध के आवेश में जो कहा जाता है उसमें सार भूत तत्त्व को ग्रहण करना चाहिए, किन्तु क्रोध करने वाले व्यक्ति के प्रति उसी प्रकार द्वेष नहीं करना चाहिए, जिस प्रकार कि हम पागल के प्रति द्वेष नहीं करते हैं। यही नहीं क्रोधी व्यक्ति दया का पात्र होता है क्योंकि वह अज्ञान के कारण क्रोध के परवश है। क्रोधी के प्रति क्रोध का व्यवहार क्रोध को बढ़ाता है एवं वातावरण को विषाक्त बना देता है। अतः क्रोधी के प्रति शीतलता का व्यवहार किया ज़ाना चाहिए। आचार्यप्रवर ने फरमाया है-''जो

विरोधाग्नि का मुकाबला शान्ति के शीतलजल से करते हैं, वे विरोधी को भी जीत लेते हैं।'' विरोध की अग्नि का मुकाबला अग्नि से करेंगे तो अग्नि ही बढ़ेगी। बदले की भावना कभी शांति का अनुभव नहीं कराती। अग्नि को बुझाना है तो शीतल जल उपयोगी होता है। उसी प्रकार वैर-विरोध की शृंखला को शांत करना हो तो शीतलता का प्रयोग करना चाहिए। इससे विरोधी व्यक्ति के मन में भी दुर्भावों का स्थान सद्भाव लेने लगते हैं। अन्त में वह हमारे व्यवहार का कायल हो जाता है।

यदि एक व्यक्ति क्रोधाविष्ट होकर वातावरण को दूषित करता है, और दूसरा शांत भाव से संतुलित रहता है, तो बिगड़ा हाल पुनः सुधर जाता है। विचारशील पूज्यप्रवर फरमाते हैं-''एक का दिल-दिमाग बिगड़े, उस समय दूसरा सन्तुलित मन को सम्भाल ले, तब भी बिगड़ा हाल सुधर जाता है।''

सच्चरित्रता का अपना बल होता है। मनुष्य आज भौतिक प्रलोभनों के आकर्षण में इतना बंधा हुआ है कि वह सच्चरित्रता को गौण कर देता है। पढ़े लिखे होने का महत्त्व तभी है जब व्यक्ति चारित्रवान भी हो। आचार्य हस्ती का कथन है-''यदि मानव में सच्चरित्रता का बल नहीं है, तो शास्त्रों का ज्ञान, वक्तृत्वकला, निपुणता और प्रगाढ़ पाण्डित्य व्यर्थ हैं।'' शास्त्रों का ज्ञान होना, वक्तृत्वकला में निपुण होना और प्रगाढ़ पाण्डित्य होना तभी शोभा देता है जब व्यक्ति में उसके अनुरूप चारित्र भी हो। ज्ञान के साथ आचरण नहीं होगा तो कोरा ज्ञान चंदन के भार को ढ़ोने वाले गधे के समान होगा।

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ जब पूरी हो जाती हैं तो वह लोकैषणाओं के जाल में फंसने लगता है। बड़े-बड़े साधु संत भी लोकैषणा के जाल में फंस जाते हैं। *योगी महात्माओं को भी इसमें रस आने लगता है,* किन्तु आचार्य श्री योगियों को भी सावधान करते हैं कि योग साधना आत्मिक शुद्धि के लिए है, लोक में यश-कीर्ति की प्राप्ति एवं लब्धियों के दुरुपयोग के लिए नहीं। वे कहते हैं-''योग साधना का सबसे बड़ा विघ्न लोकैषणा है। नाना प्रकार की लब्धियाँ योग का प्रधान फल नहीं हैं। आध्यात्मिक योगी इन्हें प्राप्त करने के लिए योग की साधना नहीं करता। ये तो आनुषंगिक फल हैं।'' साधक व्यक्ति को चमत्कारों में नहीं उलझना चाहिए। चमत्कार तो आनुषंगिक होते हैं। इनमें जो साधक रस लेने लगता है तो वह मूल साधना से भटक जाता है। आचार्य श्री के

कई कार्य लोगों को चमत्कारी लगते थे, किन्तु वे चमत्कार दिखाने की लेश मात्र भी इच्छा से रहित थे।

मनुष्य जन्म सत्कर्म करने के लिए मिला है। यदि इसे दुष्कर्म में व्यर्थ गवां दिया तो पश्चात्ताप एवं दुःखसागर में डूबने के अलावा कोई चारा नहीं रहेगा। तब जीवन में अशान्ति और असंतोष का डेरा कभी समाप्त नहीं होगा। पूज्य श्री का कथन है–"मनुष्य जन्म में करणी नहीं की तो थली के उस जाट की तरह पछताना पड़ेगा, जिसने चिड़ी उड़ाने के लिए हीरे फैंक दिए।" जीवन का मूल्य आंकना आवश्यक है। एक-एक दिन करके महीने और वर्ष बीत जाते हैं। बचपन एवं फिर जवानी और बुढ़ापा बीत जाता है। लेकिन मनुष्य को जीवन की महत्ता का बोध नहीं होता। मूल्यवान हीरे को जिस प्रकार कोई किसान खेत की रक्षा करते हुए कौऐ को उड़ाने में फैंक देता है उसी प्रकार हम सांसारिक भोगों की सुरक्षा में इस अमूल्य मानव जीवन को व्यर्थ गवां देते हैं। आचार्य श्री ने मनुष्य की इस असावधानी से उसे अवगत कराया है तथा प्रेरणा की है कि वह कुछ अच्छा करे।

दोषों अथवा बुराइयों की ओर मनुष्य का मन जल्दी आकर्षित होता है जबकि सद्गुणों और अच्छाइयों के प्रति उसकी दृष्टि नहीं जाती। दूसरों के दोष देखने में हमारी सदैव रुचि बनी रहती है। किन्तु दूसरों के गुण देखकर कुछ सीखने का भाव मन में नहीं आता। पूज्य गुरुदेव ने हमारी इस प्रवृत्ति पर आक्षेप करते हुए सरल शब्दों में समझाया है–"मनुष्य को मधुमक्खी की तरह बनना चाहिए, न कि मल ग्रहण करने वाली मक्खी के समान।" मधुमक्खी फूलों का रस चुनती है, जबकि मल ग्रहण करने वाली मक्खी गन्दगी पर बैठती है। मनुष्य को अच्छा बनना है तो उसे सर्वविध गन्दगी से बचना होगा एवं गुणग्राही बनना होगा। मधुमक्खी गुणग्राहिता की सूचक है और मल ग्रहण करने वाली मक्खी दोषदृष्टि की सूचक है। हमारी दृष्टि गुणग्राहक बने यही आचार्यप्रवर का संदेश है।

हम संसार के लोगों को सुधारना चाहते हैं, किन्तु स्वयं को सुधारने के लिए एक कदम भी आगे नहीं बढ़ते हैं। ऐसी स्थिति में निराशा एवं घृणा का वातावरण बनता है। पूज्य श्री ने स्वयं के सुधार पर बल देते हुए कहा है–"संसार को सुधारना कठिन है, परन्तु साधक स्वयं अपने को सुधारकर अपने ऊपर प्रयोग करके दूसरों को प्रेरणा दे सकता है।"

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

जया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणइ।
तया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ।।39।।
जया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संजोगं सऽब्भितर-बाहिरं ।।40।।
जया चयइ संजोगं सऽब्भितर-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ।।41।।
जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं।
तया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं ।।42।।
जया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ।।43।।
जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं।
तया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ।।44।।
जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छइ।
तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।।45।।

अर्थः-

जब मनुष्य पुण्य और पाप तथा बन्ध और मोक्ष को जान लेता है, तब जो भी दिव्य (देव-सम्बन्धी) और मानवीय (मनुष्यसम्बन्धी) भोग हैं, उनसे विरक्त (निर्वेद को प्राप्त) हो जाता है ।।39।।

जब साधक दैविक और मानुषिक भोगों से विरक्त हो जाता है, तब आभ्यन्तर और बाह्य संयोग का परित्याग कर देता है ।।40।।

जब साधक आभ्यन्तर और बाह्य संयोगों का त्याग कर देता है, तब वह मुण्डित हो कर अनगारधर्म में प्रव्रजित हो जाता है ।।41।।

जब साधक मुण्डित होकर अनगारवृत्ति में प्रव्रजित हो जाता है, तब उत्कृष्ट-संवररूप अनुत्तर धर्म का स्पर्श करता है ।।42।।

जब साधक उत्कृष्ट-संवर रूप अनुत्तर धर्म का स्पर्श करता है, तब अबोधिरूप पाप (कलुष) द्वारा किये हुए (संचित)कर्मरज को (आत्मा से) झाड़ देता है (पृथक् कर देता है) ।।43।।

जब साधक अबोधिरूप पाप द्वारा कृत (संचित) कर्मरज को झाड़ देता है, तब सर्वत्र व्यापी ज्ञान और दर्शन (केवलज्ञान और केवलदर्शन) को प्राप्त कर लेता है ।। 44 ।।

जब साधक सर्वत्रगामी ज्ञान और दर्शन को प्राप्त कर लेता है, तब वह जिन और केवली होकर लोक और अलोक को जान लेता है ।।45।।

-दशवैकालिक सूत्र, चतुर्थ अध्ययन, गाथा-39-45

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- हर माता-पिता यह देखे कि बच्चे-बच्चियों के जीवन में विकृति कहाँ से आ रही है। यह अच्छी तरह देखने के पश्चात् उनको समझाने का प्रयास किया जाए। समझाने-बुझाने के बाद उन्हें अपने विचार प्रकट करने का मौका दीजिए। जब उनकी समझ में यह बात आ जायेगी कि अमुक चीज़ से उनको नुकसान है और अमुक चीज़ से फायदा है तो वे स्वतः ही सीधी राह पर आ जायेंगे। यह चीज़ उनके दिमाग में जमा दीजिए कि जो कुछ वे कर रहे हैं, उससे धन, जीवन और समय की हानि हो रही है।
- आपके और हमारे जीवन में जो थोड़ी बहुत अच्छाई आयी है, वह भी बिना निमित्त के नहीं आई है। यदि आपके लिए कोई संतों का निमित्त नहीं बना होता या पूर्वजों का निमित्त नहीं होता, घर में अच्छा वातावरण नहीं होता, सत्संग नहीं मिलता तो जो थोड़ी बहुत अच्छाई आई है, वह आती क्या? आपने निमित्त का फायदा उठाया तो क्या आपके निमित्त का फायदा दूसरों को नहीं मिलना चाहिए? यदि आप निमित्त का फायदा दूसरों को नहीं देंगे तो मैं यह कहूँगा कि आप कर्जदार रह जाएंगे। इसीलिए यदि अच्छा निमित्त बनें तो मर्जी आपकी, वरना बुरा निमित्त तो कम से कम मत बनिये। हर माँ, बाप, स्त्री, भाई, भतीजे आदि का कुछ न कुछ निमित्त होता है। माता-पिता की कमजोरी से बच्चों में गलत परिणति आ जाती है।
- दुनियाँ भर के व्यवहार बच्चों के लिए किये जाते हैं। उनकी सुख-सुविधा बढ़ाने के लिए, शिक्षा के लिए, धंधे में लगाने के लिए हजारों तरह के प्रयास करते हैं, व्यवहार करते हैं, लेकिन उनके आत्म-सुधार के लिए क्या कभी आपने प्रयास किया है, या करते हैं?
- आप प्रातःकाल उठते ही अपने बच्चों के लिए यह तो चिन्ता करते हैं कि उन्होंने नाश्ता किया या नहीं। किन्तु उनसे यह नहीं पूछते कि उन्होंने नमस्कार मंत्र का स्मरण किया या नहीं, सामायिक की या नहीं? उनके जीवन में शुभ संस्कार बढ़ने चाहिए, इसके लिए आपने क्या किया? यदि यह खयाल नहीं है तो यही कहा जाएगा कि आपका बच्चों पर मोह है, अनुराग नहीं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

वह सुख भी दुःख रूप है

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा ब्यावर चातुर्मास में फरमाए गये प्रवचन का संकलन एवं संपादन श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली ने किया है।**-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं,

प्रभु महावीर ने अपनी वाणी के माध्यम से हमें हित-अहित का ज्ञान देकर हमारे लिए कल्याणकारी मार्ग का निरूपण किया है। प्रभु की उस शाश्वत वाणी का स्वाध्याय निरन्तर चल रहा है। संसार में प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है, दुःख कोई नहीं चाहता। सुख के लिये पुरुषार्थ करता है फिर भी दुःख ही मिलता है। यदि सुख मिल भी जाये तो वह अल्पकालिक ही होता है जो समय आने पर दुःख में बदल जाता है। वह पुरुषार्थ करने पर भी सुख-दुःख के चक्रव्यूह से बाहर नहीं निकल पाता। प्रभु ने अनन्त करुणा करके मनुष्य को सुख-दुःख और जीवन-मरण की भूलभुलैया से मुक्त होने का बोध दिया है, लेकिन हम अपने अज्ञानवश इस बोध की किरण को प्राप्त करने का प्रयास ही नहीं करते हैं।

बन्धुओं! हम अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए पुरुषार्थ करते हैं। हमारे अन्तरमन में एक स्वाभाविक इच्छा उठती है-"मुझे सुख चाहिए, मुझे निराकुलता चाहिए।" इस इच्छा की पूर्ति के लिये हम रात-दिन प्रयत्न करते हैं। हमारा प्रयत्न होता है- धन उपार्जन का, उपभोग की वस्तुएँ जुटाने का और उन्हें भोगने का। हम समझते हैं कि उन्हें भोगने में सुख मिलेगा। प्रयत्न में कोई कमी नहीं रखते। फिर भी भोगने के बाद सुख नहीं मिलता और यदि मिल भी गया तो वह अल्पकाल के लिये होता है। पुरुषार्थ करने पर भी सुख क्यों नहीं मिलता है? क्योंकि हम सुख-प्राप्ति के लिये एक ही तरह का प्रयोग करते आ रहे हैं और वह है, पदार्थ को जुटाने का और उसे भोगने का। सुख नहीं मिलने पर भी प्रयोग को बदलने का नहीं सोचते। हमने कभी गहराई से विचार भी नहीं किया कि अधिक से अधिक भोग करके भी यदि सुख नहीं मिलता तो हमारा सुख-प्राप्ति का प्रयोग ठीक नहीं है, हमारी धारणा में कहीं भूल है। हमें इस बात का बोध ही नहीं जगा कि धन का अर्जन और उसका भोग सुखी बनने का उपाय नहीं है। यदि सुख मिल भी

गया तो वह पदार्थ आधारित होने से पदार्थ के अभाव के साथ दुःख में परिणत हो जाता है।

अधिक धन अर्जन से धन-प्राप्ति की लालसा और बढ़ती है। इसी तरह से अधिक भोग भोगने से भोगने की इच्छा भी अधिक बढ़ती है। भोगों से कभी तृप्ति नहीं होती। अतः भगवान् ने कहा है कि विषय-भोग सुख नहीं देते, केवल सुखाभास देते हैं। उनका अभाव ही सुख है। इसलिये मनुष्य का पुरुषार्थ इन विषय-भोगों के त्यागने में लगना चाहिए तभी हमें सच्चा सुख मिलेगा, जिसके पीछे दुःख नहीं होगा। इस शाश्वत सुख की प्राप्ति ही जीवन का ध्येय होना चाहिए। जिनवाणी हमें वह मार्ग बताती है जिस पर चलकर हम शाश्वत सुख को पा सकते हैं। इस मार्ग को हम धर्म कह सकते हैं। धर्म वह है जो हमें संसार के दुःखों से उठाकर उत्तम सुख में पहुँचा दे।

हमने भोजन तो किया पर पेट नहीं भरा, क्योंकि भोजन को शरीर पर ही पोत दिया। यही दशा आज हमारी हो रही है। हम पुरुषार्थ तो करते हैं पर सुख नहीं मिलता, क्योंकि हमारे पुरुषार्थ की दिशा ही गलत है। सत्य का दिग्दर्शन कराते हुए प्रभु ने कहा है कि संसार में दो तत्त्व होते हैं- एक जीव और दूसरा अजीव। शरीरधारी जीव सुख-दुःख का वेदन करता है जबकि अजीव इस वेदन से रहित होता है। जीव तत्त्व में चैतन्य का गुण है, अजीव में नहीं। अनादिकाल से हमारा जीव कर्म पुद्गलों से जुड़ा होने के कारण नये-नये शरीर रूपी पर्याय धारण करता रहता है, पर अजीव के साथ जुड़ा रहकर भी जीव, जीव ही रहता है और अजीव, अजीव ही रहता है। जीव में ज्ञान का गुण है, अजीव में नहीं। इस तथ्य को जाने बिना हम जीव के सच्चे सुख की प्राप्ति का पुरुषार्थ नहीं कर सकते। जीव यानी आत्मा भिन्न है, अजीव यानी पदार्थ भिन्न है। जीव 'स्व' है, पदार्थ 'पर' है। प्रभु ने इस ज्ञान को भेदज्ञान कहा है। जब तक जीव और अजीव की यह निश्चित स्थिति रहेगी तब तक जीव के सुख-दुःख का चक्र चलता ही रहेगा। इस चक्र को समाप्त करने के लिए ऐसा पुरुषार्थ होना चाहिए जो जीव को पदार्थ से मुक्त कर दे अर्थात् आत्मा पर लगे कर्मों का शमन कर दे। फिर आत्मा अपने शुद्ध स्वाभाविक रूप में आ जायेगी। शरीर के अभाव में उसे न सुख होगा न दुःख होगा। वह सदैव अपनी स्वाभाविक दशा में रहेगी जहाँ अनन्त शान्ति होगी, अनन्त आनन्द होगा।

बन्धुओं, भगवान् की इस वाणी का तात्पर्य एक ही है कि आप इस मनुष्य

भव की महत्ता को समझ कर सच्चे और शाश्वत सुख की प्राप्ति में ही अपने पुरुषार्थ का नियोजन करें। यह मानव भव केवल खाने-पीने और विषय-भोगों को भोगने के लिये नहीं है। यह खोई हुई आत्मा को पाने के लिये है। यह जीवन सोने के लिए नहीं है, बल्कि सोई हुई आत्मा को जगाने के लिये है। यह घूमने फिरने के लिये भी नहीं है, परन्तु घूमती हुई आत्मा को राह दिखाकर उसे अपने शाश्वत धाम में पहुँचाने के लिये है। रागद्वेष और मोह-शोक में उलझ कर दुःख पाने की तो हमारी यात्रा अनादिकाल से चली आ रही है। अब इस यात्रा को समाप्त करने का स्वर्णिम अवसर आपके सामने है। अपने कर्मों को काटेंगे तो जन्म-मरण के चक्र से छूट जायेंगे और उस आनन्द धाम पर पहुँच जायेंगे। जहाँ तनिक भी दुःख नहीं होता। आत्मा अपने विशुद्ध स्वरूप में केवल साक्षी भाव में रहेगी। यह अक्षय आनन्द की अवस्था होती है। अतः यह मानव देह रहते हुए ही यदि हमने अपनी आत्मा को पहचान लिया तो फिर कुछ और जानना शेष नहीं रहेगा, आपका हर कदम आत्मा के लिये ही होगा। आप आत्म-रमण में ही रहोगे। शरीर एवं सम्बन्धों पर ममत्व नहीं रहेगा। ममत्व नहीं रहने से उनके छूटने पर आकुलता नहीं होगी। यही मानव जीवन की सार्थकता होगी।

बन्धुओं, आपके मन में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता होगा कि सच्चे सुख और आनन्द में क्या अन्तर है। 'सुख' शब्द का प्रयोग हम अधिकतर भौतिक सुख के लिये करते हैं। यह इहलौकिक है एवं पदार्थ पर आधारित है। इस सुख के गर्भ में दुःख छिपा है जो पदार्थ का अभाव होने पर प्रकट हो जाता है। इसे ही हम कहते हैं- सुखःदुःख का चक्र। सच्चा सुख या आनन्द एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। यह सुख पदार्थ पर आधारित नहीं होता है। अतः पदार्थ का संयोग या वियोग उसे प्रभावित नहीं करता। इस सुख में दुःख नहीं भरा होता है। भौतिक सुख इन्द्रियजन्य होता है, पर सच्चा सुख या आनन्द इन्द्रियातीत होता है। यह आत्मा की स्वाभाविक दशा की अनुभूति का है। इसका वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह केवल अनुभूति का विषय है। ऐसा सुख या आनन्द अक्षय, अनन्त एवं अव्याबाध होता है। आत्मा की मुक्त अवस्था में इसकी पूर्ण अनुभूति होती है।

अगर कोई सोचे कि हमें तो पदार्थों के उपभोग में ही आनन्द मिलता है तो यह उसकी भ्रान्ति है। यह सोच वैसे ही है जैसे एक अबोध बालक मिट्टी खाता है

और उसी में आनन्द मानता है। वह नहीं जानता कि मिट्टी खाने के घातक परिणाम हैं। बस यही दशा आज मनुष्य की है। अज्ञानवश वह इन्द्रियजनित सुख को ही आनन्द मान बैठा है, इसलिये पौद्‌गलिक विषय-भोगों में ही सुख ढूंढ रहा है। इनमें अगर सुख मिल भी जाये तो वह अल्पकाल के लिये ही होता है। विषय-भोगों में फंसने पर अतृप्ति का दुःख निरन्तर मिलता रहता है और आकुलता बढ़ती रहती है। इसके विपरीत आत्म-स्वभाव की प्राप्ति पर जो सुख की अनुभूति होती है वह स्थायी होती है उसके पीछे दुःख नहीं होता। यही आनन्द की दशा है। सुख बाहर की वस्तुओं में है जबकि आनन्द आत्मा के भीतर में ही है। आनन्द को कहीं बाहर से लाना नहीं होता है। शरीर में रही आत्मा एक मैले वस्त्र की तरह है। वस्त्र को जब साबुन लगाकर धोते हैं तो वह उजला हो जाता है। वस्त्र का उजलापन कहीं बाहर से नहीं आया। यह तो वस्त्र में ही था जो मैल हटने पर प्रकट हो गया। यही दशा हमारी आत्मा की है। आत्मा पर विकारों का मैल लगा हुआ है। अपने सत् पुरुषार्थ से जब विकारों का मैल धुल जायेगा तो आत्मा अपने विशुद्ध रूप में आ जायेगी। आनन्द विशुद्ध आत्मा का अपना स्वभाव है, पर उसकी अनुभूति उस पर आए विकारों के आवरण के कारण नहीं होती है।

इसी बात को हम एक अन्य उदाहरण से भी समझ सकते हैं। हर पत्थर में मूर्ति का रूप छिपा है। शिल्पकार जब पत्थर के अनावश्यक भाग को काट देता है तो एक सुंदर मूर्ति प्रकट हो जाती है। यह मूर्ति कोई बाहर से नहीं आई। यह तो पत्थर में ही समाहित थी।

इसी तरह आनन्द भी आत्मा में ही समाहित होता है। उसे शिल्पकार की तरह अपने पुरुषार्थ से प्रकट करना होता है। सुख पराया होता है, आनन्द आत्मा का स्वयं का होता है। इस सत्य को आप जितना जल्दी जानेंगे, उतना ही जल्दी आपका पुरुषार्थ आनन्द प्राप्ति में लगेगा। अन्यथा हमारी विषय-भोगों में सुख ढूँढने की दौड़ हमें दुःख और दुर्गति के अलावा और कहीं नहीं ले जायेगी। कहा भी है-

चढ़ उत्तंग जासे पतन, शिखर नहीं वह कूप है।
जिस सुख में दुःख बसे, वह सुख भी दुःख रूप है।।

गुरुजनों से हमें सम्यक् मार्गदर्शन मिल रहा है। अगर आप उस कल्याणकारी मार्ग पर आगे बढ़ेंगे तो निश्चय ही आनन्द की प्राप्ति होगी लेकिन बढ़ना तो आपको ही होगा।

आचार्य हस्ती जन्मशती

उषा से संध्या तक उनका

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

(तर्ज : चाँद सी...... ।)

हस्ती गुरुवर संघ शिरोमणि, महिमा जिनकी अति न्यारी।
उषा से संध्या तक उनका, जीवन कीर्ति यशधारी।।
चैत्र सुदि माँ भक्ति के दिन, माँ के गर्भ पधारे थे,
सच्ची प्रवचन माता, भक्ति, पितु की मृत्यु धारे थे-2।
सिंहवत् दीक्षा सिंहवत् पालन, तस संयम गरिमा भारी।। 1।।
उषा से संध्या......... ।

छोटी काया छोटी अवस्था, अध्ययन ध्यान निराला था,
लखकर मेधा गुरु शोभा ने, गणि का पद लिख डाला था-2।
दृढ़धर्मी अरु प्रिय धर्मी से, शासन शोभा विस्तारी।।2।।
उषा से संध्या......... ।

अपनापन सेवा तर्पण अरु, वत्सलता की जीत कही,
आत्म जवाहर पन्ना गणेशी, समरथ आनन्द प्रीत रही-2।
घासी मदन रावत पुष्कर, मिसरी भी तव गुण बलिहारी।। 3।।
उषा से संध्या......... ।

जीवन में मृत्यु का अनुभव, सब भय को दूर भगांता है,
वियोग दिखे संयोग में तब, सम्यक् दर्शन को पाता है-2।
साता की आसक्ति तज, आगम के सच्चे अनुगामी।। 4।।
उषा से संध्या......... ।

प्रज्ञा निर्मल श्रुत भी था प्रबल, वर्षों पहले संकेत दिया,
जागृति अद्भुत निकले सब सल, संथारा पूर्ण सचेत किया-2।
आस्था अविचल मुदिता अनुपम, मुगति के तुम अधिकारी।। 5।।
उषा से संध्या......... ।

(प्रवचन से संकलित)

श्री बलभद्रमुनि जी की स्मृति में (दिवंगत 23 मई रात्रि)

संयम में बल, भद्रता अपार

श्री जिनेन्द्र कुमार जैन

अजब गजब उनका पुरुषार्थ
संयमरत था उनका हार्द
जीवन की क्या बात कहूँ मैं,
बलभद्र नाम हो गया सार्थ

नामानुरूप अप्रमत्त थे अणगार
हरदम करते थे प्राणी उपकार
भारण्ड सम प्रवृत्ति प्रतिक्षण करते
संयम में बल, भद्रता अपार

विनय से जो पाते बोधि
उनकी प्रज्ञा निर्मल होती
बलभद्र में थी झलक ऐसी ही
सुप्त आत्मा जागृत होती

सीख सिखाते हरदम मोटी
सीखा नहीं बुद्धि थी छोटी
कमी नहीं थी सद्बोध में
आत्मा क्यों नहीं उनसी होती

आपश्री हमेशा याद आवोगे
दूर कभी ना जा पावोगे
प्रेरित करेंगे जब भी उपकारी
आँखों को नम कर जाओगे

अन्तःप्रार्थना करजोड़ नमन हो
प्रेरित वचनों का दर्पण हो
जीवन मेरा भी बने आपसा
श्रद्धा सुमनाञ्जलि यही अर्पण हो

-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर (राज.)

शोधालेख

स्वाध्याय : स्वरूप और चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री

स्वाध्याय मानव के लिये एक प्रकाश-स्तम्भ के समान है। जो स्वाध्याय करता है, उसे अलौकिक-प्रकाश मिल जाता है। स्वाध्याय से मानव का अन्तःकरण न केवल ज्ञान को अंकुरित करता है अपितु वह क्रमशः पल्लवित, पुष्पित और मोक्ष रूपी फल को प्राप्त करने के लिये प्रयासशील बनाता है। यथार्थ में स्वाध्याय दुःख के जाल से छुटकारा दिलाता है, उत्तम एवं शाश्वत सुख में पहुँचाता है, जीवन को निखारता है।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय आदि अष्टविध कर्मों के क्षय के लिये, अथवा मन, वचन और काय की क्रियाओं को समाप्त करने के लिये 'स्वाध्याय' करना चाहिये। अपनी आत्मा के लिये परम हितकारक आगम के 'अध्याय'-अध्ययन को 'स्वाध्याय' कहा गया है।[1] ज्ञान की मोक्षमार्ग में अपनी एक प्रमुख-भूमिका रहती है। 'मोक्ष' की प्रक्रिया, 'ज्ञान' से ही प्रारम्भ होती है और 'ज्ञान' में ही पूर्णता प्राप्त करती है। इस पूर्णता के बीच में अर्थात् केवलज्ञान की प्राप्ति तक, समीचीन शास्त्रों के अध्ययन को 'स्वाध्याय' कहा गया है। ज्ञानावरण कर्म का विनाश, स्वाध्याय की ही भिन्न-भिन्न भूमिकाओं पर आधारित रहता है। इसके इस अपूर्व एवं अचिन्त्य माहात्म्य को शब्दों की संकीर्ण सीमा में निबद्ध नहीं किया जा सकता।

स्वाध्याय शब्द की निरुक्ति दो प्रकार से की जा सकती है- प्रथम- स्व+अध्याय, द्वितीय- सु+अध्याय। पहली निरुक्ति का स्पष्टतः आशय होगा- जो अध्ययन, आत्मा के लिये हितकर हो और दूसरी निरुक्ति का सुस्पष्ट अभिप्राय यही होगा- सम्यक् शास्त्रों का अध्ययन। ये दोनों ही अर्थ ज्ञानावरण कर्म के विनाश रूप परिणाम का बोध कराते हैं।

यह तो हुआ स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ, किन्तु जब कोई मोक्षार्थी, स्वाध्याय में संप्रवृत्त होना चाहे तो उसे कौनसी क्रिया करनी चाहिये, जिसे स्वाध्याय के अन्तर्गत माना जा सकता है? अर्थात् स्वाध्याय का क्रियात्मक या व्यावहारिक स्वरूप क्या है? यह विचार करना आवश्यक है।

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में स्वाध्याय का एक क्रम इस प्रकार है- आराध्य देव आचार्य श्री जी शिष्यों को पढ़ाते हैं। इस पढ़ने में या पढ़ाने में शब्द की और अर्थ की भी शुद्धता होनी चाहिये। अर्थात् शब्द- अर्थ का सुस्पष्ट- विचार किए बिना न तो अतिशीघ्र पढ़ना चाहिये, और न ही अस्थान में रुक-रुक कर पढ़ना चाहिये। यह तो हुई पढ़ने की समीचीनता जो कि शास्त्रों के अध्ययन में सदा अभिवांछित रहती है।

दूसरी समीचीनता यानी शुद्धता होती है पढ़ाने वालों की। अर्थात् पढ़ाने वाला विनय आदि गुणों से युक्त होना चाहिये। इन दोनों शुद्धताओं के रहने पर, पढ़ना एवं पढ़ाना रूप क्रिया को 'वाचना' कहा जाएगा। यह स्वाध्याय का प्रथम प्रकार है।[2]

प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि पढ़ने वाला पढ़ता रहता है, पढ़ाने वाला पढ़ाता चला जाता है। किन्तु पढ़ने वाले की समझ में कभी कोई शब्द नहीं आता है, या कभी वह किसी शब्द के अर्थ को नहीं समझ पाता है। कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि शब्द और अर्थ दोनों ही, पढ़ने वाले की समझ में नहीं आते। फिर भी, वह संकोचवश पढ़ाने वाले से उस शब्द या अर्थ के बारे में दुबारा नहीं पूछता। फलतः उसका सारा अध्ययन व्यर्थ में चला जाता है।

इसीलिये श्रमण या श्रावक जो कुछ भी जितना पढ़े, उसके बारे में अपने आचार्य या उपाध्याय से प्रश्न अवश्य पूछे। यानी कि पढ़ते समय या पढ़ने के बाद शिष्य के मन में अधीत अंश के बारे में जो-जो जिज्ञासाएँ उठती हैं, उनके बारे में अथवा जितना अधीत अंश, जिस किसी तरह से उसकी समझ में न आ पाया हो, उसे समझाने के लिये, पढ़ाने वाले से पूछना चाहिये। यह 'पूछना' स्वाध्याय का दूसरा भेद है, जिसे 'पृच्छना'[3] के नाम से अभिहित किया गया है।

यहाँ एक विचारणीय प्रश्न उपस्थित होता है कि प्रश्न करना तो अध्ययन नहीं है। फिर इसे 'स्वाध्याय' कैसे माना जाये? इसका भी स्पष्टतः समाधान है कि पठित-विषय में संशय होने पर उसे दूर करने के लिये, अथवा पढ़े हुए अंश को जिस रूप में पढ़ने वाले ने हृदयंगम किया है, अपनी इस समझ को और अधिक दृढ़ एवं पुष्ट करने के लिये, जब वह कोई प्रश्न करता है या कुछ पूछता है, तब भी वह समीचीन ढंग से ही तो पढ़ता है। यदि वह अपनी जिज्ञासाओं का समाधान न करे या पठित विषय की समझ की परिपुष्टि न करे, तो उसका पठन समीचीनता

को प्राप्त नहीं हो पाएगा। इसलिये- 'पृच्छना' के अभाव में, उसका अध्ययन 'स्वाध्याय' की श्रेणी में आने से वंचित रह सकता है। ऐसा न हो, इसलिये इस 'पृच्छना' को 'स्वाध्याय' का एक सर्वथा अभिन्न अंग स्वीकार किया गया है।

इसी संदर्भ में एक तथ्य विशेषतः ज्ञातव्य है कि शिष्य के सारे प्रश्न अपने सन्देह को दूर करने से सम्बन्धित होने चाहिये, या फिर अपनी समझ को पुष्ट करने से सम्बन्धित होने चाहिए। यदि ये प्रश्न, शिष्य द्वारा आचार्य या उपाध्याय से विवाद करने के लिये उठाये गये हों अथवा अपने पाण्डित्य-प्रदर्शन के लिए उठाये गये हों, तो इस दशा में, वे स्वाध्याय के अंग नहीं माने जायेंगे। तब इन्हें 'पृच्छना' भी नहीं कहा जा सकेगा।

स्वाध्याय का तृतीय प्रकार 'परिवर्तना' है। आचार्य या उपाध्याय से प्राप्त श्रुतज्ञान को याद रखने के लिये, पठित अंश का बार-बार पढ़ना 'परिवर्तना' कहा जायेगा। 'परिवर्तना' के स्थान पर 'आम्नाय' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है।[5] परिवर्तना और आम्नाय इन दोनों में शब्द भेद अवश्य है। दोनों शब्दों का आशय और शब्दार्थ भी, एक जैसा है क्योंकि 'परिवर्तना' और 'आम्नाय' ये दोनों शब्द पर्यायवाची हैं। इन दोनों में ही 'शब्दों' का स्वर सहित उच्चारण करते हुए अधीत विषय का बार-बार दुहराना निहित है। शास्त्रों में पढ़े हुए ग्रन्थ के अंश या पाठ का शुद्धतापूर्वक पुनः-पुनः उच्चारण 'आम्नाय' कहा गया है। अधीत यानी पठित, परिचित श्रुत, ग्रन्थ का मर्म समझने के लिये, उसका पर्यालोचन यानी चिन्तन करना 'अनुप्रेक्षा' कहा जाता है।[6] इसमें स्वाध्याय का 'अन्तर्जल्प रूप'[7] पाठ माना गया है और चिन्तन के साथ-साथ कण्ठस्थ करना भी माना गया है।

स्वाध्याय का पाँचवां भेद 'धर्म-कथा' नाम से है। धर्मोपदेश का भी यही अभिप्राय है। दोनों शब्दों का अर्थ, एक जैसा ही है। आगम, पठित, परिचित और आलोचित शास्त्र का उपदेश करना 'धर्मकथा' है। धर्मकथा के चार प्रकार[8] और इन चार भेदों के अनेक अवान्तर प्रकार हैं। उनके नाम ये हैं-

1. आक्षेपणी 2. विक्षेपणी

3. संवेदनी 4. निर्वेदनी

'आक्षेपणी' कथा वह होगी, जिसमें अपने सिद्धान्त का कथन किया जाय। अर्थात् जिस कथा अथवा उपदेश में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र, अहिंसा, अनेकान्त, स्याद्वाद आदि स्व समय की प्ररूपणा की जाये। वह

सब कथन, इस कथा के अन्तर्गत माना जायेगा। जबकि पूर्व पक्ष के रूप में 'पर समय' का कथन किया जाता है। पदार्थ सर्वथा सत् है, नित्य है, विज्ञान रूप है, शून्य है, आदि और पश्चात् इस पर-कथन में प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम आदि प्रमाणों से तथा तर्क से भी विरोध बतलाकर कथंचित् नित्य, कथंचित् विज्ञान रूप, कथंचित् शून्य आदि रूप में अपने सिद्धान्त को सुस्पष्ट करना, 'विक्षेपणी' कथा कहलाएगी। ज्ञान, चारित्र, तप आदि के अनुशीलन एवं अनुष्ठान से, आत्मा को क्या-क्या उपलब्धियाँ होती हैं इत्यादि का निरूपण करना, संवेदनी कथा है।

प्रत्येक मानव का शरीर अपवित्र है, क्योंकि वह 'रज' और 'वीर्य' जैसी गन्दी वस्तुओं से उत्पन्न होता है। ये दोनों ही 'मल' कहे जाते हैं। ये दोनों अपवित्र हैं। अशुचि आहार से ही इनकी पुष्टि होती है। इसलिये यह शरीर असार है, समग्र भोग भोगने पर भी व्यक्ति अतृप्त बना रहता है। इस प्रकार की विराग एवं निर्वेद यानी माध्यस्थ्य भाव पैदा करने वाली कथाएँ ''निर्वेदिनी' होती हैं। इन सारी कथाओं की सदा, सर्वत्र चर्चा करते रहना 'धर्मकथा' नाम का स्वाध्याय कहा जायेगा।[9] यही 'धर्मोपदेश' भी कहा जाता है।[10] धर्मोपदेश, अर्थोपदेश, व्याख्यान, अनुयोग-वर्णन, ये सब पर्यायवाची शब्द हैं। मुनिजन असत् शास्त्रों के अध्ययन से दूर रहते हैं, दूसरों को भी धर्मकथा में प्रवृत्त कराते हैं।[11] सन्मार्गोपदेश के समान कोई परोपकार नहीं है।[12] अतः यह स्पष्ट है कि धर्मकथा का महत्त्व सभी दृष्टियों से सिद्ध होता है और इसके माध्यम से जन्म-जन्मान्तर के संचित कर्मों की निर्जरा होती है।

यह अपने आप में एक चिर सत्य है कि स्वाध्याय-प्रक्रिया आत्मिक-विकास हेतु एक अमोघ साधन है। अपना स्वयं का अध्ययन करना, आत्मचिन्तन करना,मन्थन करना, आत्मिक गुणों की अभिवृद्धि हेतु सद्विचार-सागर में अवगाहन करना आत्मानुशीलन, परिशीलन, आत्माभिमुख होकर 'सत्यं शिवं' के प्रतीक रत्नत्रय तत्त्वों का उत्तरोत्तर अन्वेषण करना और आत्मानुभूति करना यही स्वाध्याय का प्राणभूत तत्त्व है। जिस प्रकार चतुरंगिणी सेना से घिरा हुआ तथा शस्त्रों एवं अस्त्रों से सुसज्जित शूर वीर योद्धा संग्राम में अपनी तथा सहयोगी की रक्षा करता है उसी प्रकार तप, संयम एवं आगम पठन-पाठन रूप स्वाध्याय योग की सर्वदा आराधना करने वाला साधक अपनी आत्मा

की एवं पर आत्मा की रक्षा करता हुआ कर्म-शत्रुओं को पराजित करने में सर्वथा रूप से सक्षम होता है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि स्वाध्यायी ज्यों-ज्यों सिद्धान्तों की तह तक पहुँचता है, त्यों-त्यों उसे महा मूल्यवान् तत्त्व-रत्नों की प्राप्ति होती है। फलस्वरूप शास्त्रलोचन उपलब्ध हो जाने पर, फिर वह मुमुक्षु इतस्ततः मिथ्या-अटवी में नहीं भटकता है। वह निज-जीवन में सम्यक् ज्योति प्रदीप्त करता हुआ मोक्ष-मार्ग की ओर नित्य-निरन्तर अग्रसर होता जाता है। यथार्थ में ज्ञान रूपी सम्पदा स्वाध्याय के माध्यम से एकत्र होती है। ज्ञान-दीप को अमर रखने के लिये स्वाध्याय रूपी तेल उंडेलना होगा, तभी जीवन का प्रत्येक कोण समग्र रूपेण प्रदीप्तिमान होगा।

संदर्भः-

1. (क) अनगार धर्मामृत- 7/82
   (ख) दशवैकालिक सूत्र, जिनदास चूर्णि, 287
   (ग) चारित्रसार, 44
   (घ) धवला- 13/5,4,26
   (ङ) स्थानांग सूत्र 5/220
   (च) कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 462
2. (क) अनगार धर्मामृत 7/83
   (ख) बृहद् वृत्ति, पत्र- 584
3. (क) व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र- 25,7,801
   (ख) सर्वार्थसिद्धि- 9, 25
   (ग) अनगार धर्मामृत- 7, 83-87
4. बृहद् वृत्ति पत्र- 584
5 (क) तत्त्वार्थ सूत्र, अध्ययन 5, सूत्र 25
   (ख) तत्त्वार्थाधिगम भाष्यानुसारी टीका, 9/25
   (ग) तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य, 9/25
   (घ) तत्त्वार्थ सूत्र- 9/25/ श्रुतसागरीया वृत्ति
6. बृहद् वृत्ति पत्र- 584
7. अनगार धर्मामृत 7/86
8. (क) स्थानांग सूत्र- 4/246
   (ख) महापुराण 1/135-136

9. अनगार धर्मामृतम् 7/88

10. (क) सर्वार्थसिद्धि- 9/25

(ख) तत्त्वार्थ सूत्र- 9/25 भाष्य टीका।

11. (क) मूलाचार, 857/854

(ख) दशवैकालिक सूत्र 8/41

(ग) रयणसार, 100

12. आदिपुराण- 1,76

ऐसे मुनिवर का क्या कहना

(तर्ज :-दुनिया में देव अनेकों हैं)

श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा.

दुनियाँ में सन्त अनेकों हैं, पर धर्म देव का क्या कहना।
उनके दर्शन का क्या कहना, उनके चारित्र का क्या कहना ।।टेर ।।

जो छः काया प्रतिपालक हैं, विषय विकार निवारक हैं।
प्रभु आज्ञा के अनुपालक हैं, ऐसे संयत का क्या कहना ।।1 ।।

जिन्हें जप-तप ध्यान सुहाते हैं, स्वाध्याय नाद गुंजाते हैं।
जो लीन हैं आत्म भावों में, ऐसे तन्मय का क्या कहना ।।2 ।।

अनुरागी संयम शुद्धि के, पथगामी स्वगुण वृद्धि के।
एक सी कथनी करणी है, ऐसे साधक का क्या कहना ।।3 ।।

रूं रूं से संयम पुलकित है, नयना करुणा से प्रेरित है।
शम दम खम से शोभित है, ऐसे मुनिवर का क्या कहना ।।4 ।।

जो मौन से पथ में चलते हैं, निरख-निरख पग धरते हैं।
उपयुक्त सदा है यतना में, ईर्यापालक का क्या कहना ।।5 ।।

जहाँ निन्दा विकथा वर्जित है, अनुकम्पा वाणी सर्जित है।
चिन्तन जगहितकारी करते, उनके वैभव का क्या कहना ।।6 ।।

भव्यों के नयन सितारे हैं, जिनशासन के उजियारे हैं।
धीर वीर न्यारे सबसे, उनकी महिमा का क्या कहना ।।7 ।।

कृपा सिन्धु है करुणा सागर, दीन दयाला गुण रत्नाकर।
करते वन्दन श्रद्धा बल रहे, भाव भक्ति का क्या कहना ।।8 ।।

-संकलनकर्त्ता : श्री मूलचन्द लुणावत, जोधपुर (राज.)

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक (6)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली नेअपने शब्दों में धारावाहिक रूप में किया है।

अप्रमत्त संयत

पथिक,

एक कविता की दो पंक्तियाँ याद आ रही हैं-
यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो
दूत साँझ का इसे प्रभाती तक चलने दो
(महादेवी वर्मा : 'दीपशिखा')

मैं भी आज एक दीपशिखा की बात करना चाहता हूँ, सुनोगे?

मुनिवर,

आपकी वाणी मेरे लिए कल्याणी है, उक्ति सूक्ति है।
आपकी हर बात एक सरिता है, जिसमें सरसता है, विशिष्टता है,
उत्कृष्टता है इसीलिये उसे सुनने की मेरी उत्सुकता है।

तो फिर, सुनो पथिक,

एक समय की बात है, घने अंधेरे के बीच खड़ा था एक व्यक्ति।
आगे जाने की कामना, पर मार्ग नहीं दिख रहा था।
वह दिशाशून्य दुविधाग्रस्त था, भाव प्रशस्त फिर भी संत्रस्त था।
अनायास उस अंधेरे में किसी ने उसका हाथ थामा और बोले-
''आगे जाना है तो मैं तुम्हें रास्ता बताता हूँ।''
इतना कहकर उन्होंने एक दीया जलाया और उस व्यक्ति को थमाकर बोले-
''यह दीपक तुम्हें रास्ता दिखायेगा।''

व्यक्ति बोला-"इस दीप का प्रकाश तो कुछ ही दूर तक जाता है,
आगे तो अंधेरा है।"
"अंधेरे को नहीं, प्रकाश को देखो राहगीर!
दीपक हाथ में लेकर खड़े मत रहो,
इसे लेकर चलोगे तो प्रकाश भी साथ में चलेगा, रास्ता दिखता जायेगा
चलते रहना जब तक मंजिल न मिले।"-दीपक थमाने वाले ने कहा।

मुनिवर,

इस कथावार्ता में आपने व्यक्ति को तो व्यक्त नहीं किया और न ही
दीपक थमाने वाले के दर्शन कराये।
न अंधेरे का अर्थ बताया न पथ का प्रयोजन।
मंजिल का मक़सद भी नहीं बताया और न कथा की फलश्रुति।

पथिक,

इस कथावार्ता में व्यक्ति और कोई नहीं, मैं ही था।
जीवन को सार्थक बनाने, आगे जाने की मेरी कामना थी।
सन्मार्ग ही वह मार्ग था जिस पर मैं बढ़ना चाहता था।
अज्ञानरूपी अंधेरे में परम उपकारी गुरुवर हस्ती ने मेरा हाथ थामा।
दीपक और कुछ नहीं उनका दिया ज्ञान प्रकाश था जिसमें सन्मार्ग दिखे
चलते रहने के उद्‌बोधन का अर्थ है- अप्रमत्त होकर
ज्ञानपूर्वक साधना में प्रवृत्त रहना और
मंजिल का अर्थ है- मुक्ति, जन्म-मरण से, सुख और दुःख से।
आज तक मैं गुरुदेव के दिये दीप को लेकर आगे बढ़ रहा हूँ,
पथ प्रशस्त हो रहा है।

मुनिवर,

मैं अब समझा कि गुरुदेव के उद्‌बोधन से आप अप्रमत्तता
के आसव से ज्ञान का दीप आप्लावित करते रहते हैं,
ज्ञानदीप जलता रहता है, चरण बढ़ते रहते हैं मंजिल की ओर।
लेकिन मुनिवर, यह बताइये कि
क्या निरन्तर आगे बढ़ना ही अप्रमत्तता का लक्षण है?

पथिक,

अप्रमत्तता का स्थूल लक्षण है, निरालस्य, अविराम गतिशीलता।
इसके अतिरिक्त आगम ग्रन्थों में इसका गूढ़ार्थ भी दिया गया है-
जो समय को खोता है, वह प्रमत्त।
जो समय का सदुपयोग करता है, वह अप्रमत्त।
जो सोया है यानी मूर्च्छा में है, वह प्रमत्त।
जो जागता है यानी अनासक्त है, वह अप्रमत्त।
जिस कारण से जीव हिताहित से शून्य है, आत्मस्वरूप से दीन है, वह प्रमत्त
मद्य, विषय, कषाय, निद्रा और विकथा भी प्रमाद है।
प्रमाद भव-भ्रमण का कारण है तो अप्रमाद मोक्ष का कारण है।

मुनिवर,
प्रमाद और अप्रमाद का रहस्य तो समझ में आ गया।
गुरुदेव ने आपको अप्रमाद का उद्बोधन दिया
पर गुरुदेव को इसकी प्रेरणा किनसे और कैसे मिली,
मैं जानने को उत्सुक हूँ।

पथिक,
गुरुदेव ने तो बाल्यकाल में ही अप्रमत्तता का पाठ हृदयस्थ कर लिया
जब उनके संस्कार प्रदाता स्वामी हरखचन्द जी म.सा. ने उनसे कहा-

खण निकम्मो रहणो नहीं, करणो आतम काम।
भणणो गुणणो सीखणो, रमणो ज्ञान आराम॥

संस्कार प्रणेता की यही प्रेरणा बन गई थी उनके श्रमण जीवन की गवेषणा
फिर गुरुदेव का प्रणयन हुआ महावीर के निकट,
जैसे प्यासे को मिल गया पनघट
और अज्ञानता का हट गया घूंघट।
गुरुदेव को बार-बार सुनाई देने लगा महावीर का अंतिम संदेश-
"समयं गोयमं! मा पमायए।" "समय गोयम मा पमायए।"
"हे गौतम! क्षण मात्र का भी प्रमाद मत कर क्योंकि-
कुश के अग्रभाग पर ओस की बूँद की तरह है आयु,
विघ्नों से भरा हुआ है जीवन का स्नायु।
अतः शीघ्र कर्म रज को दूर कर,

यही है तेरे लिये श्रेयस्कर।"

ज्ञान में गहरे उतरे तो आचारांग की ध्वनि सुनाई दी-
"अंतरं च खलु इमं संपेहाए, धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए।"
अर्थात्-"अनन्त जीवन-प्रवाह में,
मानव जीवन को बीच का सुअवसर जानकर,
साधक मुहूर्त भर के लिये भी प्रमाद न करे।"

इस तरह संस्कार के धरातल पर हुआ प्रभु देशना का मिलन,
जो बन गया गुरुदेव के जीवन का आलंबन,
एक दिव्य जीवन का उद्घाटन।

पथिक,
भगवान ने कहा- "मुणिणो सया जागरन्ति" अर्थात् जो सदा जाग्रत रहता है, वह मुनि। गुरुदेव ने वस्तुतः मुनि की परिभाषा को कर दिया चरितार्थ
और अप्रमत्तता के मंत्र से किया जीवन का सूत्रपात।
अप्रमत्तता उनके लिये केवल सिद्धान्त ही नहीं था,
वह नित्य दिनचर्या का अपवाद रहित आधार भी था।
उनकी एक सुनियोजित दिनचर्या,
आचरण अथवा क्रिया,
अप्रमाद से आपूरित थी पूर्णतया
रात्रि के अंतिम प्रहर से रात्रि के प्रथम प्रहर तक-
प्रभु स्मरण, वंदन, प्रतिक्रमण, आत्मनिरीक्षण, चिंतन, ध्यान,
मौन, प्रवचन, लेखन, अध्ययन, संघ संचालन,
स्वल्प आहार, मर्यादित विहार।
दस यति धर्म का पालन,
था उनके जीवन का रसायन।
परीषह उन्हें विचलित नहीं कर सके।
वे धुन के धनी थे,
अतः बाधाओं से उनकी अप्रमत्तता और प्रखर हो गई।
कवि ने ठीक ही कहा है-
नींद कहाँ उनकी आँखों में, जो धुन के मतवाले हैं

गति की तृषा और बढ़ती, पड़ते जब पग में छाले हैं। (दिनकर)

हे गुरुदेव!
तुम व्यक्त और अव्यक्त सभी प्रमादों से रहित थे,
महाव्रत, मूल गुण और उत्तर गुणों से मंडित थे,
आचार धर्म से मर्यादित थे,
अतः तुम एक अप्रमत्त संयत थे।"

'हे महाश्रमण!
तुमने यह आत्मस्थ कर लिया था कि-
'समय' पाँचों अस्तिकाय से जुड़ा है फिर भी अस्तित्व से परे है।
अस्तिकाय कभी नष्ट नहीं होता पर
समय तो पल-पल बीत रहा है,
जीवन-घट पल पल रिस रहा है और
बीता पल लौटकर नहीं आता है।"
इसलिये समय को तुमने सामायिक बना लिया।

"हे समय सार!
तुमने न तो सोना सीखा था, न बैठना,
तुमने सीखा था तो बस जागना।
तुमने समय का उपयोग किया,
समय ने तुमको उपयोगी बना दिया।
तुमने समय (काल) को समझा,
समय ने तुमको समझा।
तुमने समय (काल और सिद्धान्त) का मूल्य समझा,
समय ने तुम्हें मूल्यवान बना दिया।
तुमने समय (आत्मा) की पूजा की,
समय ने तुम्हें पूज्य बना दिया।"

"हे अप्रमत्त सूर्य!
तुम्हारा जीवन आदि से अन्त तक अप्रमत्तता की कहानी है।
जब संध्या आती है तो सूर्य निष्प्रभ हो जाता है,
पर तुम अपने संध्याकाल में और अधिक प्रभावान हो गये

क्योंकि तुमने अप्रमत्तता की लौ चिरन्तन रखी।
जीवन की अन्तिम सांस तक मूर्च्छा तुम्हें छू न सकी,
आलस्य तुम्हें देख न सका।"

"**हे याज्ञिक!**
तुम्हारा जीवन यदि यज्ञ था तो
अप्रमाद यज्ञ की ज्वाला थी,
विषय-कषाय यज्ञ की आहुतियाँ थी,
अज्ञान यज्ञ का धुँआ था,
ज्ञान यज्ञ के प्रकाश का अधिष्ठान था,
वस्तु निष्ठ से आत्मनिष्ठ होना यज्ञ का लक्ष्य था।
तुम सभी आग्रह-दुराग्रह, नय-पक्ष से रहित थे,
अतः याज्ञिकभाव में स्थित थे।"

"**हे तीरण-तारण!**
तुम्हारे दिये दीप को लेकर मैं निरन्तर गतिमान हूँ,
पर यदि इसकी ज्योति मंद पड़ जाये
तो अपनी करुणा के तेल से इसे भरते रहना
ताकि ये चिरन्तन जलता रहे,
मैं चलता रहूँ, तुम्हारी तरह।"

"**हे गुरुदेव!**
तुम मुक्ति मार्ग के मूल आधार- क्षायिक भाव में आ गये हो।
मुक्तिधरा के द्वार पर हो, जिसके आगे प्रकाश ही प्रकाश है,
यह वह स्थान होगा जो प्रमत्त या अप्रमत्त भाव से परे होगा।
मैं भी वहाँ तुम्हारा साथ चाहता हूँ।"

पथिक,
अब उस महानाविक की आवाज को सुनो, वह कह रहा है-
"प्रमाद छोड़ो, तट की ओर प्रस्थान करो।"

Research Paper

The Historical Development of Jaina-Yoga-System and Impacts of Other Yoga-Systems on it; A Comparative and Critical Study (3)

Prof. Sagarmal Jain

The impact of other yoga system on Jainism in this period-

The Dhyāna-śataka, is the first yoga work of this period, in which we do not find any impact of other yoga systems on it, because this work only deals with four types of meditations according to the Jaina canonical works. In this period the impacts of other yoga systems on Jaina-yoga can easily be seen in the earlier works of Haribhadra, Subhacandra and Hemacandra.

Haribhadra in his different yoga-works presented the various stages of yoga-sādhanā in different names. It is clear that basically he belongs to Brāhmanic tradition and so there is no doubt that the impacts of that tradition may be seen in his yoga works. But one thing is crystal-clear that he remained completely faithful to Jaina tradition while dealing with Jaina-yoga in his different yoga works. In Yogavāśiṣtha of Hinduism we find the three stages of yoga-sādhanā-(1) total devotion, (2) mental peace and (3) total ceasation of the activities of mind and body. Haribhadra in his yogadṛṣti-samuccaya also mentioned three yogas i.e. (1) Icchā-yoga (2) Sāstra-yoga and (3) Sāmarthya-yoga on the basis of three jewels of Jainism. In which īcchā-yoga is similar to total devotion and sāmarthya-yoga to the other two states of yogavaśiṣthya such as mental peace and ceasation of the activities of mind and body. In Yoga-bindu Haribhadra mentions five types of yoga- (1) Adhyātma-yoga i.e. spiritualism (2) Bhāvanā-yoga (contemplation) (3) Dhyāna-

yoga (meditation) (4) samatā-yoga (equanimity of mind) and (5) vṛttisaṁkṣaya yoga (ceasation of all activities of mind, body and speech).

In these five types of yogas the adhyātma-yoga was accepted in other yoga systems as mahā-yoga. The concepts of bhāvanā (contemplation) and dhyāna are also present in Hindu yoga systems. The samatā-yoga (eauanimity) and vṛttisaṁkṣaya-yoga (ceasation of the activities), as we have already seen these both are presented in Yogavaśiṣthya as well as in laya-yoga. In his yoga-viṁsikā Haribhadra mentions four types of yogas (1) Āsana- (body-posture), (2) ūrṇa-(ricitation of mantras), (3) Ālambana and (4) Anālambana. The concept of āsana is also present in patañjali's yoga-sūtra, similarly ūrṇa is accepted in Hindu-yoga system as mantra-yoga or japa-yoga, simlarly ālambana as bhakti-yoga and anālambana as laya yoga. In the same way Haribhadra's eight yoga dṛṣtis are also arranged on the basis of eight yoga limbs of patañjali. Though Haribhadra accepted these various concepts from Buddhist and Hindu tantric systems, yet his peculiarity is that he arranged them according to Jaina tradition, but so far as the concepts of the pindastha, padastha, rūpastha and rupātita dhyanas along with their pārthivi āgneya, vāyavi and vāruṇī dhāranā are concerned, they came in Jaina works such as Jñānārṇava of Śubhacandra and Yogaśāstra of Hemacandra due to the impact of Hindu tantrichism Here one thing to be noted that Śubhacandra in his Jñānārṇava and Hemacandra in his yoga-śāstra also deals with the eight limbs of patañjali's yoga-sūtra in detail and so we must accept that these two ācāryas are mostly influenced by patañjali's Yoga sūtra and other Hindu tantric works.

Age of Rituals and Tantra Impact (13th Century--19th Century)

After Hemacandra and before yaśovijaya i.e. from 13th Century to 16th Century, these four centuries can be

considered as a dark age of Jaina-yoga. In this period Jaina-yoga, which was originally spiritual in nature was completely shoved into the background and tantra along with its rituals became prime. During this period the ultimate goal of yogic-sādhanā, instead of being emancipation, became the worldly achievements. Thus spiritual goal was completely forgotten and material welfare took its place. Though in these centuries some commentaries of Jaina canonical and other works have been written, but the dominating feature of this age was the works on tantra, mantra and rituals. So in these centuries many works of Jaina rituals as well as tantra and mantra sādhanā have been written by the Jaina-Ācāryas.

The spiritual nature of Jaina-yoga was revived by the Yasovijaya (17th centuty). He wrote the commentaries on the yoga works of Haribhadra along with some original yoga works such as Adhyātmasāra, Jñānasāra, Adhyātmopaniṣad. Not only this Yasovijaya has also written a commentary on the Yoga-sūtra of patañjali. Similarly other spiritual Jaina thinker of this age was Ānandaghana, who also revived the Jaina spirituality and Yoga-sādhanā through his padas and songs written in praise of 24 Tirthaṅkaras. The works of Yasovijaya and Ānandaghana are fully influenced by Haribhadra, yet some impact of patañjali's Raja-yoga and Hatha-yoga can also be seen on them.

As I have already said that the impact of Hindu tantra and rituals on Jaina-yoga was the dominating feature of this age.

Modern Age (20th Century)

So far as the modern age is concerned we have tremendous changes and developments in the practice of Jaina-yoga. In this age the attraction of common men towards yoga and meditaion is much developed as a way for tension-relaxation. Today human race is completely in the grip of self created tensions due to his ambitions and greed. It was a chance that Shri S.N. Goyanaka returned to India from

Burma and revived the old Vipassanā mediation of Buddhism in India, which was in early times also practiced in Jainism. Ācārya Mahāprajña of terāpanth Jaina sect for the first time learned it from Goyanakaji and on basis of his own knowledge of Jaina canon and patañjali's yoga-sūtra rearranged this method of meditation in the name of prekṣā dhyāna. Prekṣā meditation is the dominating feature of Jaina-yoga of our age. Though some other Ācāryas of different Jaina sects tried to evolve their own method of meditation and yoga, but in them nothing is new, except a blend of Preksā and Vipassanā. Here it is also to be noted that Preksā meditation of our age is also a blend of Vipassanā of Canonical Buddhism and Jainism and patañjali's Aṣṭāṅga-yoga and Haṭha-yoga with some modern psychological concepts.

At last, I would like to conclude my paper by quoting a beautiful verse of samayika-pātha of Ācārya Amitagati-

Sattvesu maitrim guṇiṣu pramodaṁ
Kliṣṭeṣu jivesu krpāparatavṁ
Madhyasthabhāvaṁ Viparīta vṛttau
Sadā mamātmā vidadhātu deva.

Oh Lord! I should be friendly to all the creatures of world and feel delight in meeting the virtuous people. I should always be helpful to those who are in miserable conditions and tolerant to my opponents.

-Prachrya Vidyapeeth, Shajapur (M.P.)

संवाद के लिए नया प्रश्न

निम्नाङ्कित प्रश्न का उत्तर जिनवाणी के सम्पादक को 30 जून तक प्रेषित करें।

प्रश्नः– आजकल अनेक धार्मिक शिविरों का आयोजन होता है। उनमें अपने-अपने सम्प्रदाय की प्रतिक्रमण की पाटियाँ एवं विधि सिखाई जाती है, जिससे बालक में असमंजस की स्थिति पैदा होती है। अतः निराकरण के लिए क्या किया जा सकता है?

–राजीव माथुर, जोधपुर (राज.)

प्रासङ्गिक

जनगणना में जैन लिखाएँ

डॉ. दिलीप धींग

भारत दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र है। प्रत्येक दस वर्ष में भारतीय गणतंत्र में जनगणना करवाई जाती है। वर्ष 2011 के लिए जनगणना की शुरुआत हो चुकी है। जैन धर्मावलम्बियों से हर बार यह आह्वान और आग्रह किया जाता है कि वे जनगणना में अपना धर्म "जैन" लिखवाएँ। यह एक सहज और सामान्य बात है कि जो व्यक्ति जिस धर्म से जुड़ा है, जनगणना अधिकारी को वह अपने लिए उसी धर्म से सम्बन्धित होना बताएगा। लेकिन जैन धर्म के बारे में अब तक के सरकारी जनसांख्यिकीय आँकड़े गलत हैं। इसलिए हर बार यह आह्वान किया जाता है कि जैन धर्मावलम्बी जनगणना के धर्म कॉलम में अपने आपको 'जैन' लिखवाएँ।

भारत एक बहुधर्मी और लोकतांत्रिक देश है। देश की अनेक प्रकार की नीतियों के निर्धारण में विभिन्न जानकारियों व आँकड़ों की जरूरत होती हैं। उन जानकारियों को सही-सही भरने और भरवाने की जिम्मेदारी जानकारी देने वालों और जानकारी इकट्ठी करने वालों, दोनों की होती है। इन जानकारियों के आधार पर सांख्यिकीय आँकड़े बनते हैं। शासकीय, प्रशासकीय और न्यायिक निर्णयों और नीतियों के निर्धारण में ऐसे आँकड़े आधार बनते हैं। सब जानते हैं कि लोकतंत्रीय प्रणाली में संख्या का बहुत महत्त्व होता है। प्रबुद्ध व्यक्ति इस सम्बन्ध में अपनी जागरूकता और निष्पक्षता का परिचय देते हैं तो इससे हमारा लोकतंत्र सुदृढ़ ही होगा।

यह एक तथ्य है कि ईस्वी पहली शताब्दी के आसपास सम्पूर्ण भारतवर्ष में चालीस करोड़ जैन धर्मावलम्बी थे। यह संख्या (जैनों की आबादी) घटते-घटते 16वीं शताब्दी तक केवल 4 करोड़ तक सिमट गई। अब हम हमारे स्वतंत्र भारत के जनसंख्या के आँकड़ों पर दृष्टिपात करें तो जैन धर्मावलम्बियों को निराशा हो सकती है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी 1,02,86,10328 (102.8 करोड़) में से जैन आबादी मात्र 42,25,053 (42.25 लाख) ही है। इन आँकड़ों के अनुसार भारत में जैन

कुल आबादी के मात्र 0.41 (शून्य दशमलव चार एक) प्रतिशत ही है।

सभी जैन समाजवेत्ता तथा निष्पक्ष अन्य समाजशास्त्री इस बात को एकमत से स्वीकार करते हैं कि जनसंख्या के सरकारी आँकड़ों में जैन धर्मावलम्बियों की संख्या वास्तविक संख्या से अत्यधिक कम है। विकिपीडिया इनसाइक्लोपीडिया (विश्वकोश) भी सरकारी आँकड़ों में जैनों की जनसंख्या को सही नहीं मानता है। विश्वकोश के अनुसार जैनों की आबादी आँकड़ों से कई गुना अधिक होनी चाहिये।

उदाहरण के तौर पर वर्ष 2001 के जनगणना के धर्म आधारित सरकारी आँकड़ों के अनुसार भारत में बौद्धों की आबादी 79 लाख है, जबकि देश के हर प्रदेश और कोने-कोने में रहने/बसने वाले जैनों की आबादी मात्र 42 लाख ही है। इस सम्बन्ध में अनेक अध्ययनशील व्यक्तियों का अनुमान है कि देश में जैनों की आबादी कम से कम एक करोड़ होनी ही चाहिये। जबकि अलग-अलग समाजवेत्ता जैनों की आबादी दो से चार करोड़ तक बताते हैं। इससे यह तो स्पष्ट ही है कि जैनों की आबादी के बारे में सरकारी आँकड़े सही नहीं हैं।

प्रश्न उठता है कि किन कारणों से जनगणना की जनसंख्या वास्तविक से बहुत ही कम प्रकट होती है। इसके अनेक कारण हैं। कुछ लोगों ने सुनियोजित तरीके से यह भ्रम फैला दिया है कि जैन धर्म हिन्दू धर्म की शाखा है और शायद कुछ जैन भी इस भ्रम के शिकार हैं। इसके अलावा कुछ जनगणना अधिकारी या कर्मचारी जैन परिवार से जनसंख्या सम्बन्धी जानकारी जुटाते समय बिना पूछे ही धर्म के कॉलम में 'जैन' की बजाय प्रायः 'हिन्दू' लिख देते हैं। पता चला है कि कुछ जनगणना अधिकारी या कर्मचारी जानबूझकर भी ऐसा करते हैं। जबकि जनगणना फॉर्म के धर्म-कॉलम में जैन धर्म का उल्लेख एक स्वतंत्र धर्म के रूप में हैं। उल्लेखनीय है कि बौद्ध और सिक्ख धर्म का उल्लेख भी स्वतंत्र धर्म के रूप में है।

कुछ लोगों का यह कहना कि जैन अलग-अलग गोत्र (सरनेम) प्रयोग करते हैं, इसलिए जनगणना अधिकारी जैन के बजाय धर्म के कॉलम में हिन्दू या अन्य धर्म-कॉलम पर निशान (टिक) कर देते हैं। लेकिन यह बात बिल्कुल निराधार है। दुनिया में अन्य धर्मावलम्बी भी अपना-अपना गोत्र प्रयोग करते हैं, फिर भी उनके धर्म-कॉलम में उनका ही धर्म उल्लिखित किया जाता है। फिर,

जैनों के साथ ही यह प्रमाद और भ्रम क्यों? इस गलती का सुधार होना चाहिए। एक बात यह कही जाती है कि जनगणना अधिकारी को नाम के साथ गोत्र के रूप में जैन ही लिखाया जाए। लेकिन यहाँ भी धर्म के कॉलम में 'जैन धर्म' को टिक करवाना नितान्त जरूरी है।

यह स्मरणीय है कि जैन एक धर्म है। जैन कोई जाति या सम्प्रदाय नहीं है। अनेक सम्प्रदाय, उप-सम्प्रदाय, जातियाँ और उप-जातियाँ जैन धर्म के प्रति आस्था रखती हैं तथा विश्व के इस प्राचीनतम धर्म का अनुपालन करती हैं। आगम-युग के अनुसार देखा जाए तब भी यह बात स्पष्ट होती है कि चारों ही वर्णों तथा सभी जातियों व उप-जातियों के व्यक्ति जैन धर्म के अनुयायी थे।

मानव सामाजिक प्राणी है। कहीं वह सम्प्रदायों में बँट जाता है तो कहीं जातियों में। जैन धर्म के साथ भी यही हुआ। समय, परिस्थिति, परम्परा, आचार, विचार आदि मतभेदों से यह धर्म भी अनेक जातियों, उप जातियों, सम्प्रदायों और उप-सम्प्रदायों में विभक्त हो गया। कहीं ऐसा भी हुआ है कि अनेक जातियों और परम्पराओं ने जैन धर्म को अपना लिया और वे जातियाँ और परम्पराएँ जैन धर्म को मानने वाली हो गईं। धार्मिक आस्था के रूप में सभी जैन पंच परमेष्ठी तथा चौबीस तीर्थंकरों के प्रति श्रद्धा रखते हैं।

जनगणना के इस महाकुम्भ में सभी प्रकार के जैनों को अपने आप को सिर्फ जैन ही लिखाना है। जैन धर्म की श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही धाराओं में अनेक सम्प्रदाय और जातियाँ जुड़ी हुई हैं। कुछ जातियाँ ऐसी भी हैं, जो जैन समाज और जैनेतर समाज, दोनों में समान (कॉमन) दिखाई पड़ती हैं। लेकिन धार्मिक आस्था की दृष्टि से वे जैन होती हैं। मैंने ऐसे परिवार भी देखे हैं, जो परम्परा से जैन नहीं होते हुए भी आज बड़ी ही निष्ठा से जैन धर्म के प्रति आस्था रखते हैं और धार्मिक मामलों में अपने आप को जैन ही उल्लेख करते-करवाते हैं। इस अवसर पर जनगणना-फार्म के धर्म-कॉलम में सभी प्रकार के जैनों को सारे भेद भुलाकर अपने आप को सिर्फ जैन ही लिखवाना है। समस्त जैन साधु-साध्वियों की संख्या का भी उनसे सम्बद्ध संघों के माध्यम से जनगणना में उल्लेख सुनिश्चित किया जाना चाहिये।

जैन समाज कई मायनों में एक समर्थ समाज माना जाता है। उदाहरण के

लिए जैन समाज की साक्षरता दर देश में सर्वाधिक है। देश में जैनों की साक्षरता दर 94.1 % है। जबकि देश की औसत साक्षरता दर 65.38% ही है। जैनों की साक्षरता दर औसत से 28.72% अधिक है। इसी प्रकार जैनों की महिला साक्षरता दर 90.6% हैं। जबकि देश की औसत महिला साक्षरता दर 54.16% है। यह जैनों की महिला साक्षरता दर से 36.44% अधिक है। दोनों ही साक्षरता दरें अन्य धर्मावलम्बियों की साक्षरता दरों से भी अधिक ही हैं।

केवल साक्षरता ही नहीं, व्यापार, वाणिज्य, पेशेवर सेवाएँ, पारमार्थिक कार्य, अनुशासन, उदारता, दानवीरता, सेवा, शिक्षा, साधना, जीवदया, संस्कृति-संरक्षण आदि अनेक मामलों में जैन समाज सदियों से अग्रणी और अव्वल बना हुआ है। आबादी के अनुपात में जैन समाज देश का सर्वाधिक आयकर चुकाने वाला समाज है। सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि में भी जैनों का सर्वाधिक योगदान है। एक अनुमान के अनुसार देश में करीब 16 हजार गौशालाएँ चल रही हैं, जिनमें से करीब 12 हजार गौशालाओं का संचालन जैनों द्वारा किया जाता है। शेष गौशालाओं के संचालन में भी जैनों का परोक्ष योगदान रहता ही है। ये कुछ उदाहरण मात्र हैं। देश का छोटा-सा जैन समुदाय देश के हर क्षेत्र के विकास में आनुपातिक रूप से कई गुना अधिक योगदान कर रहा है। लेकिन शासन, प्रशासन, मीडिया आदि द्वारा जैन समाज, संस्कृति विरासत आदि की जो उपेक्षाएँ दिखाई पड़ती हैं, वे बेहद चिन्ताजनक हैं। संभवतः इसका एक कारण स्वयं जैनों का आत्म-विस्मरण भी है। जनगणना के इस अभियान के वक्त जैनों को अपने आत्म-विस्मरण को समाप्त करना चाहिये। इसके साथ ही जैन एकता के भाव को पुष्ट करने का भी यह सुनहरा अवसर है।

सर्वसाधारण रूप से समर्थ होते हुए भी जैनों में निर्धनता और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ भी हैं। हर क्षेत्र में जैनों का विशिष्ट योगदान होते हुए भी जैन समाज, संस्कृति और विरासत की उपेक्षा दिखाई पड़ती है। अनेक बार देखा गया है कि जैनों की वाजिब मांग को सरकार द्वारा सुना-अनसुना कर दिया जाता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में ऐसी उपेक्षाएँ ठीक नहीं है। इसे लोकतन्त्र की कमजोरी कहा जा सकता है कि देश में अनेक महत्त्वपूर्ण मामलों को आँकड़ों में उलझा दिया जाता है। लोकतंत्र को अधिक सुदृढ़ व अधिक लोक-कल्याणकारी बनाने के लिए संख्या के साथ-साथ किसी समुदाय की गुणवत्ता

और उसके योगदान पर भी विचार किया जाना चाहिये।

जनगणना में यदि जैनों की संख्या का सही आकलन होता है तो यह जैन समाज के साथ-साथ देश और देश के लोकतंत्र के लिए भी हितकर होगा। जनगणना अधिकारियों, कर्मचारियों और इस कार्य में नियुक्त व्यक्तियों को यह निर्देश दिये जाएं कि वे धर्म सहित सभी मामलों में सही जानकारी भरें। जैन धर्मावलम्बियों से आग्रह है कि वे जनगणना फॉर्म के धर्म-कॉलम में अपने आप को जैन के रूप में उल्लेख करवाना सुनिश्चित करें।

जन्म और मृत्यु से परे

डॉ. दिलीप धींग

कोई फूल मुर्झाने के लिए नहीं खिलता,
लेकिन खिलता है इसलिए मुरझा जाता है।
सूर्य अस्त होने के लिए नहीं उगता,
लेकिन उगता है इसलिए अस्त हो जाता है।
कोई प्राणी मरने के लिए नहीं जन्मता,
किन्तु जन्म लेता है इसलिए मर जाता है।
तो क्या मूल्य ऐसे खिलने का?
ऐसे उदय होने का? और ऐसे जन्म लेने का?
जो बिल्कुल स्थायी/स्थिर/शाश्वत नहीं।
इसलिए कुछ लोग जन्म और मरण के बीच
जो जीवन है उसे पल्लवित-पुष्पित कर बना देते हैं।
सुरभित उपवन फैलाते सद्गुणों/सत्कार्यों की सुगंध,
दिग-दिगन्त और करते ऐसी जीवन साधना।
जो होती है जन्म और मृत्यु से परे
जहाँ काल भी डरे और ठहरे।

International Law Centre, Mylapore,
61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Chennai-600004

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 59)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(केवली-समुद्घात)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- केवली-समुद्घात किसे कहते हैं?

समाधान- वेदनीय, नाम व गोत्र इन तीन कर्मों की क्षपणा करने के लिए आत्म-प्रदेशों को समग्र लोक में फैला देना तथा पुनः संकोच करके शरीरस्थ हो जाना, यह प्रक्रिया केवली-समुद्घात कहलाती है।

जिज्ञासा- केवली-समुद्घात कब किया जाता है?

समाधान- जब किसी सयोगी केवली भगवान् के आयु कर्म की स्थिति के अनुपात में वेदनीय, नाम व गोत्र कर्म की स्थिति अधिक हो तो इन तीनों कर्मों की स्थिति को आयु कर्म की स्थिति के बराबर करने के लिये केवली-समुद्घात किया जाता है।

जिज्ञासा- केवली-समुद्घात करने से पहले कौनसा करण करना अनिवार्य है?

समाधान- केवली समुद्घात करने से पहले केवली भगवन्तों को 'आवर्जीकरण' करना अनिवार्य है। आवर्जीकरण का अर्थ है- आत्मा को मोक्ष की ओर अभिमुख करना। अर्थात् यथायोग्य कर्मों की उदीरणा आदि करके उदयावलिका में डालने रूप शुभ योगों के व्यापार द्वारा स्वयं को मोक्ष के साथ जोड़ना आवर्जीकरण कहलाता है।

यह ज्ञातव्य है कि सभी केवली भगवन्तों को आवर्जीकरण करना अनिवार्य होता है। अर्थात् कोई केवली-समुद्घात करे अथवा नहीं करे, परन्तु आवर्जीकरण तो सभी केवली भगवन्त करते ही हैं। आवर्जीकरण में असंख्यात समय प्रमाण अन्तर्मुहूर्त काल

लगता है।

जिज्ञासा- केवली-समुद्घात करने की प्रक्रिया क्या है?

समाधान- जब केवली भगवान केवली समुद्घात करते हैं तब उन्हें इस प्रक्रिया में कुल आठ समय लगते हैं। पहले समय में केवली भगवान् अपने आत्म-प्रदेशों को लम्बाई में ऊपर और नीचे लोक पर्यन्त, चौड़ाई में अपने शरीर प्रमाण 'दण्ड' करते हैं। दूसरे समय में आत्म-प्रदेशों को पूर्व-पश्चिम अथवा उत्तर-दक्षिण में 'कपाट' आकार में फैलाते हैं। तीसरे समय में चारों दिशाओं में 'मन्थान' आकार में आत्म-प्रदेशों को फैलाते हैं। चौथे समय में अन्तरालों को आत्म-प्रदेशों से भर देते हैं। इस प्रकार आत्मा सर्वलोक व्यापी बन जाती है।

पाँचवें समय में अन्तराल के प्रदेशों का, छठे समय में मन्थान के प्रदेशों का, सातवें समय में कपाट के प्रदेशों का तथा आठवें समय में दण्ड के प्रदेशों का संकोच (संहरण) करके केवली पुनः शरीरस्थ हो जाते हैं।

जिज्ञासा- केवली-समुद्घात करने के बाद जीव कितने समय में मोक्ष प्राप्त करता है?

समाधान- केवली-समुद्घात करने के बाद जीव अन्तर्मुहूर्त तक तेरहवें गुणस्थान में रहता है। इस अन्तर्मुहूर्त काल में वह उपदेशादि भी दे सकता है, पाट-पाटलादि जो पहले लाये हुए हैं, उन्हें वापस गृहस्थ को लौटा सकता है, अतः कतिपय मिनटों वाला अन्तर्मुहूर्त प्रमाण भी सयोगी अवस्था में रह सकता है।

प्रज्ञापना सूत्र के 18 वें कायस्थिति पद में केवली अनाहारक का अन्तर जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण बतलाया है। अर्थात् जो केवली समुद्घात के तीसरे, चौथे, पाँचवें समय में अनाहारक बनता है, वह वापस अनाहारक अन्तर्मुहूर्त बाद अवश्य ही बनता है अर्थात् चौदहवें गुणस्थान को प्राप्त करते ही अनाहारक बन जाता है।

चौदहवें गुणस्थान में पाँच लघु अक्षर (अ,इ,उ,ऋ,लृ) के

उच्चारण में जितना काल लगे, उतना अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रहकर जीव मोक्ष में चला जाता है। तेरहवें और चौदहवें दोनों गुणस्थानों का अन्तर्मुहूर्त मिलाकर भी अन्तर्मुहूर्त ही होता है। क्योंकि छोटे-बड़े की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त के असंख्यात भेद हो सकते हैं।

जिज्ञासा- केवली-समुद्घात कौन करते हैं?

समाधान- आवश्यक निर्युक्ति, लोक प्रकाश, प्रवचनसारोद्धार आदि ग्रन्थों में वर्णन मिलता है कि जिन केवली भगवन्तों की केवल ज्ञान प्राप्ति के समय आयु 6 माह अथवा उससे कम शेष रहती है, वे नियम से केवली-समुद्घात करते हैं।

जिनकी आयु केवलज्ञान-प्राप्ति के समय 6 माह से अधिक शेष हो, उनमें कोई केवली-समुद्घात करते हैं, कोई नहीं करते। जिनके चार अघाति कर्मों में विषमता रहती है अर्थात् आयु कर्म की अपेक्षा वेदनीय, नाम व गोत्र कर्म की स्थिति अधिक हो तो उन्हें बराबर करने के लिये केवली-समुद्घात करते हैं।

जिज्ञासा- क्या तीर्थंकर भगवान भी केवली-समुद्घात करते हैं?

समाधान- आवश्यक निर्युक्ति और छठे कर्म ग्रन्थ के उल्लेखों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तीर्थंकर भगवान् भी केवली-समुद्घात करते हैं। सभी तीर्थंकर नहीं करते, किन्तु जिनके चार अघाति कर्मों की स्थिति में विषमता होती है, वे ही करते हैं।

छठे कर्मग्रन्थ में नामकर्म की प्रकृतियों के उदयस्थानों का जहाँ वर्णन किया है, वहाँ बतलाया है कि केवलज्ञानियों के केवली-समुद्घात के तीसरे, चौथे, पाँचवें समय में नाम कर्म की 20 प्रकृतियों का उदय रहता है और इस अवस्था में विद्यमान तीर्थंकर हुए तो उनके एक तीर्थंकर प्रकृति का भी उदय होने से नाम कर्म की 21 प्रकृतियों का उदय रहता है। केवली जीवों के नाम कर्म की 21 प्रकृतियों के उदय स्थान के इस उल्लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि कोई-कोई तीर्थंकर भगवान् भी केवली-समुद्घात करते हैं।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर(राज.)

युवा-स्तम्भ

युवा पीढ़ी की दुविधा

श्री के.एस. गलुण्डिया (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

यह कैसी विडम्बना है कि सभी प्रकार के भौतिक सुख-साधन होते हुए भी आज का युवा दोराहे पर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा है कि कोई उसका सही मार्ग-दर्शन करे।

आज के युवा वर्ग की मानसिकता एवं दुविधाओं को दर्शाने के लिये मैं यहाँ दादा और पोती के संवाद के कुछ अंश उद्धृत करना चाहता हूँ।

दादा- "तुम जीवन में क्या करना चाहती हो?"

पोती- "जीवन सारहीन है, ऐसे जीवन को जीना निरर्थक है।"

दादा ने इस प्रकार का नकारात्मक उत्तर सुनकर आश्चर्य से पूछा- "जीवन मिला है तो इसका कोई प्रयोजन होगा।"

पोती- "मेरे को तो कोई प्रयोजन नज़र नहीं आता है।"

बात को आगे बढ़ाने तथा पोती के मनोभाव को ठीक से समझने के लिये दादा ने फिर दोहराया- "जीवन में कुछ तो मतलब ढूंढना पड़ेगा। क्या तुम नहीं सोचती कि जीवन का प्रयोजन, प्रयोजन युक्त जीवन है" (The Purpose of life is Life, with a purpose)

पोती के विचारों में द्वंद्व शुरु हो गया और वह सोचकर बोली- "दादा, जीवन में वही बातें बार-बार दोहराई जाती हैं, आपके बच्चे हुये, वो बड़े हुए उनके भी बच्चे हो गये, वो बड़े होंगे, उनके भी बच्चे होंगे, यह क्रम इसी प्रकार चलता रहेगा एवं जीवन गाथा इसी प्रकार दोहरायी जाती रहेगी। आखिर इसका तात्पर्य क्या है?"

दादा ने विस्मय से पोती की तरफ देखा और गहरे सोच में पड़ गये कि आखिर इतनी पढ़ी-लिखी बच्ची जो हमेशा अपनी कक्षा में टॉप करती रही एवं जिसे सब सुख सुविधाएँ उपलब्ध हैं, उसमें जीवन के प्रति इतनी उदासीनता व नकारात्मक सोच का क्या कारण है?

दादा ने विषय में थोड़ा परिवर्तन करते हुए समझाने की कोशिश की, "क्या तुम नहीं सोचती कि मनुष्य की यह जीवन गाथा विकास की यात्रा है। हमारे पूर्वजों ने जो भौतिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में आविष्कार एवं खोज की उसके फलस्वरूप

आज हमको यह सब भौतिक सुख सुविधाएँ उपलब्ध हुईं एवं आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग आलोकित हुआ है, जो जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।'' बात कुछ आगे बढ़ी और पोती ने भी खुलकर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रश्न पूछा-''आज की इस दौड़ में इतना ज्यादा सहभागियों का दबाव (Peer pressure) तथा प्रतिस्पर्धा (competition) है कि युवाओं में सदैव हीन भावना (depression) एवं तनाव बना रहता है। इसका आखिर क्या कारण है और क्या निराकरण है?''

दादा- ''इस तनावपूर्ण एवं नकारात्मक भावना का मुख्य कारण इकतरफा जीवन एवं अंधी दौड़ है। इससे मुक्ति पाने के लिये युवा वर्ग को धार्मिक प्रवृत्तियों एवं संतुलित जीवन का सहारा लेना चाहिये।''

पोती- ''धर्म क्या है? धर्मस्थान पर जाने से मन को शांति क्यों नहीं मिलती है?''

दादा ने उसी प्रश्न को दोहराते हुये पूछा- ''तुम ही बताओ तुम धर्म से क्या समझती हो?''

पोती- ''मेरे अनुसार क्रिया काण्ड (rituals) या बलि व मन्दिर में प्रसाद आदि चढ़ाने में धर्म नहीं है। धर्म शुद्ध आचरण में एवं शुद्ध आचार-विचार में है।''

दादा- ''तुम धर्म का मतलब सही समझ रही हो, वास्तव में, पूजापाठ क्रिया-काण्ड, पूजा-अर्चना आदि धर्म का बाहरी रूप है। धर्म की कई परिभाषाएँ हैं, उनमें नहीं उलझकर मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि असली धर्म एक विवेकपूर्ण अनुभूति है, जो व्यक्ति के शुद्ध आचार-विचार से परिलक्षित होनी चाहिये, जैसा तुमने अभी बताया।''

पोती- ''आखिर फिर भी प्रश्न यह है कि जीवन की इस दौड़ में, जो कुछ पाने के लिये आवश्यक है, शांति कैसे मिल सकती है।''

दादा- ''आधुनिक जीवन कई विषमताओं से भरा हुआ है, यह तेज रफ्तार वाली बिना ब्रेक की गाड़ी के समान है, जिसको दौड़ाने में तात्कालिक आनन्द एवं थ्रिल (Thrill) तो मिलता है, लेकिन दुर्घटना की आशंका हमेशा बनी रहती है। जब भी जीवन में कोई प्रतिकूल परिस्थिति आती है, यह गाड़ी गड्डे में गिरकर या किसी से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है। धर्म को हम ब्रेक की उपमा दे सकते हैं। धर्म अच्छे-बुरे की पहचान करवाता है तथा संयमित तरीके से जीवन पथ पर चलने के लिये सहायक होता है।''

पोती– "यह तो सही है कि गाड़ी में ब्रेक होना चाहिये व उसका प्रयोग आवश्यक है लेकिन इसको व्यवहार में कैसे उतारा जाये जिससे तनावपूर्ण जीवन से मुक्ति मिल सके। आज हमसे जो अपेक्षाएँ की जाती हैं तथा हमारी जो इच्छाएँ हैं उनकी पूर्ति के लिये हमें महत्त्वाकांक्षी बनना पड़ता है।"

दादा– यह बात यहाँ समझना आवश्यक है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तो कर सकता है, लेकिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता। भगवान् महावीर के अनुसार इच्छाएँ आकाश की तरह अनन्त हैं। इन्हें छिद्र युक्त घड़े की उपमा दी जा सकती है, जिसको कभी भरा नहीं जा सकता। जितना व्यावहारिक ज्ञान जैन आगम एवं धर्म में निहित है उतना अन्यत्र मिलना कठिन है। आज के तनावपूर्ण व मानसिक दबाव से भरे हुए जीवन में यह प्रासंगिक है। भगवान् महावीर ने अहिंसा का सिद्धांत प्रतिपादित किया एवं उसका विराट् स्वरूप विश्व के समक्ष रखा–"जीओ और जीने दो"। हर प्राणी जीना चाहता है, अतः दूसरे प्राणियों के प्रति वही व्यवहार करो जो अपने प्रति चाहते हो। यदि इस प्रकार अतः की सकारात्मक सोच जीवन में आ जाये तो मानसिक दबाव व तनाव से मुक्ति पाई जा सकती है।"

वार्तालाप चलता रहा, अन्त में निचोड़ यही निकला कि आज का युवा भेड़ चाल में विश्वास नहीं करता है। हर बात को तर्क की कसौटी पर कसकर जब तक उसके गुण दोष की अनुभूति नहीं कर ले तब तक उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं है। आज की इस भौतिक दौड़ में युवाओं के जीवन मूल्यों में आमूल चूल परिवर्तन हो गया है। यह भी सत्य है कि इस अंधी दौड़ में आज का युवा तनाव, अशांत मन और तरह-तरह की हीन भावना (depression) से ग्रसित है तथा जल्दबाजी तथा खण्डित सोच का शिकार होता जा रहा है। प्रायः इस प्रकार का जीवन मानसिक पीड़ा व कई असाध्य रोगों का कारण बन जाता है।

जीवन एक पाठशाला– यदि हम यह कहें कि जीवन एक पाठशाला है तो गलत नहीं होगा। मनुष्य हर क्षण यहाँ कुछ सीखता रहता है। जो जागरूक अवस्था में विवेक से जीवन जीता है उसे ही सत्य की अनुभूति होती है एवं जीवन सार्थक हो जाता है। महान दार्शनिक सन्त विवेकानन्द ने जीवन को प्रयोगशाला की उपमा दी है। उनके द्वारा दिया गया एक उदाहरण बहुत प्रासंगिक है: यदि कोई व्यक्ति रसायन शास्त्र (Chemistry) सीखना चाहे और रोज रात को सोने के समय व सुबह जागते समय यह दोहराये कि रसायन शास्त्र आ जाओ- आ जाओ, तो क्या वो

कुछ सीख पायेगा? नहीं! यदि वह रसायन शास्त्र सीखना चाहता है तो उसे प्रयोगशाला में जाकर एसिड व ऐलकली आदि रसायनों से प्रयोग करने पड़ेंगे। वैसे ही जीवन में कुछ सीखने के लिये, अनुभूति करने के लिये, सही और गलत का अहसास करने के लिये कर्म आवश्यक है। जागरूक होकर विवेकपूर्ण कर्म ही धर्म का स्वरूप है।

सही वातावरण व मार्गदर्शन की आवश्यकता– आज का युवावर्ग इन सब विचारों एवं प्रणालियों से परिचित है। आज योग गुरु, मैनेजमेन्ट गुरु व धर्म-गुरुओं की कमी नहीं है। फिर यह कैसी विडम्बना है कि युवा वर्ग में तनाव, मानसिक दबाव एवं नकारात्मक सोच बढ़ती जा रही है। शायद कहीं न कहीं कुछ कमी तो जरूर है। जो कुछ हम जानते हैं, सोचते हैं और समझते हैं उसे जीवन प्रणाली में उतार नहीं पाये हैं। हमारी कथनी और करनी में जमीन और आसमान का अन्तर है। आज की युवा पीढ़ी में धर्म का बीज तो अंकुरित होता है लेकिन सही वातावरण, सही दिशा व सही मार्गदर्शन के अभाव में वह पल्लवित व पुष्पित नहीं होता है। आज की युवा वर्ग धर्म के विमुख नहीं सम्मुख खड़ा है। आवश्यकता है मनौवैज्ञानिक ढंग से धर्म के व्यावहारिक रूप को प्रस्तुत करने की। तात्पर्य यह है कि युवाओं की समस्याओं को जाने और समझे बिना क्रिया व नियमों के पालन की बात की जाती है। जैसा डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने अपने सम्पादकीय जिनवाणी अप्रेल 2010 में बहुत ही सारगर्भित व तर्कसंगत विश्लेषण करते हुए लिखा है कि धर्म स्थानों पर टोकाटाकी व उनकी मानसिकता को समझे बिना जो नियम आदि करवाने की प्रक्रिया है उससे युवा वर्ग वहाँ जाने से संकोच करता है।

समय परिवर्तनशील है। समय के साथ बदलाव आवश्यक है। आज हमको अपने आपको टटोलने की आवश्यकता है एवं यह देखना है कि कहाँ परिवर्तन की एवं विशेष प्रयास की आवश्यकता है।

भौतिक विकास एवं धर्म एक–दूसरे के विरोधी नहीं– भौतिक विकास एवं धर्म एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं बल्कि पूरक हैं। भौतिक सुख-साधनों का दुरुपयोग होता है एवं आचरण में नैतिकता व शुद्धता का अभाव हो जाता है तो जीवन में व सोच में विकृतियाँ आना स्वाभाविक है। धर्म भौतिक-विकास व सुखी जीवन में सहयोगी है। आवश्यक है संतुलित सोच एवं सही मानसिकता की।

यदि हम भौतिकवाद को दोष देते रहे और कहें कि ये धन, ये सुख-सविधाएँ यह भौतिक विकास ही हमारे दुःखों का कारण है तो यह सही नहीं होगा। हमको

इन सबमें ही सुख व शांति ढूंढनी होगी। सदाचरण, सकारात्मक सोच, सेवा, संयम, समभाव, विनम्रता, विवेक ये धर्म के व्यवहारिक रूप हैं- धर्म जीवन जीने की कला है एवं धर्म तत्काल लाभ देता है तथा सुख व दुःख दोनों ही परिस्थितियों में समभाव से जीना सिखाता है।

आज की युवा पीढ़ी जीवन में सार ढूंढ रही है, मन की शांति ढूंढ रही है, तनाव से मुक्ति ढूंढ रही है। इसमें धर्म ही सहायक हो सकता है। युवा पीढ़ी को धर्म से जोड़ने के लिये, अभिमुख करने के लिये पहले उनके सोच में परिवर्तन लाना आवश्यक है फिर जीवन प्रणाली में स्वतः ही परिवर्तन आ जायेगा।

कुछ सुझाव विचारार्थ प्रस्तुत हैं-

1. युवाओं को धार्मिक व समाज की गतिविधियों से जोड़ने के लिये उनके सुझाव आमंत्रित किये जाएं एवं उन पर खुलकर चर्चा (Brain storming session) होना चाहिये।
2. युवा पीढ़ी की समस्याओं एवं शंकाओं का समाधान, उनकी आधुनिक जीवन प्रणाली के अन्तर्गत कैसे हो सकता है, इस पर चर्चा व व्याख्यान होने चाहिये। तनाव से मुक्ति, नकारात्मक सोच का निवारण, मन की शांति एवं समग्र जीवन पर विशेष बल देना चाहिये ताकि वह जीवन के सही सार व मतलब को पहचान सके।
3. धर्मस्थानों में युवाओं को आकर्षित करने के लिये आवश्यक सुविधाएँ एवं वातावरण उपलब्ध करवाया जाये।

-53, लेन नं. 2, गोपालबाड़ी, जयपुर (राज.)

आवश्यक सूचना

जिनवाणी पत्रिका के सभी सम्मानीय सदस्य एवं पाठकगणों को सूचित किया जाता है कि पत्रिका में प्रकाशनार्थ जो भी सूचना या सामग्री प्रेषित की जाती है वह सूचना/सामग्री प्रत्येक माह की 25 तारीख से पूर्व इस कार्यालय को प्राप्त होना आवश्यक है। 25 तारीख के बाद प्राप्त होने वाली सूचना अगले माह की 10 तारीख को प्रेषित की जाने वाली जिनवाणी पत्रिका में शामिल नहीं की जा सकेगी। अगले माह में प्रकाशित होने वाली पत्रिका में ही प्रकाशित होगी।

जिनवाणी में पता परिवर्तन करने वाले कृपया अपनी सदस्यता नम्बर अवश्य लिखे या बताये। सदस्यता नम्बर जिनवाणी के लिफाफे पर पते में सबसे ऊपर अंकित रहती है। - *मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल/सम्पादक जिनवाणी*

लघु-नाटिका

संयम है अनमोल

सुमन कोठारी

चकाचौंध उत्पन्न करने वाली आज की इस दुनियाँ में चारों ओर एक से एक बढ़कर भोगों का प्रलोभन देने वाले वैज्ञानिक उपकरण टी.वी., कम्प्यूटर, इण्टरनेट, मोबाइल आदि की भरमार है। आधुनिकता एवं भौतिकता का प्रदर्शन करते हुए फैशन परस्त युवा-युवती भटके हुए हैं। अध्ययन हो या व्यवसाय अथवा सामाजिक परम्पराएँ, एक दूसरे से स्पर्धा है और इन सबका एक ही अन्त है-परस्पर ईर्ष्या-द्वेष। अधिक से अधिक पाने की तृष्णा का परिणाम है कभी न मिलने वाली शान्ति।

ऐसे में 'संयम', 'दीक्षा', जैसे शब्द कानों में पड़ते हैं, वे भी पूर्ण यौवन अवस्था में तो बड़ा ही आश्चर्य होता है। तो आइये, आज हम एक 'संवाद-नाटिका' के द्वारा इन वीर बहनों का गुणगान करें एवं संयम के महत्त्व को समझें।

बहनों की किटी पार्टी में इधर-उधर की गपशप चल रही है।

डिम्पल- अरे! तुम्हें मालूम है आज ई.पी. में कौनसी फिल्म लगी है?

मोनिका- हाँ-हाँ क्यों नहीं, ई.पी. में ही नहीं, सभी सिनेमा हॉल में कौनसी मूवी लगी है मुझे सब मालूम है, क्योंकि मैंने सब देख ली है। मुझे मूवी का बड़ा शौक है।

सोनू- अच्छा यार, मैं तो चलती हूँ मुझे तो अभी बहुत काम है, पार्लर भी जाना है। 2-3 घण्टे तो लग ही जायेंगें, शाम को पार्टी में जो जाना है।

डिम्पल- चलो! मैं भी चलती हूँ, कल मेरे बेटे का बर्थ डे है, बहुत शॉपिंग करनी है।

(तभी चौथी बहन मजाक बनाते हुए)

बालोतरा में 15 मई को सम्पन्न दीक्षा के पूर्व जयपुर में मुमुक्षु बहनों के अभिनन्दन के समय प्रस्तुत नाटिका।

नेहा– अरे, तुमने सुना है क्या? ग्यारह बहनें दीक्षा ले रही हैं।

(सभी एक साथ चौंक कर अजीब अंदाज में...... ।)

तीनों– 'दीक्षा' यह किस चिड़िया का नाम है, क्या होती है दीक्षा? हम सब नहीं जानते। क्या तुम जानती हो?

नेहा– अरे नहीं-नहीं, मैंने तो मम्मी-पापा के मुँह से सुना, इसलिए कह दिया।

सभी– कौतुहल से.... 'चलो-चलो उन्हीं बहनों से पूछते हैं। (सब मुमुक्षु बहनों के पास जाती हैं और पूछती हैं....सुश्री ट्विंकल व वर्षा बहन से......)

नेहा– ट्विंकल बहन, वर्षा बहन, क्या आप हमें यह दीक्षा क्या है, संयम क्या होता है? बतायेंगी।

ट्विंकल एवं वर्षा– आओ! बहन आओ, ज्ञानी भगवन्तों से जो हमने जाना है- उसके अनुसार संयम है जीवन का बसन्त! यह आत्मगुणों को विकसित कर पूर्णता एवं शाश्वत सुख देने का मार्ग है। अमूल्य मानव भव को सफल बनाने वाला पथ है 'संयम'।

डिम्पल– दीपिका जी, आप बतायें यह दीक्षा कैसे ली जाती है? क्या यह खरीदी जा सकती है?

दीपिका– (मुमुक्षु) नहीं, बहन नहीं। यह खरीदने की वस्तु नहीं। यह अनमोल है, सुगुरु के सान्निध्य में रहकर हमने ज्ञान ध्यान सीखा, जिससे हमारे जीवन का अज्ञान रूपी अन्धकार दूर हुआ। हमने संयम का महत्त्व जाना तथा यह भी जाना कि श्रमण कैसे त्रस एवं स्थावर अर्थात् प्राणिमात्र पर करुणा रखने वाले होते हैं और आकुलता-व्याकुलता रहित होकर समभाव की साधना वाले होते है। हमें भी उनके सान्निध्य में आनन्द एवं शांति अनुभव हुई। आरम्भ-परिग्रह को छोड़, संयम का पथ अपनाना ही दीक्षा है।

नेहा आदि– (आश्चर्य से) तुम्हें इतना ज्ञान कैसे हुआ?

समता बहन– (मुमुक्षु) बहन मुझे इन किटी पार्टियों में, पार्लर में, इन भोज–आयोजनों में कभी भी विशेष रुचि नहीं रही। मुझे इनमें कभी भी शान्ति महसूस नहीं हुई। मुझे बाहरी सौन्दर्य नहीं, बल्कि आत्मा का सौन्दर्य जो चिरस्थायी हो, उसकी खोज थी। मैं कौन हूँ, कहाँ से आयी हूँ, 'जन्म–मरण' 'बुढ़ापा' 'बीमारी' ये क्या हैं? मैं कहाँ जाऊँगी? इन प्रश्नों के समाधान के लिए मैं स्थानक में पंच महाव्रत धारी साधु–साध्वियों के पास गयी। उनके ही श्री मुख से मैंने सुना–एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक की जीवयोनि में यह जीव अनन्त बार वेदना भोग कर आया है। तिर्यञ्च गति एवं निगोद के कष्टों का वर्णन सुनकर मुझे इन काम भोगों से विरक्ति हो गयी और मैंने माता–पिता से दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति माँगी। (माता–पिता के पास जाकर बड़े विनम्र भाव से बोलती है – मम्मी पापा, जन्म में दुःख है, मरण में दुःख है, बुढ़ापा एवं बीमारी में दुःख है। सम्पूर्ण संसार में मुझे परिवार–भाई–बंधुजन में कहीं भी सुख नज़र नहीं आ रहा है। अतः आप हमें दीक्षा की अनुमति प्रदान करें।)

माता–पिता– (भावविह्वल होकर) क्यों बेटी? तुम्हें यहाँ क्या दुःख है? तुम ऐसा क्यों कह रही हो? श्रमण धर्म का पालन तो तलवार की धार पर चलने के समान कष्टदायी है, पंच महाव्रतों का पालन अत्यन्त कठिन है।

कोमल बहन– (मुमुक्षु) माँ! मैंने यह शारीरिक वेदनाएँ तो अनेक बार भोगी हैं। बुढ़ापा, मृत्यु, बीमारी–तिर्यञ्च की वेदना अनेक भवों से सहन की है।

माता–पिता– 22 परीषह रूपी कष्टों यथा–भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी, आक्रोश, अल्पवस्त्र, भूमिशयन, भिक्षा–मांगना आदि को समभाव से सहन करना बहुत ही दुष्कर है।

दीपिका– (मुमुक्षु) यहाँ जितनी गर्मी–सर्दी है, उससे अनन्त गुणा शीत–उष्ण वेदना नरक में तथा ताड़ना, तर्जना तिर्यञ्च गति में मैंने सहन

की है।

माता-पिता-बेटी, अभी भरपूर यौवन अवस्था है, भोगों की सामग्री तुम्हारे सामने है, पहले पाँचों इन्द्रियों के विषयों को भोगो, फिर तुम दीक्षा ले लेना।

वर्षा बहन- (मुमुक्षु) (बड़े आदर भाव से माताजी-पिताजी से) ये काम-भोग किंपाक फल के समान विषमय हैं तथा यह जीवन घास की नोंक पर टिकी ओस बिन्दु के समान क्षण-भंगुर है। ये कामभोग देवयोनि एवं मनुष्य भव में अनेक बार प्राप्त किये, किन्तु फिर भी यह तृष्णा शान्त न हो पायी। आज ज्ञानी भगवन्तों के अनन्त उपकार स्वरूप जिनवाणी का श्रवण कर, मेरा मन संयम लेने के लिये व्याकुल हो रहा है। अतः आप आज्ञा प्रदान करें।

माता-पिता-बेटी श्रमण धर्म में नंगे पैर चलना, जमीन पर सोना, बह्मचर्य का पालन करना अति दुष्कर है। तुम कोमल गद्दों पर सोने वाली श्रमण धर्म का कैसे पालन करोगी?

विजयश्री- (मुमुक्षु) महाभयंकर दावाग्नि के समान मरु प्रदेश में कंकरीली रेत एवं नदी तट पर तपती हुई बालुका में मैं अनन्त बार जलायी गयी हूँ, अनेक बार मुझे छेदा-भेदा गया है। कोल्हू के बैल की तरह पीला गया है, उस वेदना के सामने श्रमण धर्म के कष्ट आत्म-सागर में आनन्द की शीतल लहरों के समान लगते हैं।

(मुमुक्षु मंजु बहन से) आपकी अपनी सुपुत्री जिसने जिनशासन की प्रभावना कर इस युवावस्था में धर्मशासन को दैदीप्यमान किया है, उनकी संयमयात्रा के कष्टों का तो आपने साक्षात् अनुभव किया है। कैसे आजीवन प्राणातिपात अर्थात् सूक्ष्म हिंसा से भी विरत होना, अप्रमत्त रहकर मृषावाद का त्याग करना, अचौर्य का पालन करना, कामभोगों के रसों एवं स्वादों को जानने वाले व्यक्ति के लिए ब्रह्मचर्य महाव्रत का पालन करना, परिवार के ममत्व का त्याग करना बहुत ही

कठिन है। यह जानकर देखकर भी आपने दुष्कर पथ को अपनाया, घोर आश्चर्य है।

मंजु बहन– (मुमुक्षु) जाल बनाने वाली मकड़ी में जाल बनाने की ताकत है, लेकिन जाल को तोड़ने की नहीं, क्योंकि वह अज्ञानी है, किन्तु मनुष्य ज्ञानी भी हो सकता है, अज्ञानी भी। वह धन-कुटुम्ब परिवार के रूप में यह जाल बनाता है, अज्ञान के कारण मोह जाल में फंसता जाता है। आज तक हम भी उसी मोह जाल में फंसी हुई थी। अनन्त पुण्यवानी से, ज्ञानी पुरुषों के उपकार स्वरूप इस मोह जाल को काटने का ज्ञान प्राप्त हुआ, उन्होंने मनुष्य-भव का सही मूल्य समझाया, अज्ञानता से हम भी अमूल्य मानव भव को उन्हीं वणिक् पुत्र की तरह न खो दें–

कथा– एक वणिक् के तीन पुत्र थे। वे तीनों धन कमाने के लिये विदेश गये। वणिक् ने प्रत्येक पुत्र को एक-एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ दी और कहा कि एक वर्ष बाद आकर मुझे बताना कि किसने-कितना धन कमाया?

(तीनों भाई धन लेकर विदेश चले गये)

प्रथम पुत्र ने सोचा, पास में धन है, जिन्दगी का कुछ मजा ले लूँ, बाद में धन कमा लूँगा। जुआँ, शराब आदि मौज-मस्ती में उसने सारी मूल पूंजी समाप्त कर दी।

दूसरे पुत्र से बहुत पुरुषार्थ नहीं होता था, अतः उसने मूल पूंजी को ब्याज पर लगा दिया एवं अपना खर्च चलाता रहा, मूल पूंजी सुरक्षित रही।

तीसरे पुत्र ने उस पूंजी से व्यापार किया एवं खूब लाभ कमाया। अपनी पूंजी कई गुणा बढ़ाकर एक वर्ष बाद तीनों पुत्र पिता के पास पहुँचे।

पहला पुत्र फटे हाल भिखारी की भांति दुःखी, उदास था, क्योंकि उसने मूल पूंजी भी गंवा दी थी। दूसरे ने मूल पूंजी सुरक्षित रखी। तीसरे ने कई गुणा पूंजी पिता के समक्ष प्रस्तुत

की।

ज्ञानीजन हमें यही संदेश देते हैं कि यह मानवभव मूल पूंजी है। यदि इसे हम काम-भोग, विषय-वासना में व्यतीत करते हैं तो मूल पूंजी मानव जीवन को खोकर तिर्यंच गति एवं नरक गति प्राप्त करते हैं तथा मृत्यु के समय भयभीत होकर "हारे हुए जुआरी" की भांति पश्चात्ताप करते हैं। मानवभव में देश संयम अर्थात् श्रावकपने का पालन, सुदेव-सुगुरु-सुधर्म पर श्रद्धा रखने से मूल पूंजी यानी मानवभव सुरक्षित रहता है तथा शुद्धता से पालन करने से देव गति की प्राप्ति भी हो सकती है। मूल पूंजी रूप मानवभव में पुरुषार्थ कर, संयम साधना का शुद्ध पालन कर हम मोक्ष रूपी अक्षय निधि एवं शाश्वत सुख को भी प्राप्त कर सकते हैं। यह उसकी कमाई है।

मंजु बहन- (मुमुक्षु) इस प्रकार ज्ञानी भगवन्तों से मनुष्य भव का महत्त्व जानकर तथा संसार के भयंकर दृश्य जो रात-दिन कहीं बाढ़, तो कहीं भूकम्प, कहीं बर्ड फ्लू, बम्ब विस्फोट, एक्सीडेंट व कैंसर जैसी महामारी के रूप में व्याप्त हैं, को देखकर मेरी आत्मा काँप उठी।

मैंने समझा कि संयम ही वह संजीवनी बूंटी है जो जन्म-मरण के दुःखों को मिटाने वाली है। तभी हमने निर्णय लिया कि हमें भी यह पथ अपनाना है, हमारा मोह जाल टूट गया।

आज अनन्त पुण्यवानी से आचार्य भगवन्त, उपाध्यायप्रवर एवं सभी ज्ञानी-महाज्ञानी सन्त-सतियों के चरण-शरण से यह शुभ दिन हमारे जीवन में आया है। आज हम सब वैरागिन बहनों के रोम-रोम आनन्द से पुलकित हो रहे हैं, वैराग्य से आह्लादित हृदय हिलोरें मार रहा है।

सभी बहनें- धन्य हो! धन्य हो! आप सबकी वीरता को। हम काम भोगों के एवं सुख-सुविधाओं के आकर्षण में बंधे हैं एवं आप सब इन्हें त्याग कर संयम का मार्ग अपना रही हैं। आज यह जयपुर नगरी

ही नहीं सम्पूर्ण प्राणी जगत् एवं छः काया के जीव आपके इस शुभ निर्णय को धन्यवाद दे रहे हैं। आप लोग सच्चे अर्थों में भगवान् महावीर के संदेश-'अहिंसा' महाव्रत का पालन करने जा रहे हैं। हम सब भी भगवान से प्रार्थना करते हैं हमारे जीवन में भी यह शुभ दिन आये। आप सबका मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो।

हम भी संयम को भोगों से अधिक महत्त्व देना चाहती हैं।

- द्वारा-ज्ञानचन्द जी कोठारी,
101/3, पुलिस मेमोरियल, जयपुर (राज.)

जिनवाणी में रचना प्रकाशन हेतु टिप्स

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

1. जिनवाणी में आपकी रचना अवश्य प्रकाशित होगी, रचनाएँ भेजते रहने की हिम्मत संजोएँ रखिए।
2. जिनवाणी के प्रत्येक अंक का स्वाध्याय अधिक करें तथा उसके स्तम्भों के अनुकूल स्पष्ट सुन्दर शब्दों में पृष्ठ के एक ओर लिखकर पहले लघु रचना भेजें।
3. जिनवाणी एक बहुत अच्छी पठनीय एवं संग्रहणीय पत्रिका है। इसका स्तर आध्यात्मिकता के साथ साहित्यिक है। इस बिन्दु को ध्यान में रखकर रचना भेजें।
4. नहीं छपना रचनाकार के धैर्य की परीक्षा है। रचना भेजकर भूल जाइए। इस बात का संतोष कर लीजिए कि इस बहाने लिखने का प्रयास तो हो रहा है। निखार आता रहेगा तथा आपकी हैण्ड राइटिंग भी सुधरती रहेगी।

आपकी रचनाएँ छपती रहें, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ।

-छोटी कसरावद, जिला-खरगोन-451228 (म.प्र.)

उपन्यास (16)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- मुसीबतों से घिरा किशनलाल भविष्य की आशंकाओं से बहुत चिन्तित था। अतः दुःख के दिनों में सेठजी भगवान् को याद करने लगे तो शान्ति ने कहा कि धर्म में आस्था रखो, गुरु और भगवान् का सहारा बनाए रखो। आलोक और विश्वास दोनों लौट कर अवश्य आयेंगे। सेठ किशनलाल ने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाकर कहा-'मैं कल ही टी.वी. और समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दूँगा।' यह सुनकर शान्ति प्रसन्न हो गई। दूसरी तरफ बम्बई में.......

'बम्बई आए हुए, आज मुझे एक महीना हो गया है।' विश्वास को अचानक यह याद आई, तो उसका मन-मस्तिष्क सहज रूप से, ठीक एक महीना पहले के दिन की स्मृति से जुड़ गया।

घर से निकलते समय मैंने यह सोचा भी नहीं था कि मैं बम्बई जाऊँगा, और वहाँ जाते ही इन सारी सुविधाओं का लाभ मुझे मिलेगा। बम्बई में नौकरी और मकान, ये दोनों चीजें पाना आसान नहीं है। न जाने कितने लोग, अपने घरों से भाग-भाग कर यहाँ आते हैं नौकरी पाने के लिए। किन्तु, कई महीनों तक लगातार यों ही घूमते-भटकते रहते हैं और अपने साथ लाई पूँजी समाप्त करके पुनः पलायन कर जाते हैं। यदि किसी ने नौकरी पा भी ली, तो उसे वर्षों तक, सारी सुविधाओं से युक्त मकान पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, किन्तु मुझे, ये दोनों ही चीजें, एकदम सहज तरीके से तो मिली हैं, इनके साथ-साथ जो अन्य सुविधाएँ मुझे मुफ्त मिली हुई हैं, उन्हें पाने के लिए मैं अपनी पूरे महीने की तनख्वाह भी लगा दूँ, तब भी नहीं जुटा सकता।...न जाने किस जन्म के पुण्यों के बल से मैं आज यह सुख भोग रहा हूँ।

'क्या सोच रहे हो?' कमरे में प्रवेश करके मीनाक्षी ने पूछा।

'यही कि-

'मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है।
वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है।'

'बिल्कुल सच है। मगर, यह शैर, आपको आज कैसे याद आ गया?'

'बताता हूँ। पहले तुम बतलाओ, हमें बम्बई आये कितने दिन हो गये हैं

आज?'-विश्वास ने पूछा।

ठीक एक महीना हो गया है।'-मीनाक्षी ने जवाब दिया।

'बस, इसी महीने भर पुरानी कुछ स्मृतियाँ याद आ गयी थीं। इन्हीं के साथ घरवाले भी याद आ गये। आलोक, दीपक और आरती कैसे हैं? कुछ भी तो नहीं मालूम हो सका है इन दिनों में?'

'उन्हें क्या पता कि आप बम्बई में हैं। वरना वे पत्र जरूर लिखते। आपने भी तो अभी तक उन्हें कोई खत नहीं लिखा।'

'सोच रहा हूँ, एक दो दिन में पत्र डाल ही दूँ।.... माँ को तो वास्तव में बहुत चिन्ता हो रही होगी। उन्हें इंग्लैण्ड से हर महीने दो पत्र तो डाल ही देता था। यहाँ आकर एक पत्र भी नहीं दिया अब तक।'

'तो अब लिख दीजिए।'

'तुम स्वयं देख रही हो, दिन भर तो मरीजों के बीच रहकर बिता देता हूँ। जिस तरह से मरीजों की संख्या बढ़ रही है, उसे देखते हुए दो डॉक्टरों की रिक्तियाँ और निकलवानी हैं। कल ही, सौ बैड्स की व्यवस्था भी करवानी है।

'तब तो यह बहुत बड़ा अस्पताल हो जाएगा।'- मीनाक्षी ने अव्यक्त प्रसन्नता में भरकर कहा।

'पाँच करोड़ की योजना है यह। फिर, सेठजी ने मुझे ही सारी व्यवस्थाएँ करने का अधिकार दे दिया है।'

'सचमुच, भगवान् हम पर कितना मेहरबान है।'

'भगवान तो है ही। तुम भी तो मेहरबान बनो। मैं सोच रहा था कि कम से कम एक चाय तो मिलेगी ही। पर लगता है, तुम बातों में ही टाले जा रही हो।'

'मैं जानती थी, आप कहेंगे अवश्य। इसीलिए, मैं यह पूछने आई थी, कि चाय चलेगी या काफी। पर, यहाँ आकर आपकी बातों में उलझ गई।'

'अब पूछ लिया है, तो फिर काफी ले आओ।'

मीनाक्षी उठकर चली गई। विश्वास, समाचार पत्र के पृष्ठ पलटने लगा।

'लीजिए'- कुछ ही देर बाद, वापिस आई मीनाक्षी ने उसके सामने प्याला रखते हुए कहा।

'तुम्हें, काफी परेशानी होती है, ये सारे काम करने में। कहो तो एक नौकर तलाश कर रख लूं?'-विश्वास ने अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा।

'जी नहीं, अभी ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। घर का काम ही तो मेरे जिम्मे है। मुझे यह सब करते हुए बड़ी प्रसन्नता होती है। फिर, आजकल के नौकर किस तरह के होते हैं, यह मैं जानती हूँ।'-मीनाक्षी ने अपनी जिम्मेदारी स्पष्ट करते हुए कहा।

'काफी तो बहुत अच्छी पिलाई है तुमने।'

'दिन भर काम करते रहने की थकान के बाद, चाय मिले या काफी, उसमें, कुछ ज्यादा ही आनन्द प्राप्त होता है।'

'अरे! तुम नहीं पी रही हो?'

'मेरी इच्छा नहीं है। अभी एक घण्टा पहले ही तो चाय पी थी। फिर इस गर्म मुल्क में ज्यादा चाय-काफी पीना अच्छा नहीं है।'

'कमाल है, गर्म की इच्छा नहीं है तो ठंडा पेय ही ले लेती।'

'हर्गिज नहीं। इच्छा होती, तो जरूर ले लेती।'

'अरे भाई, कहीं तुम उस औरत की तरह तो नहीं छल रही हो मुझे।'

'किस औरत की तरह?'-एक हल्की सी खिन्नता के स्वर में पूछा मीनाक्षी ने।

'तुम जानती हो?'

'जानती होती, तो पूछती क्यों?'

'अच्छा सुनो।' -कहकर विश्वास उसे एक राजस्थानी लोककथा सुनाने लगा। वह बोला-'एक औरत थी। उसका पति सुबह जल्दी ही काम पर चला जाता था। दोपहर को जब वह वापिस घर लौटता, तो उसकी पत्नी, उसके आगे दाल रोटी रख देती और कहती-'खाओजी।'

पति उससे कहता-'तुम भी तो खाओ।'

'मुझे अभी भूख नहीं है। मेरी चिन्ता न कीजिए। मैं तो पड़ी चूल्हे में।'

'जैसी तुम्हारी इच्छा।'-उसका पति कहता, और भोजन करने लगता। इसी समय वह कुएँ से पानी भरने चली जाती।

रोज-रोज यही बातें दुहराई जाती रहीं। पर, एक दिन, उस औरत का पति कुछ जल्दी घर पर आ गया। संयोग से उस दिन वह औरत भी भोजन जल्दी बना चुकी थी, और कुएँ पर पानी लेने गई थी। पति ने घर को सुनसान देखा, तो वह रसोईघर की ओर चला गया। उसने देखा-'एक कटोरे में दाल रखी हुई है और एक टिफिन में रोटियाँ।'

रोटियों को देखकर, वह टिफिन का ढक्कन बंद करने जा रहा था, तभी उसकी दृष्टि चूल्हे पर पड़ गई। चूल्हे के अगले हिस्से में उसे राख का एक ढेर लगा दिखाई दिया। उसे कुछ शरारत सूझी। उसने पास में पड़े चिमटे से उस ढेर को बिखेर दिया। ढेर में दबी हुई बाटियाँ निकलकर सामने आ गयीं।

सामने दिखलाई पड़ रही बाटियों को देखकर उसे आश्चर्य हो रहा था। पर, तभी उसे, यह रहस्य समझ में आ गया कि उसकी पत्नी, प्रतिदिन क्यों यह कहा करती थी कि 'मैं तो पड़ी चूल्हे में।'

बस, उसने तुरन्त उन बाटियों को फोड़-फोड़ कर थाली में रखा। फिर उनमें मनचाही घी-चीनी डालकर उसने खाया, और हाथ मुँह धोकर बाहर निकल आया।

थोड़ी ही देर बाद, उसकी पत्नी आ गई। वह पानी के घड़े रखकर सीधी रसोईघर में आ गई। यह देख उसका पति भी, उसके पीछे-पीछे रसोईघर में चला गया, और उसके सामने बैठ गया।

पत्नी ने उसे वहीं बैठा देख करके, उसी थाली में दाल-रोटी परोसी, और उसके सामने रखती हुई बोली- 'लीजिए, भोजन कर लीजिए।'

'तुम भी तो भोजन करो' - पति ने एक तिरछी निगाह से उसकी ओर देखते हुए कहा।

'आप खाइए। मेरी चिन्ता मत करो, मैं तो पड़ी चूल्हे में' - पत्नी ने यही उत्तर आज भी उसे दिया।

'अरे भाई, रोज-रोज तुम चूल्हे में पड़ी रहती हो। तो मान लो, आज मैं भी पड़ा चूल्हे में।'

पति के मुख से यह शब्द सुनकर वह एकदम चौंक पड़ी। आशंका भरे मन से उसने चूल्हे के राख के ढेर की ओर देखा। किन्तु, वह ढेर आज बिखरा पड़ा था। उसे, स्थिति समझने में देर नहीं लगी। उसका चेहरा उतर गया अपनी चोरी पकड़ी देखकर। वह शर्म से नीचे देखकर जमीन कुरेदने लगी बेचारी।

यह कहानी पूरी करके विश्वास बोला- 'कहीं तुम भी तो.........।'

'चलो हटो' - विश्वास को बीच में टोकती हुई मीनाक्षी बोली- 'आपने भी मुझे उस चुड़ैल जैसी भुक्खड़ मान लिया है क्या? आप कहें, तो मैं चाय कभी न पीने का संकल्प ले लूँ।'

'अरे! तुम तो नाराज हो गई। मैंने तुम्हें प्रसन्न करने के लिए यह कहानी सुनायी है। इससे तुम्हें यह भी ज्ञात हो गया कि दुनियाँ में इस तरह की औरतें भी होती हैं।'

'बस, आपको तो औरतों पर व्यंग्य करना ही आता है। आदमी भी तो कोई कम नहीं होते हैं। बाहर रहकर खाना खा आते हैं। घर आकर कहने लगते हैं- मुझे भूख ही नहीं लगी है।' – मीनाक्षी ने अपने मन की भडास उतारते हुए कहा।

'मुझे तो अस्पताल में सास लेने की भी फुर्सत नहीं मिलती है।'

'फुर्सत तो निकालने से निकलती है। कई बार कह चुकी हूँ कि घर पर पिताजी को पत्र डाल दो। पर मेरी सुनता ही कौन है?'

'मीनाक्षी कौन है वहाँ मेरा शुभचिन्तक, जिसे पत्र लिखूँ। पत्र पढ़कर माताजी और रो–रो कर परेशान होंगी। पिताजी के कानों पर तो जूँ भी नहीं रेंगेगी।'

'तब फिर माताजी को ही लिख दो।'

'लिख दूँगा।'

'एक पत्र, साथ ही, मेरी माताजी को भी लिख देना।'

'तो यही बात सीधी क्यों नहीं कही कि मेरी माँ को पत्र डाल दो।'

'मुझे लिखना नहीं आता क्या? मैं स्वयं डाल दूँगी, आप रहने दीजिए।'– मीनाक्षी ने झुंझलाते हुए कहा।

'अच्छा बाबा! नाराज मत होओ। मैं डाल दूँगा।' विश्वास ने उसे आश्वासन दिया।

'लीजिए, सुनिये किसका टेलीफोन है?'–मीनाक्षी ने टेलीफोन की घन्टी बजने पर, रिसीवर विश्वास को पकड़ाते हुए कहा।

'हैलोऽऽ?...क्या, दुर्घटना?....ठीक है। मैं आ रहा हूँ।'–कहकर उसने रिसीवर रख दिया। फिर मीनाक्षी से बोला–'किसी कार–एक्सीडेन्ट में घायल हुआ व्यक्ति आया है। मैं जा रहा हूँ।'–विश्वास ने काफी का प्याला रखते हुए कहा और उठ बैठा।

'काफी तो पूरी पी लीजिए।'

'नहीं मीनाक्षी! काफी जरूरी नहीं है। न मालूम उस व्यक्ति की हालत क्या होगी?'– कहता हुआ विश्वास तुरन्त बाहर निकल गया। और मीनाक्षी, उसे बाहर जाते देखती हुई रह गयी। **(क्रमशः)**

नारी-स्तम्भ

ससुराल मेरी पाठशाला

श्रीमती रतन चोरड़िया

माँ-बाप की कमी कोई पाट नहीं सकता,
उनके आशीषों को कोई काट नहीं सकता।
दुनियाँ में किसी देवता का स्थान दूजा है,
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है।।

पहले सम्मिलित परिवार होते थे। बुजुर्गों के पास अनुभव का खजाना होता था। परिवार रूपी पाठशाला में प्रत्येक सदस्य सेवा, सहयोग, सरलता, प्रेम, मैत्री, करुणा, सहनशीलता, विनय, विवेक, वात्सल्य, आत्मीयता का पाठ सीख लिया करता था। दादा-दादी, नाना-नानी आदि घर के सभी बुजुर्ग अपने अनुभवों व संस्कारों से पूरे परिवार को इस तरह संस्कारित करते कि वहाँ से संस्कार पाया हुआ बच्चा कहीं भी चला जाता, कैसी भी विपरीत परिस्थितियाँ या विपरीत वातावरण मिलता, वह उसमें समायोजित हो जाता। हजारों प्रतिकूलताओं के बीच में उसके चेहरे की मुस्कान कभी समाप्त नहीं होती। कारण कि बालकों को सही दृष्टि मिलती थी। वे यही सोचते कि जब हमें रहना यहीं हैं तो फिर प्रसन्न रहें।

संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं, जिससे भूलें नहीं होती हैं। हाँ, यह जरूर होता है कि किसी की भूल नज़र अन्दाज कर दी जाती है एवं किसी की छोटी सी भूल भी राई का पहाड़ बन जाती है। सबकी अपनी-अपनी पुण्यवानी का खेल है। जीवन एक धधकते चूल्हे की तरह होता है। बिना बड़ों के नियन्त्रण या माँ-बाप के साये के बिना अक्सर बच्चे उसमें अपना हाथ जला बैठते हैं। आज हम अपने चारों तरफ देखते हैं तो लगता है कि वाणी के असंयम व जीभ के दंश से अनगिनत परिवार मिट्टी के ढ़ेर मात्र रह गये हैं। जीवन की सरलता, सरसता व समरसता प्रायः लुप्त होती जा रही है। अनगिनत उमंगों से भरे हुए मन एवं आशीषों से लबालब भरे हृदय सूखकर अब कठोर बनते जा रहे हैं।

चंद चांदी के सिक्कों के पीछे खून का रिश्ता आज टूटता जा रहा है। खून का रिश्ता अटूट होता है। धन तो हाथ का मैल है। आज कम है तो कल अधिक भी हो सकता है, परन्तु परिवार एक बार टूटने पर पुनः जुड़ना मुश्किल हो जाता है। ये

रिश्ते कांच के टुकड़े की तरह नाजुक होते हैं। अतः इन्हें सहेज कर व निभाकर चलने से ही परिवार में मधुर संबंध बने रह सकते हैं।

घर-परिवार एवं संसार में अच्छा-बुरा कुछ नहीं होता। हमारी सोच, हमारी दृष्टि व हमारा नज़रिया ही उसे अच्छा-बुरा बना देता है। यदि हमारी दृष्टि सही है तो पूरी सृष्टि सुन्दर एवं स्वर्ग समान लगती है। कारण कि फूल व काँटे हमेशा साथ-साथ ही रहते हैं। फूल देखने वाले की नज़र में कांटे ओझल हो जाते हैं। जिसने गुण रूपी अमृत को देख लिया, उसे दोष रूपी ज़हर नज़र ही नहीं आयेगा। कितनी सुन्दर पंक्तियां 'घर' के लिए लिखी हैं-

आनन्दपूर्ण साहचर्य का, भावनाओं के खुलेपन का,
प्रेम के प्रवाह का, निश्चल बलिदान का,
पारस्परिक समर्पण का, सेवा और कुर्बानी का,
जिन्दगी की राहों में, रोशनी भरने का स्थान घर होता है।

लड़की को पराया धन कहते हैं, कारण कि उसे पराये घर में जाना होता है। उसे सुन्दर संस्कार देकर प्रेम व समर्पण से जीना सिखाना हर माँ-बाप का कर्त्तव्य होता है। जीवन में विनय, विवेक, सहनशीलता आदि के साथ उपर्युक्त गुण आ जायें तो कभी किसी लड़की को तलाक लेने, फांसी के फंदे पर झूलने, घर से भागने आदि के भाव ही मन में नहीं आ सकते। लड़की यदि निभने एवं निभाने की कला में पारंगत है तो कभी घर में कलह हो ही नहीं सकता।

आज से लगभग 44 वर्ष पूर्व जब मैं चोरडिया परिवार की बहू बनकर आई, उस समय मुझे यहाँ का वातावरण बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। जो शादी के सपने मैंने संजोये वे सारे सपने टूट-टूट कर बिखर रहे थे। यहाँ का कठोर अनुशासन, घर की मान-मर्यादाओं का पालन तथा धार्मिक जीवन उस समय मुझे अच्छा नहीं लगा था, क्योंकि जीवन के सम्बन्ध में मेरी अपनी कल्पनाएँ थीं। इसलिए मुझे यहां आकर लगा कि मानो ज़िन्दगी घर के कैदखाने में बंद होकर रह गई है। सुबह चार बजे से लेकर रात के दस बजे तक मशीन की तरह कार्य करना होता था। एक नौकरानी व मशीन को भी आराम मिलता है, पर मुझे वह भी नसीब नहीं था। सुबह सामायिक करो, फिर घर के कार्य करो, निपट जाओ तो व्याख्यान चलो। दोपहर में काम न हो तो सिलाई-बुनाई-कढ़ाई करो। फिर बुजुर्गों का कठोर अनुशासन- घर की बहू को ऐसे नहीं करना, वैसे नहीं करना। जरा सा बड़ों के मन के विपरीत बात हुई तो डाँट सुनने को मिलती। तब मन में आता कि मैं शादी नहीं

करती तो अच्छा होता, दीक्षा ही ले लेती। कभी मन में आता कि ऐसे जीने से तो मरना ही अच्छा। ये बातें न किसी को कह सकती थी एवं न सहन कर पाती थी। लेकिन धीरे-धीरे मैं इस परिवार में एडजस्ट होने लगी। जब मैं पहली बार मद्रास गई, तब वहाँ पूरे परिवार को देखा। उनका प्रेम, वात्सल्य एवं आत्मीयता देखी। तब मुझे रिश्तों का महत्त्व समझ में आने लगा। मेरी दृष्टि में परिवर्तन होना शुरू हो गया।

इधर मुझे आचार्य श्री हस्ती के दर्शन-वन्दन करने एवं अमृतवाणी सुनने का सौभाग्य मिलने लगा। जिससे मैंने स्वाध्याय करना शुरु किया। तब मेरे भावों में परिवर्तन होता रहा। जिस घर को मैं जेल समझ रही थी, वही घर अब अपना लगने लगा। परिवार की खुशी में मुझे अपनी खुशी लगती। परिवार रूपी पाठशाला में मैंने कई बातें सीखीं, यथा- प्रेम, स्नेह, सेवा, सहयोग, सहनशीलता व घर की मर्यादाओं का पालन कैसे करना आदि। श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. का वह भजन-"गुण सौरभ से रहे महकता, जहाँ जीवन सुखकर हो, ऐसा अपना घर हो।" इसकी एक-एक पंक्ति व एक-एक शब्द मुझे अपने बीते अतीत की याद दिलाते हैं। कैसे व किस तरह मैंने अपने जीवन को बदला। यही सोचकर कि सब लोग धर्मध्यान करते हैं, तप करते हैं, जप करते हैं। मेरी यही तपस्या है। मुझे किसी तरह अपने बच्चों को संस्कारी बनाना है, इसके लिये मुझे अपने में वे सारे गुण लाने हैं। एक अनपढ़ माँ जब अपने बच्चों को सुसंस्कारी बना सकती है तो मैं पढ़ी लिखी होकर अपने बच्चों को क्यों नहीं संस्कारी बनाऊँ। आज मुझे भी गर्व है कि मेरी तपस्या फलीभूत हुई। मेरे बच्चे संस्कारी हैं। मेरे सासूजी ने अपनी तीन पीढ़ियों को संस्कारी बनाया। मेरी अभी दो पीढ़िया यानी पोते-पोती व दोहिते-दोहिती संस्कारी हैं। संस्कारी बनाने के लिये पहले हर माँ-बाप को अपनी इच्छाओं का त्याग करना पड़ता है। बीज की तरह अपना अस्तित्व खोना पड़ता है। पग-पग पर मन को मारना व समझाना पड़ता है।

बड़ों की छाया शांत-सुहानी तथा मनभावन होती है। बड़ों का साया प्रिय, मधुर, शीतल एवं वात्सल्य से भरा होता है। बड़ों के पास अनुभव का खजाना होता है। बड़ों की छत्रछाया भाग्यशालियों को ही मिलती है। जब बड़े प्यार से बच्चों के सिर पर वात्सल्य भरे हाथ फेरते हैं तो सारे दुःख, चिन्ताएं, तकलीफें व कष्ट गायब हो जाते हैं।

एक ही माँ की कोख से जन्मे, माँ-बाप से संस्कार पाये (मेरे पति के) पांचों भाई एक से बढ़कर एक हैं। वे जिस जगह एवं जिस क्षेत्र में, जहाँ पर गये,

अपना एवं अपने कुल का नाम रोशन किया। आदरणीय श्रीमान् कनकमल जी एवं प्रसन्नमल जी, जिनका अभी कुछ काल पूर्व देहान्त हो गया। दोनों भाई क्या थे- सरलता, सादगी एवं वात्सल्य की मूर्ति ही थे। संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा व भक्ति उनके रोम-रोम में बसी हुई थी। सकारात्मक सोच के धनी, धार्मिक जीवन, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं मधुर स्वभाव, उदार हृदय व पूरे परिवार को एक डोर में बांधकर रखने वाले थे। श्री कनकमल जी वर्षों तक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष व संरक्षक पद पर रहे। वे रोज दस-पन्द्रह सामायिक करते थे। हर चतुर्दशी को उपवास के साथ पौषध एवं अन्य पर्व तिथियों पर एकासन, दया अथवा आयंबिल करते थे। सरलता उनके हृदय में कूट-कूट कर भरी थी। जो भी उनके पास आते वे उनसे क्षमा याचना अवश्य मांगते थे। श्रीमान् प्रसन्नमल जी भी वर्षों तक तमिलनाडू तेरापंथी समाज के अध्यक्ष रहे। 44 वर्ष मेरी शादी को हो गये, पर मैंने दोनों को कभी डाँटना तो क्या ऊँची आवाज में बोलते भी नहीं सुना। वे स्वयं माँ के परम आज्ञाकारी थे। घंटों माँ के पास बैठे रहते। अपने पूरे परिवार को सुख प्रदान करने के लिये दोनों भाइयों ने खूब संघर्ष, त्याग व परिश्रम किया।

मैत्री, प्रेम, करूणा और दया के भंडार थे आप,
ममत्व, अपनत्व व समत्व के दातार थे आप।
आपकी स्मृतियाँ हम भूल न सकेंगे कभी,
शांत, गंभीर और वात्सल्य की मूर्ति थे आप।।

भाई-भाई तथा भाई-बहिन का रिश्ता आज का बना हुआ नहीं, बल्कि अनादिकाल से चला आ रहा है। इतिहास साक्षी है- नंदीवर्धन एवं वर्धमान के प्रगाढ़ प्रेम का। उनके लिये भाई का प्रेम, भाई की आज्ञा, माँ की ममता व पिता के वात्सल्य का मोल, अध्यात्म से कुछ कम नहीं था। जब वर्धमान का निर्वाण हुआ तो नंदीवर्धन की सांसे सूख गई और आंखें आंसुओं का समन्दर बन गई। असीम प्रेम था राम-भरत व लक्ष्मण में। भाई का वियोग असह्य हो गया। महलों में रहकर भी वनवासी सा जीवन जिया। वक्त के साथ-साथ आज जमाने की हवा बदल गई। त्याग के स्थान पर अब स्वार्थ का बोलबाला अधिक दिखाई देता है। निःस्वार्थ प्रेम आज सूख रहा है एवं स्वार्थ हरा-भरा होने लगा है।

इस स्वार्थ भरे संसार में आज भी इन भाई-भाई तथा भाई-बहिनों का निश्चल प्रेम, सहयोग, समर्पण, त्याग व सेवा की भावनाएँ जैसी कहीं-कहीं देखने को मिलती हैं। भाई का, भाई के प्रति इतना स्नेह, जब भी एक भाई को जरा सा कष्ट

हो तो, दूसरा भाई उसे अपना दुःख समझकर हजारों मील से दौड़ा चला आये। जहाँ आज भी यह भाव कि भाई मेरा है। मेरा खून है। भाई का दुःख मेरा दुःख है। भाई की चिंता, मेरी चिंता है। भाई पर आई हुई विपत्ति, मुझ पर आई हुई विपत्ति है जिसे दूर करना मेरा कर्त्तव्य है। मेरी जिम्मेदारी है। आज जहाँ एक ओर मैं, मेरी पत्नी तथा मेरे बच्चों को ही परिवार समझा जाता है। वहाँ कुछ भाई आज भी ऐसे मिल जाते हैं जहाँ पत्नी व बच्चों को गौण करके भाई का महत्त्व अधिक समझा जाता है। जहाँ भाई के लिये रोम-रोम से अपनत्व, स्नेह एवं वात्सल्य की वर्षा होती है।

आदरणीय कनकमल जी व प्रसन्नमल जी दोनों ही ऐसे भाई थे, जिन्होंने स्वयं दुःख सहकर अपने छोटे भाई-बहिनों को मधुरता दी। संघर्ष के समय साथ दिया। संकट के समय सहयोग दिया। वेदना व कष्ट के समय विश्वास बंधाया, ऐसे भाई आज के युग में विरले ही होते हैं। हमारे परिवार में बड़ों से बात नहीं करते, उनके सामने भी नहीं जाते। लेकिन अब जमाने के साथ वे सब भी बदल गये थे। जो पहले मुझे ''बीनणी जी'' कहते, अब सब मुझे प्यार से ''रतन जी'' कहने लगे। जब वे मद्रास के लिये रवाना होते या मैं मद्रास से यहाँ पर आती, तब स्नेह भरे हाथ मेरे सिर पर रखकर वात्सल्य बरसाते रहते। उनकी आँखें बरस पड़ती एवं मुँह से 'खमतखामणा' कहते, इसके आगे वे बोल नहीं पाते, गला रुंध सा जाता। मैं स्वयं अपने आपको भाग्यशाली समझती हूँ कि मैंने सासूजी, सभी जेठसा, भाभीसा, सभी का वात्सल्य पाया तथा मुझसे छोटे भी सब मुझसे स्नेह करते हैं।

मैं आप सभी से यह विनति करना चाहती हूँ, यदि आप भी अपने 'घर-परिवार' में 'अपनों' से स्नेह पाना चाहते हैं तो मेरी एक छोटी सी बात मानिए- अपने 'मैं' को समाप्त कर दीजिये। एक छोटा सा बीज भी जब मिट्टी में मिल कर अपना अस्तित्व समाप्त करता है तो वटवृक्ष का रूप ले लेता है। सोना भी आग में तपकर कुन्दन बन जाता है। पत्थर भी हथौड़े की चोटें खाकर प्रतिमा बन जाता है, फिर हम तो इन्सान हैं। अपने 'मैं' को समाप्त कर बहू से बेटी बन सबके दिल में बस जायें। फिर हमारा घर ही मंदिर बन जायेगा तथा 'तलाक' नामक शब्द हमारे जीवन की डिक्शनरी (शब्दकोष) से निकल जायेगा।

-चोरड़िया भवन, थार हैण्डलूम के सामने
गोल बिल्डिंग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन: 0291-2621454, 94141-34606

बाल-स्तम्भ

आसमान में महल

आचार्य श्री उमेशमुनि जी म.सा. 'अणु'

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जुलाई 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक बार अकबर बादशाह के मन में विचार आया कि धरती पर तो सभी बादशाहों, शाहों, राजा-महाराजाओं ने विविध कलाकृतियों से युक्त महल बनाये हैं। उन विचित्र कलापूर्ण प्रासादों के कारण आज भी उनकी स्मृति जीवन्त है। मैं भी एक ऐसा प्रासाद बनवाऊँ, जिससे मेरी स्मृति-यादगार इतिहास में अमर हो जाए और जनता भी युग-युगों तक मुझे याद करती रहे। 'मैं कैसा महल बनवाऊँ'- इस पर सोचते-सोचते-चिन्तन करते-करते उनके मस्तिष्क में एक विचार कौन्ध गया। तब बीरबल को बुलवाया और कहा-

'बीरबल! युग-युगान्तरों तक इतिहास में मेरा नाम अमर रहे, इसलिये मैं एक ऐसा महल बनवाना चाहता हूँ कि उस महल जैसा न तो भूतकाल में कोई महल बना हो और न ही भविष्य में कोई बना सके। क्यों, तुम्हारा क्या खयाल है?'

'आपका सोचना ठीक है हुजूर! आप आज्ञा करें कि वह प्रासाद कैसा बनवाना है?' बीरबल ने बादशाह के मन की रूपरेखा समझकर पूछा।

'बीरबल! मैं आसमान में एक हवामहल बनवाना चाहता हूँ।' बड़ी ही सहजता से अकबर बोले।

'कहीं आसमान में भी महल बनता है हुजूर!' बीरबल ने बादशाह की

बात पर चकराते हुए कहा।

'क्यों नहीं बन सकता बीरबल? जब धरती पर महल बन सकते हैं, तो फिर आसमान में भी बनने ही चाहिए। तुम्हारे जैसे बुद्धिनिधान मंत्री के रहते हुए कुछ भी असम्भव नहीं है।

'असम्भव ही है बादशाह साहेब।'

'बिल्कुल नहीं है असम्भव तुम्हारे लिये। तुम्हें मेरी यह एक इच्छा अवश्य पूरी करनी ही पड़ेगी।'

'ठीक है हुजूर। सोचूँगा और फिर निवेदन करूँगा।'

'सोचना और निवेदन क्या करना? तुम तो आज ही कार्य प्रारम्भ करवा दो।'- अति उत्सुकता से बादशाह ने कहा।

बीरबल चिन्ता में पड़ गया। फिर कुछ सोचकर कहा-'दो माह का समय दीजिये हुजूर! मैं पहले तैयारी तो कर लूँ। बाद में काम प्रारम्भ करवाऊँगा।'

'ठीक है, ठीक है। गंभीरता से अकबर बोले-'पहले तैयारी कर लो और यदि धन की आवश्यकता पड़े, तो खजाने से ले लेना।'

'जो आज्ञा आपकी।' कहकर बीरबल घर लौट आया।

एक बहेलिये से बीरबल ने पचास तोते खरीद लिये और उन सबको एक पिंजरे में बन्द कर अपनी लड़की से कहा कि-'इनको अलग-अलग विभाग में बाँटकर ये-ये बातें सिखा दो।'

तोता ही एक ऐसा पक्षी है, जो मानव की बोली बोलने में सक्षम है। डेढ़ माह के अन्दर ही बीरबल की पुत्री ने उन तोतों को वे सब बातें सिखा दीं, जो बीरबल ने बतायी थीं। बीरबल बादशाह के पास पहुँचा और बोला- 'चलो हुजूर! काम चालू हो गया! आप भी एक बार देख लीजिये।'

बादशाह खुश हो उठा कि मेरे मन की मुराद अवश्य पूरी होगी। मेरा नाम इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। इस प्रकार अनेक विचार करता हुआ बादशाह अपने सामन्तों, मंत्रियों और दरबारियों को लेकर चल पड़ा शहर से बाहर की ओर, बीरबल द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर। जब सभी एकत्रित हो गए तब बीरबल की पुत्री ने उन सभी तोतों को

छोड़ दिया आसमान में। तोते उड़े और बोलने लगे-'चूना लाओ। रेत लाओ। सीमेन्ट लाओ। इनको मिलाओ। माल तैयार करो। नये कारीगर आये हैं। नया महल बनाएँगे। आकाश-प्रासाद बनाएँगे। जल्दी करो। लाओ चूना लाओ..... ।'

तोतों की आवाज सुनकर बादशाह बोला-'अरे बीरबल! ये क्या नज़ारा है?'

'हुजूर! ये नये कारीगर लोग हैं। आसमान में आपकी कीर्ति अखण्ड बनाये रखने के लिये महल बना रहे हैं।'

'परन्तु ये तो तोते हैं, मनुष्य कहाँ हैं- जो महल बनाने की कला जानते हैं?'- बादशाह बोले।

'आसमान में महल तो आसमान में उड़ने वाले बना सकते हैं जहाँपनाह! मनुष्य नहीं। क्योंकि मनुष्य तो धरती पर रहते हैं। इसलिये वे धरती पर ही महल बना सकते हैं- निर्माण कर सकते हैं। जब वे उड़ नहीं सकते हैं, तब फिर आसमान में महल वे कैसे बना सकते हैं? अतएव मैंने ऐसे कारीगरों को नियुक्त किया है जो आसमान में उड़ सकते हैं।' बीरबल ने नम्रतापूर्वक बादशाह से निवेदन किया।

'तू मुझे मूर्ख बनाना चाहता है, किन्तु मैं मूर्ख नहीं हूँ समझा! बन्द कर यह तमाशा। मुझे नहीं बनवाना आसमान में महल।'

-'जो हुक्म जहाँपनाह का!' बीरबल तो यही चाहता था कि बादशाह अपने इस सनक भरे आदेश-आज्ञा को निरस्त करे, क्योंकि कभी आसमान में हवा-महल नहीं बना करते हैं।

भाइयों! बात बीरबल की सत्य ही है कि आसमान में महल कभी नहीं बनते। हाँ, हवाईजहाज, हेलीकॉप्टर, रॉकेट आदि तो उड़ाये जा सकते हैं- स्थायी निर्माण नहीं किया जा सकता है। इसी तरह आप लोग भी यह बात ध्यान में रखें कि 'आप जो लक्ष्य बनाएँ, वह हवामहल सा कल्पना-मात्र ही न हो अपितु ठोस हो, जो जीवन को सार्थकता दे सके।' साधकों का एक ही ठोस लक्ष्य होता है-मोक्ष! इस लक्ष्य को इसी मनुष्य भवरूपी धरती पर साधना रूपी क्रिया से प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु यहाँ पर तो यह बात चिन्तन योग्य है कि आप चाहते कुछ और हैं तथा करते कुछ और हैं।

आप भावना तो करते हैं कि सुख मिले, किन्तु जो सुख का राजमार्ग है उस पर नहीं चलते हैं, तब सुख कहाँ और कैसे मिलेगा? जहाँ सुख है, वहाँ खोजें तो ही सुख मिलेगा। उस राह पर कदम बढ़ाओगे, सम्यक् पुरुषार्थ करोगे, तब ही वास्तविकता को उपलब्ध होओगे।

-"श्री अन्तगडदसा सुत्त के संदेश" से साभार

प्रश्न:

1. प्राचीन काल में बादशाह भविष्य में अपनी स्मृति को अमर रखने के लिए क्या करते थे?
2. कैसे मंत्री के लिए कुछ भी असम्भव नहीं होता है?
3. बीरबल ने अकबर को कैसे सन्तुष्ट किया?
4. 'राजा' के लिए इस कथा में किन-किन शब्दों का प्रयोग किया गया है?
5. आपका लक्ष्य कैसा होना चाहिये?
6. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताइये-प्रासाद, अमर, मुराद, निरस्त, बुद्धिनिधान।
7. तोते की विशेषताएँ बताइए।

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-2010] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'मयूरी के अण्डे' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 38 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	अर्पित जैन-जोधपुर	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	सुनयना गेलड़ा-बोरावड़	19.25
तृतीय पुरस्कार-150/-	दीप्ति जैन-कोटा	18.5
सान्त्वना पुरस्कार-100/-	रितिका मेहता-जोधपुर	18
	रूपमाला छाजेड़-समदड़ी	18
	खुशबु जैन-हैदराबाद	18
	ऋषभ जैन-हिण्डौनसिटी	18
	श्रीकान्त सुराणा-गंगाशहर	18

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (25) का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी, 2010 अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (25) में 300 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के जनवरी से मार्च, 2010 के अंकों पर आधारित थी। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार है-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	बाबूलाल कटारिया-हैदराबाद	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	मधुबाला ओस्तवाल-नासिक	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	मंजुला वसंतकुमार जैन-भायंदर	(50)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

दर्शिका टाटिया-जलगांव	(50)	सरोज रूणवाल-धुले	(50)
उषा बरड़िया-धुले	(49)	जयसिंह छाजेड़-समदड़ी	(49)
पुखराज सेठिया-मसूदा	(49)	पी. इन्द्रा बाई पोखरना-चिदंबरम्	(49)
विमला जी बरडिया-बोदवड़	(49)	मंजू श्री सुराणा-जोधपुर	(49)
कल्पना धाकड़-गुडगाँव	(49)	बसंती भटवेरा-धुलिया	(49)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	निर्मला राजेन्द्र बोरा-इचलकरंजी	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	हेमलता कोठारी-धुले	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	शिल्पा जैन-शंभूपुरा	(49)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

प्रतीक्षा सालेचा-जोधपुर	(49)	दिव्या आंचलिया-धुले	(49)
अरूणा फिरोदिया-भंडारा	(49)	रजनी जैन-सवाईमाधोपुर	(49)
उपमा चौधरी-अजमेर	(49)	नीतू जैन-लुधियाना	(49)
रूपल जैन-भीलवाड़ा	(49)	मोनिका देशलहरा-सिकंदराबाद	(49)
सोनू जैन-होशियारपुर	(49)	आशी कवाड़-पाली	(49)

49 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:-गणपत सुराणा-जोधपुर, अल्फा सुराणा-जोधपुर, शोभा सागरमल कोठारी-धुले, राजुल कोठारी-धुले, रमन लाल छाजेड़-धुले, प्रमिला पोखरणा-धुलिया, पुष्पा

जैन–पाली, निर्मला बाफना–जोधपुर, मुन्नालाल भण्डारी–जोधपुर, मंजुला जैन–भीलवाड़ा, कमला सेठिया–मसूदा, रौनक नागौरी–उदयपुर, प्रकाश सालेचा–जोधपुर, अमित जैन–धुले, क्षितिज जैन–सवाईमाधोपुर, दीप्ति जैन–कोटा, श्वेता लोढ़ा–दुर्ग, गौरव जैन–कोटा, श्वेता जैन–कोटा, लता आंचलिया–धुले, पंकज गांग–जोधपुर, रागिनी जैन–सवाईमाधोपुर, सुनीता बोर्दिया–उदयपुर, सिद्धि बाफना–जोधपुर, ईशिता जैन–होशियारपुर, मोनिका गोलेछा–ब्यावर, समता ललवानी–सिकंदराबाद।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- लीला देवी मेहता–पीपाड़, गुणमाला जैन–सैथी, अनीता रांका–अजमेर, अनीता पी. जैन–नासिक, ओमप्रकाश बारेठ–लालपुरा, अशोक सिंघवी–सूरत, आशा अग्रवाल–जयपुर, अनिल कुमार जैन–कोटा, अश्विनी दुग्गड़–धुले, नवकार लुणावत–पांचला सिद्धा, नोरतमल चंगेरिया–अजमेर, चुकी देवी दरड़ा–जोधपुर, वीरेन्द्र कुम्भट–जोधपुर, देवेन्द्रनाथ मोदी–जोधपुर, स्नेहलता पी. शाह–बेलगाम, सुनीता जैन–मुकटी, सुरेशचंद जैन–खेरली, सुरेश मुणोत–भंडारा, सुमिता आय. वोरा–धुलिया, सुखराज दरड़ा–जोधपुर, सुधा डागा–बीकानेर, सुधा संचेती–मसूदा, सौ. अश्विनी आनंद जी जैन–जालना, सौ. सुशीला रांका–जलगांव, सौ. सरला कांकरिया–जलगांव, सौ. कलावती चौरड़िया–जलगांव, शोभा कोठारी–धुले, शशिकला गांधी–जोधपुर, शशि जैन (गुगल्या)–ग्वालियर, रतनलाल रांका–अजमेर, रत्नमाला जैन–बुरहानपुर, राज जैन–जबलपुर, प्रेमलता चौधरी–भीलवाड़ा, प्रवीणचन्द जैन–हिंडौन, प्रवीण जी बरड़िया–धुले, प्रकाशचंद कोठारी–ब्यावर, पुष्पा गोलेच्छा–ब्यावर, पुष्पा तातेड़–धुले, पुष्पा मेहता–पीपाड़, पदमचंद मुणोत–जयपुर, पदमा एस. मुणोत–भंडारा, पारसमल रतन बोहरा–बालोद, पारसमल बाघमार–बालोतरा, हेमराज सुराणा–जयपुर, हीरा रमेश जी कर्णावट–अहमदनगर, निशा लुंकड–कोटा, निर्मला सुराणा–बीकानेर, चित्रा डागा–बूँदी, विजयमल मेहता–जोधपुर, विनिता जैन–सवाईमाधोपुर, विमला मादरेचा–भीलवाड़ा, विमला बाई खींवसरा–धुले, विमला एन. मेहता–जोधपुर, किरण कुम्भट–जोधपुर, मयूरी एस. जैन–धुलिया, कोमल पी. जैन–धुले, कोमल कोठारी–बड़ौदा, कविता कांकरिया–पुणे, बाबूलाल जैन–भरतपुर, इन्दरचंद गांधी–जोधपुर, युगल रांका–, धर्मेन्द्र जैन–सवाईमाधोपुर, एम. के. जैन–खेरली, राहुल कुम्भट–जोधपुर, दीप्ति भंडारी–जोधपुर, सुनीता कुम्भट–ब्यावर, संगीता जैन–जोधपुर, रचना भंडारी–जोधपुर, उज्ज्वला राकेश जैन–जोधपुर, सीमा जैन–सवाईमाधोपुर, पूर्णिमा गांधी–जोधपुर, शिल्पा गांधी–जोधपुर, गरिमा जैन–कोटा, उर्मिला कांकरिया–जोधपुर, पंकज गोलेछा–जयपुर, चंचल गोलेछा–जयपुर, विपुल जैन–जोधपुर, मीना मेहता–पीपाड़, अंतिमा डोसी–अजमेर, इन्द्रा सालेचा–जोधपुर, शैली कुम्भट–जोधपुर, मीनाक्षी जैन–भंडारा, अजयकुमार भंडारी–अहमदाबाद, संजयकुमार भंडारी–अहमदाबाद, रानु पालरेचा–धनोप, श्वेता वेदमूथा–नासिक, मंगलाबाई सिंघवी–शिवनगर, शीतल संदेश बंब–लासुर स्टेशन,, विशाल जैन–पाली, नेहा जैन–कुण्डेरा, कु. मयूरी गोगड़–सौंदत्ती, दिया गोगड़–बेल्होंगल, अक्षिता जैन–जोधपुर, ललिता जैन–हैदराबाद, गौरव जैन–जयपुर, कृति जैन–जयपुर, निर्मला जैन–अलवर, प्रकाशचंद गादिया–हैदराबाद, मयंक लुंकड़–कोटा, नीरा भंडारी–अजमेर, दीपिका वया–बम्बोरा, उषा जैन–कोटा, पुष्पा लुणावत–पांचलासिद्धा, खुशी लुणावत–पांचलासिद्धा, अरूणा कटारिया–पाली, नमन कवाड़–पाली, पल्केश कटारिया–पाली, शोभा कवाड़–पाली, संगीता दरड़ा–जोधपुर।

47 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-आशा जैन–सवाईमाधोपुर, अरूण कुमार भंडारी–अहमदाबाद, नेणचंद बाफना–जोधपुर, चंदनमल पालरेचा–जोधपुर, श्वेता जैन–जयपुर, उमेशकुमार जैन–बीकानेर, सुनीता नवलखा–कोटा, सुनीता मेहता–जोधपुर, सुशीला सेठिया–धनारीकला, सौ. जवेर नरेन्द्र शाह–बेलगांव, सरोज नाहर–दिल्ली, सीमा जैन–कोटा, रेणु बोहरा–दिल्ली, राजदुलारी सेठ–जयपुर, राहुल छाजेड़–मुकटी, प्रीति मोदी–नीमच, हेमलता जैन–कुशतला, विद्या संघवी–बदनावर, मनीषा गोगड़–बेल्होंगल, मंजू जैन–जयपुर, मंजू कांस्टिया–कोलकाता, मधु सिंघवी–कोलकाता, कांता भंडारी–अहमदाबाद, कमलेश गेलड़ा–अजमेर, कंचल लोढ़ा–नासिक, धनी देवी रांका–गंगाशहर, ए. शांतिलाल जैन–पाली, संगीता जैन–कुश्तला, रुचिका लुणावत–जोधपुर, प्रियल चौधरी–अहमदाबाद, खुशबू कांकरिया–जोधपुर, राकेश कांकरिया–जोधपुर, माधुरी जैन–बूँदी, शशि रतन बोहरा–बालोद, ज्योति ताथेड़–धुले, कमला धारीवाल–पाली, निखिल धारीवाल–पाली, रोहन लुणावत–आचीणा, यश जैन–आचीणा, विमलचंद चोरडिया–पीपाड़, जयमाला कांकरिया–पाली, सुनीता जैन–हिंडौन, वंदना पूनमिया–पाली, ऋषभ जैन–इन्द्रगढ़, सुमेरगंज मंडी, रीमा जैन–लुधियाना, सोनाली वेदमूथा–धुले, आरती जैन–होशियारपुर, सुमत जैन–हिंडौन, चांदनी मेहता–पीपाड़।

46 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-अनिल कुमार शाह–उज्जैन, नवीन जैन–जयपुर, नीतू जैन–बूँदी, दीपेन्द्र सिंघवी–पाली, सुनीता लुणावत–आचीणा, सुनीता दुसाज–जयपुर, सुनीता कांकरिया–अहमदाबाद, शांतिलाल महात्मा–सेंती, राजकुमारी लोढ़ा–जयपुर, पुष्पा डुंगरिया–नई दिल्ली, पदम कुमार

मुणोत–विजयनगर, पारसचंद जैन–भरतपुर, निक्की जैन–कुण्डेरा, तिलोकचंद जैन–आचीणा, पिस्ता गोलेच्छा–जयपुर, मिथुन सेठिया–धनारीकला, मोहनलाल जैन–अजमेर, मीना चोरडिया–चैन्नई, कमलेश नाहर–जोधपुर, कंचनबाई बंब–लासुर, कंवलराज मेहता–जोधपुर, बसंती गांधी–चन्द्रपुर, संगीता खाबिया–मैसूर, प्रमिला कांकरिया–जोधपुर, भूपेन्द्र सुराणा–नागौर, आयुषी जैन–आचीणा, गजेन्द्र चौपड़ा–जोधपुर, सुनीता चौपड़ा–जोधपुर, श्रोता जैन–हिंडौन, प्रियंका जैन–जयपुर।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (25) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1. मिथ्यात्व	फरवरी/18	2. सर्वजन	मार्च/22
3. मोफतराज जी मुणोत	जनवरी/19	4. सेवा	मार्च/41
5. अरिहंत	फरवरी/17	6. वीतराग वाणी	मार्च/11
7. नमिराज	फरवरी/8	8. शील	मार्च/15
9. मुद्रा	मार्च/36	10. जिनवाणी	जनवरी/81
11. मीनाक्षी	फरवरी/69	12. पोकायोके	जनवरी/63
13. हस्ती	मार्च/25	14. सम्यग्दर्शन	फरवरी/21
15. नारी	मार्च/111	16. संल्लेखना	फरवरी/30
17. दीक्षा	मार्च/81	18. समण	मार्च/5
19. सम्पदा	फरवरी/35	20. दर्पण	जनवरी/92
21. आराधन	मार्च/28	22. अनन्त	फरवरी/30
23. अखिल	जनवरी/68	24. अशान्ति	फरवरी/25
25. अभ्युदय	मार्च/34	26. ज्ञातपुत्र	मार्च/7
27. सम्यक् दर्शन	फरवरी/53	28. स्वाध्याय	जनवरी/15
29. काश्यप	जनवरी/70	30. गुरु	जनवरी/92
31. 3	फरवरी/19	32. 10	जनवरी/62
33. 18	जनवरी/50	34. 2	मार्च/3
35. 3	जनवरी/21	36. 70	मार्च/65
37. 4	जनवरी/77	38. 6	मार्च/6
39. 5	फरवरी/66	40. 4	जनवरी/9
41. हां	जनवरी/77	42. नहीं	फरवरी/5
43. नहीं	मार्च/34	44. हां	जनवरी/55
45. नहीं	फरवरी/30	46. नहीं	जनवरी/66
47. हां	जनवरी/49	48. हां	फरवरी/11
49. नहीं	मार्च/59	50. नहीं	मार्च/52

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (6)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह छठी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जुलाई 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 291 से 350 तक से प्रश्न)

(अ) किसने किसको कहा-

1. मातेश्वरी! मेरे पिता कौन है और कहाँ हैं?
2. मैं अपना तीसरा चरण कहाँ रखूँ?
3. तेरा स्वामी सेना लेकर आ रहा है तो उसे आने दो।
4. तुम फूट-फूट कर क्यों रो रही हो?
5. मेरा बाहुबल ही मेरे कुल का परिचय देगा।
6. कांसी की पेटी ही इसकी माँ है।

(आ) रिक्त स्थान की पूर्ति 'स' अक्षर से कीजिए-

7. उस समय कार्तवीर्य.......की रानी तारा गर्भिणी थी।
8. राजन्! पल्लीपति.........सीमावासियों को लूट कर आतंक जमा रखा है।

9. यह तापस........हैं?

10. प्रत्येक.........अपने दुष्कृत पर लज्जित होता है।

11. वहाँ..........ने दो युगल पुत्रों को जन्म दिया।

12. ....बड़े न्यायशील एवं प्रजावत्सल राजा हुए।

(इ) अंकों में उत्तर दीजिये-

13. राजन्! तुम्हारी........पुत्रियों में से एक राजकन्या मुझे दो।

14. नेमिनाथ जी.........वर्ष तक राज्य का पालन किया।

15. देव! कृपा कर इस........वें गर्भ की रक्षा करना।

16. वसुदेव अपनी.........रानियों के साथ सोरियपुर पहुँचे।

17. सुभूम ने पृथ्वी को..........बार ब्राह्मण विहीन बना दिया।

18. मुनि सुव्रतजी की पूर्ण आयु...........वर्ष की थी।

(ई) जोड़ी मिलान कीजिए-

19. पायस	-	भामर
20. चम्पानगरी	-	शौर्यपुर
21. विष्णु कुमार	-	नैमित्तिक
22. भेद-नीति	-	खीर
23. मथुरा	-	राजा सुरश्रेष्ठ
24. भानु	-	नमुचि
25. कोष्टुकी	-	छल-प्रपञ्च

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (4) का परिणाम

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती उपमा मोहित जी चौधरी-अजमेर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती सुनीता विनोद जी कांकरिया-अहमदाबाद(गुजरात)

तृतीय पुरस्कार-श्रीमती पदमा रमेश जी बोहरा-रायचूर (कर्नाटक)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्रीमती मंजुला वंसत कुमार जैन, भायंदर (W)-ठाणे-मुम्बई (महा.)
2. श्री नथमल कोठारी-बालोद-दुर्ग (छत्तीसगढ़)
3. श्रीमती कुसुम परेश जी पुनामिया-इचलकंर जी (महा.)
4. श्री बाबुलाल जी कटारिया-हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
5. श्रीमती रीमा दिनेश जी जैन-लुधियाना (पंजाब)

संवाद (28)

माह मई-2010 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर यहाँ प्रकाशित किए जा रहे हैं-

प्रश्न-क्या यह सच नहीं है कि मानव प्रजाति बिल्कुल अलग है। मनुष्य में मन, बुद्धि, संस्कार हैं, उसे पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ, कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान है, परन्तु मनुष्य के अलावा अन्य जीवों में क्या यह सब नहीं होता?

- एम.सी. नवलखा, जयपुर (राज.)

पुष्पा मेहता, पीपाड़- मानव में मन, बुद्धि व संस्कार है उसे पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ, कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान है, ये सभी बातें दूसरी योनियों में भी पाई जाती हैं, परन्तु मानव में ये बातें विशेषताएँ लिए हुए हैं। मानव अपनी बुद्धि का उपयोग शुभ कार्यों में करता है, मन में शुभ भाव रखता है तथा पुण्य के योग से अशुभ से हटकर शुभ योगों में प्रवृत्त होता है। जब आत्मा अशुभ से हटकर शुभ में प्रवृत्त होती है तब वह मोक्ष के नजदीक हो जाती है। मोक्ष में जाने का मात्र मानव ही अधिकारी है, सर्वार्थसिद्ध विमान से सिद्धशिला मात्र बारह योजन ही दूर है, फिर भी देव वहाँ नहीं जा सकते हैं। मनुष्य अपने कर्मों को काटकर अविग्रह गति से मात्र एक समय में सिद्धशिला पर पहुँच जाता है। मनुष्य गति को छोड़कर तीन गतियों में जीव असंख्यात बार परिभ्रमण करता है उसके बाद अनन्त पुण्यवानी का योग मिलने पर दुर्लभ मानव भव को प्राप्त करता है। अतः मानव प्रजाति इस विशेषता के कारण नारक, तिर्यञ्च और देव से अलग है।

मानव मन व बुद्धि का सदुपयोग करता है, लेकिन दूसरे जीव चाहते हुए भी कुछ नहीं कर सकते क्योंकि नारकी जीव दुःखों में लीन होते हैं, तिर्यन्च प्राणी पराधीन होते हैं व देव भोगों में लीन होते हैं, परन्तु मानव स्वाधीन होता है। मानव अपनी इच्छानुसार हर कार्य करने में स्वतन्त्र है।

असन्नी प्राणियों में तो मन व बुद्धि नहीं होने से वे पुण्य, पापादि को नहीं समझ सकते हैं। एकेन्द्रिय प्राणियों में अव्यक्त चेतना होती है। मानव जन्म ही एक ऐसा साधन है जिससे आत्मा परमात्मा बन सकती है। अन्य योनियाँ मात्र चौरासी के चक्कर को पूरा करने के लिए हैं।

वैसे तो नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव सभी दण्ड भोगने के स्थान हैं। मानव भव में यह विशेष बात है कि यहाँ आकर सदा-सदा के लिए दण्ड भोगने से छुटकारा मिल सकता है। अतः सभी योनियों में मन, बुद्धि व संस्कार होते हुए भी मानव एक विकासशील प्राणी होने के कारण सभी प्रजातियों से अलग है।

(नोट :-नया प्रश्न पृ. 32 पर देखें।)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

प्रश्नव्याकरण सूत्र (भाग-1)- अनुवादक-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) दुरभाष-0141-2575997, फैक्स : 0141-2570753, ***पृष्ठ***- 32+344, ***मूल्य*** 45 रुपये, ***द्वितीय संस्करण*** - 2010

प्रश्नव्याकरण के प्रथम श्रुतस्कन्ध में हिंसा, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन एवं परिग्रह नामक पाँच आस्रवों का विस्तृत एवं महत्त्वपूर्ण विवेचन है। लगभग 60 वर्ष पूर्व आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज द्वारा प्रश्नव्याकरण सूत्र की संस्कृत छाया एवं शब्दार्थ के साथ भाषाटीका की गई थी, जो विक्रम संवत् 2006 में प्रकाशित हुई थी। उसी प्रश्नव्याकरण का यह नवीन संस्करण अधिक उपयोगी रूप में प्रस्तुत हुआ है। इस संस्करण में मूल पाठ, संस्कृत छाया, शब्दार्थ के साथ भावार्थ एवं विवेचन को योजित किया गया है। यथाप्रसंग आवश्यक स्पष्टीकरण दिए गए हैं। पूर्व संस्करण जहाँ विद्वद्भोग्य था वहाँ यह संस्करण सर्वविध पाठकों के लिए उपयोगी हो गया है। इस कार्य का सम्पादन सौ. मंगला जी चोरडिया एवं सुश्री नेहा जी चोरडिया, जलगांव ने गुरु भगवन्तों के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। आशा है यह संस्करण पाठकों को प्रश्नव्याकरण सूत्र का मर्म समझने में सहायक सिद्ध होगा।

संस्कार- डॉ. साध्वी चिन्मय श्री, ***प्रकाशक***- श्री वीर संघ, 61 हीराभाई मार्केट, अहमदाबाद-22, ***पृष्ठ***-17+131 (आर्ट पेपर बड़ा आकार), ***मूल्य***- 299 रुपये, ***संस्करण***- 2010

बालकों में संस्कारों का बीजारोपण करने की दृष्टि से 'संस्कार' एक उत्तम पुस्तक है। इसमें न केवल बालपीढ़ी में अपितु युवापीढ़ी एवं बड़ों में भी सहज रीति से संस्कारों का वपन कर उन्हें सुदृढ़ बनाने की मनोवैज्ञानिक विधि अपनाई गई है। खाना-पीना, चलना-फिरना, उठना-बैठना किस प्रकार हो, पृथ्वी, जल, पावर, पवन एवं वनस्पति की संरक्षा हमारे आचरण से किस प्रकार हो, हमारा व्यवहार दूसरों के साथ किस प्रकार अच्छा हो आदि विभिन्न पक्षों पर चित्रों के साथ हृदयग्राही शैली में सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। पुस्तक जितनी कलात्मक है उतनी ही रचनात्मक भी। यह पुस्तक प्रत्येक परिवार में पढ़ी जाए। बच्चों को एवं बड़ों को भी यह पुस्तक अवश्य प्रभावित करेगी।

आचार्य हस्ती जन्मशती

ग्रीष्मकालीन 32 शिविरों में संस्कारों का बीजारोपण

श्री जितेन्द्र डागा

जयपुर एवं जोधपुर में तो प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर आयोजित होते ही हैं, किन्तु इस वर्ष राजस्थान के मारवाड़, पोरवाल एवं पल्लीवाल क्षेत्रों में 21 मई से 6 जून 2010 तक 32 स्थानों पर संस्कार-निर्माण के प्रयोजन से धार्मिक शिविरों का आयोजन हुआ, जो आशातीत रूप से सफल रहे हैं। शिविर में लगभग 2800 बच्चों ने लाभ लिया है। इन शिविरों का संयोजन हांगकांग युवक मंडल के सहयोग से श्री जितेन्द्र जी डागा ने पूर्ण कौशल के साथ सम्पादित किया है। शिविरों का समय प्रातः 7 से 9 बजे तक रहा। शिविर प्रभारी श्री जितेन्द्र जी डागा के अनुभव यहां प्रस्तुत हैं। **-सम्पादक**

युग पुरुष आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एक ऐसे महान् साधक थे जिनकी रग-रग से धर्म तत्त्व प्रस्फुटित होता था। ऐसे महानायक की जन्म शताब्दी पर पंच परमेष्ठी के प्रथम दो पद एवं अन्तिम दो पद के सेतु रूप; आचार्य भगवन्तों के लिए टीकाकारों के अभिमत (अरिहंत की अनुपस्थिति में आचार्य अरिहंत समकक्ष होते है) के साकार रूप आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं जिन नहीं पर जिन सरीखे उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रभावक ओजस्वी आभामंडल से जिनशासन की गौरवमयी पृष्ठभूमि पर एक के पश्चात् एक स्वर्णिम अध्याय जुड़ते चले जा रहे हैं।

इस कड़ी में प्रबुद्ध चिन्तकों द्वारा शताब्दी वर्ष में 100 शिविर लगाने की जब बात रखी गई तो राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन शिविरों के आयोजन की बात धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी एवं विगत 18 वर्षों से जयपुर एवं जोधपुर में चल रहे शिविरों को मॉडल रूप रख कार्य योजना को आगे बढ़ाने हेतु अनुभवी एवं दृढ़ निश्चयी श्रावक मजबूती के साथ प्रयासरत हो गये।

माह दिसम्बर 2009 अहमदाबाद से पालनपुर की ओर विहार करते हुए ग्रामानुग्राम विचरते आचार्य भगवन्त गुजरात के एक सरसब्ज गाँव में विराज

रहे थे। दर्शनार्थ भगवन्त की सेवा में पहुँचे एवं शिविरों की रूप रेखा रखी। भगवन्त ने भावी पीढ़ी में उज्ज्वल संस्कारों के बीजारोपण हेतु ऐसे शिविरों की उपयोगिता बताते हुए प्रेरणास्पद वचन कहे एवं परम कृपा कर इस ओर आगे बढ़ने का संकेत दिया। उनका संकेत हमारे लिये निधि था, आदेश था।

विभिन्न क्षेत्रों का चयन हुआ। फिर सुश्रावक अशोक जी सेठ के परामर्शानुसार चार विभिन्न सम्भाग बनाए गए। जिससे कार्य सुविधाजनक सुचारू रूप से आगे बढ़ सके।

शिविरों के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु, कार्य योजना समझाने हेतु माह मार्च में हम सर्वप्रथम सवाईमाधोपुर क्षेत्र गये। आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के गुणानुवाद करते हुए जब सम्पूर्ण बात श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष रखी तो भक्ति से निर्झर, पूज्य गुरुदेव के प्रति असीम श्रद्धा रखने वाले उन श्रावकों ने सहज इस कार्य को पूरा करने का संकल्प लिया। फिर पल्लीवाल क्षेत्र में गंजखेरली गये जहाँ दीक्षार्थी अभिनन्दन था, महासती श्री सौभाग्यवती जी के प्रभावी उद्बोधन से सभा अभिभूत थी ही, फिर गुरुओं के गुणगान के साथ शिविरों की बात रखी गयी तो जो सोचकर गए उससे कहीं अधिक सफलता प्राप्त हुई। तृतीय दौर में दूदू, किशनगढ़, अजमेर गये। फिर मेड़ता गए जहाँ नागौर, गोटन, भोपालगढ़, पीपाड़सिटी के गणमान्य लोग पधारे एवं सभी ने सहमति देकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया।

श्री गौतम जी जैन (पचाला वाले) का यह सुझाव कि शिविरों में अब तक शिक्षक अधिक होते है एवं विद्यार्थी कम। इस हेतु रजिस्ट्रेशन फार्म भरवाए जाने चाहिए। जिससे समय पर शिविरार्थी पहुँच सकें। माहौल बनाने हेतु यह सुझाव उपयोगी सिद्ध हुआ। जहाँ अनुमान 32 क्षेत्रों में 1300-1500 का था वहाँ अब अनुमान 1500-2000 का किया जाने लगा।

महुवा-पल्लीवाल क्षेत्र में श्री अशोक चन्द जी जहाँ शिविर लगाने को हिचकिचा रहे थे; कहने लगे कि चिन्ता मत करो अब पुनीत कार्य का परमच लहरेगा। वहाँ 40 शिविरार्थी अध्ययन कर रहे है। नदबई के श्री नरेशचन्द जी जैन जिनका शिविरों को सुगम बनाने हेतु अद्वितीय सहयोग रहा है, वे (सिरस) में लग रहे शिविर की वजह से 15-20 छात्र ही अनुमानित कर रहे थे, वहाँ मनीष जी, दिनेश जी, पंकज जी आदि युवकों के प्रयासों से मिनी कोटा नदबई में आज 75

की संख्या है एवं अध्ययन की व्यवस्था प्रशंसनीय है। गंगापुरसिटी में 15-20 छात्रों की बात प्राथमिक जानकारी में की गयी, पर पवन कुमार जी, नवीन जी, शीतल जी, सोनू जी एवं समस्त कार्यकर्त्ताओं के प्रयासों से आज यह संख्या 110 है। खेरलीगंज में मनीष जी, मनोज जी, प्रवीण कुमार जी आदि सभी के प्रयासों से 135 की संख्या आज है। अलवर जहाँ सामान पहुँचा तो सुव्यवस्थित उपयोगी सामग्री को देख स्वयं अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द जी पालावत, योगेश जी सम्पूर्ण कार्यकारिणी के साथ लग गए एवं कहने लगे इस तरह का शिविर लगता है तो क्यों नहीं 10 साल पहले से ही आप लोग आ गये ? हम तो अब हर साल लगाऐंगे। मण्डावर में श्री अशोक जी जैन कहने लगे जब सुबह सभी शिविरार्थी सामायिक के परिधान में एक साथ बैठते हैं तो गुरुकुल सा माहौल लगता है। वहाँ 60 की संख्या है। खोह, हरसाना, भरतपुर सभी जगह अध्ययन की सुचारू व्यवस्था रही एवं क्रमश वहाँ, 25, 55, 60 की संख्या निरन्तर बनी हुई है। हिण्डौन में राकेश जी जैन, राहुल जी, मूलचन्द जी, सुमतचन्द जी, कपूरचन्द जी जैन आदि के प्रयासों से 160 की संख्या है।

पोरवाल क्षेत्र में रवीन्द्र जी जैन, आलनपुर वाले त्रिलोकचन्द जी जैन, गौतम जी पचाला वाले, मुकेश जी जैन, लल्लूलाल जी आदि के जमीनी प्रयासों ने कार्यक्रम में जान फूँक दी। सुबाहु कुमार जी एवं कुशलचन्द जी गोटेवाला भी साथ में जुड़ गए। श्री गोटेवाला जी ने समय-समय पर महत्त्वपूर्ण सुझाव भी दिये। परिणति यह हुई कि देई जहाँ शिविर लगने की सम्भावना क्षीण हो गयी थी वहाँ श्रीमती उर्मिला जी जैन, श्री रामपाल जी जैन, श्री ताराचन्द जी जैन के अथक प्रयासों से 65 की संख्या है एवं प्रेरक माहौल बना हुआ है।

कोटा में मात्र 52 छात्रों का अनुमान था, पर श्री हनुमान प्रसाद जी के नेतृत्व में प्रेमचन्द जी, बाबूलाल जी, प्रकाशचन्द जी के प्रयासों से एवं त्रिलोकचन्द जी जैन, जयपुर के वहाँ शिविर में प्रथम दिन पहुँचने से ऐसा माहौल बना कि यह संख्या 117 तक निरन्तर बनी हुयी है। युवक संघ के प्रयासों से अलीगढ़-रामपुरा में संख्या 135 है एवं श्राविकाएँ भी अध्ययन में पूर्ण जागरूक एवं उत्साहित हैं। बजरिया में तो अध्यक्ष एवं गणपत लाल जी जैन अपनी कार्यकारिणी एवं युवक मंडल के साथ पूर्ण सक्रिय है एवं संख्या 110 की है। शहर सवाईमाधोपुर थोड़ा देर से जगा, पर जगा तो ऐसा कि 135-140 की

संख्या निरन्तर बनी हुयी है। आलनपुर, आवासन मंडल, कुशतला, सुमेरगंजमंडी में क्रमश; 80, 75, 55, 45 की संख्या के समाचार है। श्री भैरूलाल जी, श्रीमती हर्षदेवी जी के सत्प्रयासों से चौथ का बरवाड़ा में भी शिविरार्थियों की संख्या 70 से ऊपर हो गयी।

दूदू इकरंगा क्षेत्र है। यहाँ 25 घरों की बस्ती में श्री विनोद जी मेहता, प्रमिला जी मेहता एवं सभी के प्रयासों से 50 की संख्या निरन्तर बनी हुयी है। विनोद जी मेहता व समस्त दूदू क्षेत्र की आत्मीयता एवं दबंगता तो वैसे भी जग प्रसिद्ध है।

किशनगढ़ जब भी जाते हैं तब कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। वहां के सुश्रावक श्री महेन्द्र जी जामड़, राजेन्द्र जी डांगी, युवारत्न मेहता जी, अध्यक्ष सुरेन्द्र जी सुकलेचा एवं प्रबुद्ध श्राविकाएँ अनुशासित एवं व्यवस्थित रूप से अध्ययन करा रहे हैं वह अनुकरणीय है। वहाँ संख्या 117 की है।

अजमेर जहाँ हम शुरूआत में गये तो बहुत उत्साहित नहीं थे। गुरुदेव एवं महासती श्री संतोषकँवर जी म.सा. की परमकृपा से श्री नेमीचन्द जी कटारिया, श्री पारसमल जी रांका, श्री जीतमल जी कोठारी, श्री रमेश जी सिंघी, श्री महेन्द्र जी कोठारी, श्रीमती ममता जी भंडारी, श्रीमती नीलम जी जैन आदि के भागीरथी प्रयासों से महावीर नगर में 110 एवं वैशाली नगर में 45 की संख्या है। अध्ययन सुचारू रूप से निराबाध चल रहा है। ब्यावर में 90 शिविरार्थियों की संख्या रही।

मारवाड़ तो मारवाड़ है। भक्ति का वेग जो यहाँ देखने को मिला, निश्चय ही वह अनुकरणीय है। कल्पेश जी लोढ़ा ने नरेश जी जैन नदबई की भाँति पेम्पलेट में अपने स्थान पर, दूसरे को शिविर कार्य में जोड़ने के लिए अन्य नाम देने की बात कही तो उनके विचारों एवं आत्मविश्वास के प्रति सम्मान बढ़ गया। सुरेश जी गांग, विपिन जी जलोटा आदि 20-25 सुदृढ़ कार्यकर्त्ताओं ने तो पाली में शिविरों के प्रति अपार उत्साह बना दिया। कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेच्छा का सहयोग उन्हें सदा मिला। गोलेच्छा जी की वाणी-कुशलता एवं समझ से विपरीत परिस्थितियों में हमें भी सम्बल मिला। पाली में संख्या 335 तक पहुँची एवं अभी 250-300 की निरन्तर बनी हुई है।

गुरुदेव की जन्म-स्थली पीपाड़सिटी के विषय में तो कहना ही क्या?

परेश जी मूथा, महेन्द्र जी चौधरी, श्रेणिक जी कटारिया, पुनीत जी, नमन जी मेहता आदि के अथक समर्पित प्रयासों से वहाँ का वातावरण समरसता के साथ-साथ प्रगतिशील बना हुआ है। श्री सुमति जी एवं श्रीमती पुष्पा जी मेहता का वरदहस्त तो है ही साथ में अमरचन्द जी एवं हस्तीमल जी बोहरा का भी योगदान अनुकरणीय है। वहाँ हुई भाषण प्रतियोगिता के वक्त अगर हमारे सांसद मौजूद होते तो शायद उन्हें इस भावी पीढ़ी से बहुत कुछ सीखने को मिलता। 175 की संख्या निरन्तर बनी हुयी है।

गोटन जहाँ 15-20 विद्यार्थी ही सम्भावित थे वहाँ ओमजी ओस्तवाल, हंसराज जी चौपड़ा के प्रयासों से 60 की संख्या निरन्तर बनी हुयी है।

नागौर का हर कार्य व्यवस्थित, सुनियोजित एवं सभी से दो कदम आगे रहता है। भंवरलाल जी कांकरिया, शूरवीर जी सुराणा, अजीत जी भंडारी समेत सभी की जोड़ अद्वितीय है। वहाँ 90 की संख्या है।

मेड़ता में तो स्वयं श्री हस्तीमल जी डोसी ने कमान संभाल रखी है। बच्चों को संस्कारित कर रहे है। युवक संघ के प्रतिनिधि नीलेश जी मूथा ने जब यह कहा कि आगे आप लोग शिविर नहीं भी लगाओगे तो हमें तो इतना अच्छा लग रहा है कि हम स्वयं यहाँ ऐसा शिविर हर ग्रीष्मकाल में लगायेंगे। उनके स्वर सुन असीम शान्ति का अनुभव हुआ कि प्रयास निरर्थक नहीं गये।

बाड़मेर में दिनेशजी लूणिया, जितेन्द्र जी बांठियाँ, कैलाश जी आदि ने भी रेगिस्तान में फूल खिला दिये है। वहाँ 50 की संख्या निरन्तर बनी हुयी है। धनोप में मारु जी, लोढ़ा जी, बुरड़ जी के प्रयासों से 35 की संख्या है।

हांगकांग के युवक मंडल की सकारात्मक पहल एवं मुक्त हस्त से दिये गये सहयोग के लिए उन्हें जितना साधुवाद दिया जाये वह कम है। श्री महेन्द्र जी संचेती, श्री अरुण जी बम्ब, श्री संजय जी कोठारी, श्री रितेश जी हीरावत, श्री हेमेश जी सेठ, श्री सुनील जी जैन, श्री नीरज जी जैन एवं श्री सुरेशभाई गुजराती ने स्वयं आगे होकर सहयोग दिया, वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

इस पूरे कार्य में पिता श्री विमलचन्द जी डागा का सतत मार्गदर्शन व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विरदराज जी सुराणा का पूरा सहयोग रहा।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा का भी सदैव सकारात्मक सहयोग रहा।

कार्य निष्पादन में श्री सरदारसिंह जी बोथरा, श्री अशोक जी सेठ, श्री विनयचन्द जी डागा, श्री प्रमोद जी हीरावत, श्री वीरेन्द्र जी जामड़, श्री सुरेश जी कोठारी का वरदहस्त एवं मार्ग सदर्शन सदैव मिला। साथ में सामग्री चयन से लेकर हर क्षेत्र में युवारत्न श्री रितुल जी पटवा, श्री शैलेन्द्र जी कोठारी, श्री मनीष जी मेहता, श्री मेघराज जी जैन, श्री परेश जी कोठारी, श्री नीलकंठ जी भंडारी, श्री संजय जी कोठारी, श्री मनोज जी जैन का भी पूर्ण सहयोग मिला।

श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, जोधपुर ने तपती धूप, बलती रेत, उड़ती धूल के बीच दो बजे तक बिना ज़लपान किये जब शिविरों को सम्भाला। तो उन्हें देख आत्मीय आनन्द की अनुभूति हुई एवं हमारे संघ के मजबूत, त्यागी, दृढ़ मनोबली इस स्तम्भ को देख 21000 वर्ष तक शासन निराबाध चलेगा, इस धारणा पर और दृढ़ता बन गयी।

यह सम्भव है कि 32 क्षेत्रों में अनेक शिक्षक, मौन कार्यकर्त्ता एवं शिविरार्थी उनके माता-पिता का नाम न आया हो, पर उन सभी को शुभ मनोभावों के साथ हार्दिक धन्यवाद।

गुरुदेव की असीम कृपा से ही यह शुभ कार्य प्रारम्भ हुआ एवं संख्या 2800 के आस-पास पहुँच गयी। हम मात्र संख्या से ही खुश नहीं हुए, पर अध्ययन् एवं गुणात्मक परिणामों के लिए सजग रहे। भगवन्तों की कृपा तो थी ही साथ में जयपुर युवक संघ एवं अग्रज श्री राजेन्द्र कुमार जी डागा जो हांगकांग में रहकर निरन्तर दो से अधिक सामायिक करते है, गमा, संजया, नियंठा, कर्मग्रन्थ आदि अनेक थोकड़ों के जानकार श्रावक हैं, शास्त्रों का निरन्तर स्वाध्याय करने वाले हैं उनका अर्थ-प्रबन्धन, शिविर नियोजन में सदैव सम्बल रहा। सेवाभावी श्री महेन्द्र जी मुनि म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रति असीम श्रद्धा की वजह से विपरीत परिस्थितियाँ भी अनुकूल बन गयी। ऐसे परम गुरुदेव आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त एवं महान् मुनिराजों को शत-शत वन्दन।

धार्मिक शिक्षण शिविर प्रभारी

1370, ताराचन्द नायब का रास्ता, जयपुर (राज.)

आचार्य हस्ती शताब्दी स्वाध्याय प्रतियोगिता

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आधारित

द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन, दर्शन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित पुस्तक 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता के सम्बन्ध में प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हैं-

सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले को

100000 रुपये का बम्पर पुरस्कार

अन्य पुरस्कार

द्वितीय पुरस्कार	: 51000 रुपये	षष्ठ पुरस्कार	: 7000 रुपये
तृतीय पुरस्कार	: 31000 रुपये	सप्तम पुरस्कार	: 5000 रुपये
चतुर्थ पुरस्कार	: 21000 रुपये	अष्टम पुरस्कार	: 3000 रुपये
पंचम पुरस्कार	: 11000 रुपये	नवम पुरस्कार	: 2000 रुपये

सर्वाधिक अंक पाने वाले 300 प्रतियोगियों की पुनः लिखित परीक्षा होगी, उसी के आधार पर उपर्युक्त वरीयता पुरस्कार तथा उस परीक्षा में न्यूनतम 50 अंक पाने वाले प्रत्येक प्रतियोगी को 500 रुपये का सान्त्वना पुरस्कार

प्रश्न-पुस्तिका के वितरण का शुभारम्भः	30.12.2009
प्रश्न-पुस्तिका वितरण की अन्तिम तिथि :	10.08.2010
प्रश्न-पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि :	22.09.2010
द्वितीय चरण की लिखित परीक्षा :	17.12.2010
परीक्षा परिणाम की प्रस्तावित तिथि :	10.01.2011
सम्मान समारोह की प्रस्तावित तिथि :	17.01.2011

प्रश्न-पुस्तिका का मूल्य
20/- रुपये
डाक द्वारा मंगाने पर-30/-रुपये

परीक्षार्थियों के लिए पुस्तक का मूल्य - 100/- रुपये
डाक द्वारा मंगाने पर-160/-रुपये

प्रश्न-पुस्तिका जमा कराने का पता

संयोजक, आचार्य हस्ती स्वाध्याय प्रतियोगिता

सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) 342001

फोन- 0291-2630490

इस प्रतियोगिता में आप स्वयं भी भाग लें तथा अन्य को भी प्रेरणा प्रदान करावें।

प्रतियोगिता सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र-

संयोजक
सुशीला बोहरा
फोन : 0291-5108799
9414133879 (मो.)

सह संयोजक
धर्मचन्द जैन
फोन : 0291-2630490
9351589694 (मो.)

समाचार-विविधा

वि.सं. 2067 में रत्नसंघ के स्वीकृत चातुर्मास

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ वि.सं. 2067 के लिए निम्नाङ्कित चातुर्मास घोषित किए हैं-

1.	परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा	पाली-मारवाड़ (राज.)
2.	परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा	गोटन (राज.)
3.	साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा	घोड़ों का चौक जोधपुर
4.	सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	गुलाबपुरा (राज.)
5.	व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	चांगोटोला (म.प्र.)
6.	विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	गांधीनगर (गुजरात)
7.	विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	सवाईमाधोपुर (राज.)
8.	व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	सोजत रोड (राज.)
9.	व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा	नागौर (राज.)
10.	सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा	मेड़ता सिटी (राज.)
11.	व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा	मैसूर (कर्नाटक)

12. महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा — के.जी.एफ. (कर्ना.)

13. व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा — नीमच (म.प्र.)

14. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा — पीपाड़ सिटी (राज.)

15. व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा — भोपालगढ़ (राज.)

16. सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा — पांढरकवाड़ा (महा.)

17. सरस्वती नगर (जोधपुर) खाली नहीं रहेगा।

आचार्य हीरा की आज्ञा से 11 दीक्षाएँ सम्पन्न

आचारनिष्ठ, दीर्घद्रष्टा जैनाचार्य पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के संघनायकत्व में अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत द्वितीय वैशाख शुक्ला द्वितीया, संवत् 2067, शनिवार दिनांक 15 मई 2010 को बालोतरा में पाँच, बैंगलुरु में चार तथा भरतपुर में एक मुमुक्षु बहिन की एवं द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी, संवत् 2067, रविवार, दिनांक 23 मई 2010 को चांगोटोला में एक मुमुक्षु बहिन की जैन भागवती दीक्षा उत्साह एवं उमंग के वातावरण में भव्यता के साथ सम्पन्न हुई। राजस्थान में भीषण गर्मी का प्रभाव भी मानो दीक्षा के प्रति उल्लास के समक्ष फीका पड़ गया। सभी दीक्षास्थलों पर श्रद्धालुओं ने अच्छी संख्या में पहुँचकर संयम मार्ग का अनुमोदन किया तथा कइयों ने स्वेच्छा से व्रत-नियम अंगीकार किए।

आचार्य हस्ती की अपनी तेजस्विता थी। आचार्य हीराचन्द्र जी भी उनके द्वारा प्रशस्त मार्ग का पूर्ण निष्ठा एवं विवेक के साथ अनुसरण कर रहे हैं। पूज्य हीराचन्द्र जी के संघनायकत्व में 50 से अधिक दीक्षाएँ पहले ही सम्पन्न हो चुकी हैं तथा अब पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी वर्ष में दीक्षाओं का यह अच्छा शुभारम्भ हुआ है। रत्नसंघ में प्रथम बार एक ही दिन में 10 दीक्षाएँ सम्पन्न हुई हैं। इसके पूर्व सवाईमाधोपुर में आचार्य हीराचन्द्र जी के सान्निध्य में सात

दीक्षाएँ एक साथ सम्पन्न हुई थीं। संयम पर अटूट विश्वास आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता है। उनके मार्गदर्शन में साध्वीमण्डल का भी दक्षिण भारत, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि में सफल चातुर्मास एवं प्रभावी विचरण हुआ है। साध्वी मण्डल में नई-नई प्रतिभाएँ जुड़ रही हैं। अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत आध्यात्मिक विकास की क्रियाओं में दीक्षा महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है।

आचार्यप्रवर ने बालोतरा के श्री हनुमानचन्द जी सालेचा जागीरदार परिवार की लाड़ली मुमुक्षु सुश्री ट्विंकल एवं मुमुक्षु सुश्री वर्षा के साथ मुमुक्षु सुश्री कोमल, मुमुक्षु सुश्री दीपिका जैन एवं मुमुक्षु समता जैन की दीक्षा बालोतरा में 15 मई की घोषित की तो अन्यान्य विरक्ता बहिनें अपने माता-पिता एवं पारिवारिक-परिजनों के साथ गुरुचरण सेवा में समुपस्थित हुई। माता-पिता ने आज्ञा-पत्रों के साथ मुमुक्षु बहनों को दीक्षा की अनुमति प्रदान कर संघनायक पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में निवेदन किया कि हमने हमारी आत्मजा की भावना जान-समझ ली है और हमारी लाड़ली संयम-पथ पर अग्रसर होने के लिए दृढ़ निश्चय लिए हुए है, आपश्री उन्हें संयम में सम्बल प्रदान करें। गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा ने एक-एक बहिन की ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना और संयम के प्रति दृढ़ इच्छाशक्ति का आकलन कर, माता-पिता एवं परिवारजनों की आज्ञा-अनुमति के साथ दीक्षा आयोजन कराने वाले संघ की भावना जान-समझकर साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ बालोतरा में पाँच, भरतपुर में एक और बैंगलुरू में चार मुमुक्षु बहिनों की दीक्षा द्वि. वैशाख शुक्ला द्वितीया, शनिवार, 15 मई 2010 की घोषणा फरमाई वहीं एक मुमुक्षु बहिन की भागवती दीक्षा 23 मई को मध्यप्रदेश के बालाघाट जिलान्तर्गत चांगोटोला स्वीकृत कर संघ में अध्यात्म चेतना वर्ष में ग्यारह दीक्षाओं के आयोजन का मार्ग प्रशस्त किया।

संघ स्तर पर चारों स्थानों के लिए विरक्त बहिनों के ज्ञानाभ्यास एवं पारिवारिक परिचय संकलित कर दीक्षा पत्रिकाएँ तैयार की गई, विरक्ता बहिनों के कर-कमलों में समर्पित किए जाने वाले अभिनन्दन-पत्र बनवाये गये, वीर परिवारों को समर्पित किए जाने वाले प्रशस्ति सम्मान तैयार करवाये गये एवं कार्य-योजना की सफल क्रियान्विति में स्थानीय स्तर से लेकर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तक के पदाधिकारियों-कार्यकत्ताओं का ही नहीं, अपितु श्रावक-श्राविकाओं के साथ युवकों व बालक-बालिकाओं तक का सहयोग लेने

का प्रयास रहा। इसीलिये बालोतरा सहित सभी स्थानों पर जैन भागवती दीक्षा महोत्सव उमंग-उल्लास के साथ सम्पन्न हुए। इस बार रत्नसंघ ने दीक्षार्थी बहिनों एवं वीर परिवारों के दर्शन-वन्दन का कार्यक्रम समय पर निर्धारित किया एवं विभिन्न श्री संघों की माँग, कि हम हमारे यहाँ विरक्ता-बहिनों का स्वागत-सत्कार-बहुमान करें, उसकी पूर्ति की गई।

धर्मधरा बालोतरा में पाँच दीक्षाएँ

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से बालोतरा में 15 मई को निम्नांकित पाँच मुमुक्षु बहिनों की जैन भागवती दीक्षा/प्रव्रज्या सम्पन्न हुई-

1. **सुश्री दीपिका** सुपुत्री श्री दामोदर जी जैन, जरखोदा
2. **सुश्री कोमल कोठारी** सुपुत्री श्री रमेशचन्द जी कोठारी, जलगाँव
3. **सुश्री समता जैन** सुपुत्री श्री नरेन्द्रमोहन जी जैन, बजरिया (सवाईमाधोपुर)
4. **सुश्री ट्विंकल सालेचा** सुपुत्री श्री महावीरचन्द जी सालेचा, बालोतरा
5. **सुश्री वर्षा सालेचा** सुपुत्री श्री महावीरचन्द जी सालेचा, बालोतरा

इस अवसर पर पूज्य आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति 15 संतों का तथा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 27 का सान्निध्य प्राप्त था। इन दीक्षाओं की सम्पन्नता के एक दिन पूर्व मुमुक्षु बहिनों एवं उनके परिवारजनों का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

14 मई, 2010

अभिनन्दन-समारोह

विरक्ता बहिनों एवं वीर परिवारजनों का अभिनन्दन एवं बहुमान श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी संस्थान, बालोतरा एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री वर्द्धमान आदर्श विद्यामंदिर के प्रांगण में किया गया।

अभिनन्दन-समारोह की अध्यक्षता रत्नसंघ के **राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष माननीय श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल** ने की। मेहरानगढ़ मन्दिर जाँच आयोग के अध्यक्ष एवं पूर्व न्यायाधिपति राजस्थान उच्च न्यायालय के **न्यायाधीश माननीय श्री जसराज जी चौपड़ा** मुख्य अतिथि के रूप में पधारे वहीं **जोधपुर विकास प्राधिकरण के आयुक्त** एवं **बाड़मेर के पूर्व जिला कलेक्टर**

माननीय श्री रवि जी जैन I.A.S. का विशिष्ट अतिथि के रूप में सान्निध्य प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की सर्वोच्च इकाई **संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत** एवं **शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलाल जी बाफना** सम्माननीय अतिथि के रूप में समारोह में उपस्थित रहे। बालोतरा संघाध्यक्ष श्री डूँगरचन्द जी श्रीश्रीमाल, बालोतरा संघमंत्री श्री नेमीचन्द जी अन्याव, बालोतरा संघ के पूर्व अध्यक्ष एवं दीक्षा समिति के संयोजक श्री खीमराज जी भण्डारी, बालोतरा संघ के उपाध्यक्ष एवं दीक्षा समिति के सह-संयोजक श्री ओमप्रकाश जी बाँठिया, बालोतरा संघ के उपाध्यक्ष श्री रूपकुमार जी चौपड़ा तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी को मंच पर ससम्मान आमन्त्रित कर स्थान सुशोभित करवाया गया। मंच पर विरक्ता बहिनों के साथ वीर परिवार के दादा-दादी एवं माता-पिता को आत्मीयता से आमंत्रित कर उन्हें मंचासीन करवाया गया।

वर्द्धमान स्कूल का विशाल मंच अत्यन्त भव्यता लिए हुए था, मंच के सामने श्रावक-श्राविकाओं के बैठने के लिए कुर्सियाँ कतारबद्ध रखी हुई थीं। समारोह में विशाल जनमेदिनी होने से सैकड़ों भाई-बहिनों ने कारपेट लगी भूमि पर बैठकर अभिनन्दन कार्यक्रम का आनन्द लिया। अभिनन्दन समारोह के मंगलाचरण की प्रस्तुति दी चन्दनबाला कन्या मण्डल बालोतरा की बालिकाओं ने। दीक्षा गीत श्री वर्द्धमान आदर्श विद्यामन्दिर की बालिकाओं ने समवेत स्वर में प्रस्तुत किया जिसके बोल थे- धन्य हुआ सारा परिवार, हर्षित सकल समाज।

बालोतरा श्री संघ की ओर से भाई श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से भाई श्री प्रकाश जी सालेचा ने मंच संचालन को अत्यन्त भव्यता से संभाला। बालोतरा श्री संघ के मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, सम्माननीय अतिथियों के साथ रत्नसंघ के कार्याध्यक्ष एवं महामंत्री जैसे शीर्ष पदाधिकारियों का माल्यार्पण से स्वागत एवं साफा पहनाकर बहुमान किया गया। कुंकुम लगाकर एवं श्री फल भेंटकर मंचासीन महानुभावों का सत्कार किया गया।

बालोतरा श्री संघ के अध्यक्ष श्री डूँगरचन्द जी श्रीश्रीमाल ने अतिथियों का, दीक्षार्थी बहिनों का एवं वीर परिवारजनों के प्रति संघ की ओर से संक्षेप में किन्तु प्रभावी शब्दों में स्वागत भाषण तो दिया ही, बालोतरा में रत्नसंघ की पाँच

भागवती दीक्षा के सुयोग को आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की अत्यन्त कृपा का सुफल बताया। संतरत्नों का सान्निध्य एवं महासती मण्डल में अच्छी संख्या में विदुषी महासतियों का सुयोग बालोतरा श्री संघ की पुण्यवानी बताते हुए जागीरदार परिवार की उदारता को अनुकरणीय बताया।

श्रीमती सुमनदेवी जी हुण्डिया ने संयम की महत्ता पर विचार रखे। बालोतरा श्री संघ की ओर से दीक्षार्थी बहिनों एवं वीर परिवारजनों के स्वागत-सत्कार-अभिनन्दन में संघ के सुज्ञ-श्रावक-श्राविकाओं ने मंच पर उपस्थित होकर कुंकुम तिलक, माल्यार्पण, वीर परिवार के दादा-पिता को साफा पहनाकर बहुमान किया वहीं दादी सा-माताजी को चूँदड़ी ओढ़ाकर उनका बहुमान किया।

अभिनन्दन-समारोह में विरक्ता बहिनों की ओर से भावाभिव्यक्ति के पूर्व अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की दीक्षा -समिति के संयोजक श्री कांतिलाल जी चौधरी, बालोतरा ओसवाल समाज के अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी एवं पूर्व विधायक श्री चम्पालाल जी बाँठिया को मंच पर आमन्त्रित कर उनका भी सम्मान किया गया।

बालोतरा के ऊर्जावान कवि एवं गायक श्री कमलेश जी चौपड़ा ने सुमधुर स्वर में स्वरचित गीतिका के माध्यम से उपस्थित जन समुदाय में संयम के प्रति आदरभाव जगा दिया। गीत के बोल थे-''घर-बार छोड़ चली ये बहिना, इनकी समता क्या कहना।''

''संयम की नगरी में खुश रहना मेरी बहिना'' बोल में सुश्री नयना गोलेच्छा ने गीत के माध्यम से अपनी भावना का इजहार किया वहीं श्रीमती कौशल्या सालेचा ने दीक्षार्थी बहिनों के मंगलमय जीवन की शुभकामना की।

कार्यक्रम में जागीरदार परिवार के मुखिया आदरणीय श्री हनुमानचन्द जी सालेचा ने संघ सेवा में शरीर समर्पित करने की भावना व्यक्त कर गुरुभक्ति का परिचय दिया। जिसका उपस्थित जन समुदाय ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के नारों से स्वागत किया। श्री पृथ्वीराज जी सालेचा ने भी अपने मन की भावना प्रस्तुत की।

विरक्ता बहिन सुश्री वर्षा सालेचा ने वर्षा की तुलना जिनवाणी की वर्षा के साथ तो की ही, अपने स्वागत-सत्कार को माता-पिता, दादा-दादी एवं संघ को समर्पित कर धाराप्रवाह विचारों की अभिव्यक्ति करते कहा कि आप व्रत-नियमों की वर्षा करने में पीछे मत रहना।

मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिका जैन, सुश्री कोमल कोठारी, सुश्री समता जैन के परिवारजनों की ओर से विचाराभिव्यक्ति में पारिवारिक संस्कार, संत-सतीवृन्द की सेवा का सुयोग, पूर्व की पुण्यवानी और शासन सेवा में अर्घ्य अर्पण की भावना पर विचार वस्तुतः प्रभावी रहे। जरखोदा की लाड़ली के सम्बन्ध में श्री उम्मेदमल जी जैन ने "माँ की घणी लाड़ली लाली म्हासु बिछुड़ रही" बोल में गीत रखा तो गीत के बोल में जन समुदाय मानो खो-सा गया। विरक्ता बहिन सुश्री कोमल के भ्राता अनिल जी कोठारी जलगाँव ने भावाभिव्यक्ति में कहा कि आदरणीय श्री रतनलाल जी बाफना एवं जलगाँव में बहू मण्डल की गतिविधियों के कारण संघ में धार्मिक ज्ञानाभ्यास से सुन्दर वातावरण बना उसकी मिशाल है कोठारी कुल दीपिका कोमल! वीरपिता श्री नरेन्द्रमोहन जी जैन ने "समता की समता सदा बनी रहे" वह अपना, अपने परिवार का, ग्राम-नगर का, रत्नसंघ और जिनशासन का नाम रोशन कर संयम-साधना के परीषहों में समता बनाए रखे, गुरु-गुरूणी की आज्ञा-अनुशासन में रहे जैसी हितशिक्षाएँ वस्तुतः परिवार की ओर से भोलावन कही जा सकती हैं।

विरक्ता बहिनों ने अपनी संयम-साधना के प्रति मनोभावों को सशक्त प्रस्तुति दी।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने विरक्ता बहिनों को अभिनन्दन-पत्र देकर सम्मानित किया। समय-सीमा को ध्यान में रखकर एक ही अभिनन्दन-पत्र का वाचन किया गया।

वीर परिवार के दादा-दादी और माता-पिता का माल्यार्पण, शाल/चूँदड़ी ओढ़ाकर बहुमान तो किया ही गया, रत्नसंघ की ओर से रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन ससम्मान भेंट किये गये।

रत्नसंघ ने बालोतरा संघाध्यक्ष श्री डूँगरचन्द जी श्रीश्रीमाल, संघमंत्री श्री नेमीचन्द जी अन्याव, दीक्षा समिति के संयोजक श्री खींमराज जी भण्डारी, सह-संयोजक श्री ओमप्रकाश जी बाँठिया, जन सम्पर्क सेवा में दिन-रात सन्नद्ध युवारत्न श्री धर्मेश जी चौपड़ा का भी संघ की ओर से माल्यार्पण कर स्वागत एवं शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया।

समारोह के सम्माननीय अतिथि **श्री रतनलाल जी बाफना** ने जीवन का वास्तविक संस्मरण बताते कहा कि जो जन्मा है उसका मरण निश्चित है। मरण कब आयेगा यह कोई नहीं कह सकता लेकिन जन्मने वाला मरण को प्राप्त होता है। कोई

छोटी उम्र में विदा हो जाता है तो हमें सोचने को मजबूर होना पड़ता है कि हमने धर्म-साधना करके जीवन-सुधार क्यों नहीं किया। धन्य हैं ये बहिनें। महावीर के शासन में आकर ये बहिनें अपना, अपने खानदान का, अपने ग्राम-नगर का रत्नसंघ का गौरव बढ़ायें, यही शुभकामना है।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं समारोह के **सम्माननीय अतिथि श्री मोफतराज जी मुणोत** ने कहा कि विरक्ता बहिनों द्वारा विचाराभिव्यक्ति के समय मैंने देखा है कि बहिनों का दृढ़ संकल्प है। मैंने इन मुमुक्षु बहिनों का स्वागत मुम्बई में देखा है, जयपुर में भी इनके सम्मान-समारोह में मैं गया था। आप-हम संत-सतीवृन्द के अम्मापियरो हैं, तो हम यह दायित्व बराबर निभा रहे हैं या नहीं? हम मोह में आकर इन्हें साधना पथ से भटका तो नहीं रहे? आज हर आदमी आता है उसे मांगलिक चाहिये। एक संत या सती दिन में कितनों को मांगलिक सुनाएँ, क्या मंगलपाठ देना ही उनका काम रह गया है? हम संत-सतीवृन्द के ज्ञान-दर्शन-चारित्र में सहयोगी बनें। यह तभी होगा जब हम विवेक रखेंगे। आज विवेक की विशेष जरूरत है अन्यथा साम्प्रदायिक कटुता बढ़ेगी। हाँ, हम दृढ़ रहें पर कटुता को जीवन में स्थान न दें। मुणोत साहिब ने जागीरदार परिवार, बालोतरा श्री संघ और उपस्थित विशाल जैन समुदाय का संघ की ओर से आभार व्यक्त किया।

विशिष्ट अतिथि श्री रवि जैन ने अपनी भावना व्यक्त करते कहा कि ये बहिनें संसार के सुखभोग और वैभव का त्याग कर रही हैं। मैं दीक्षा महोत्सव के समारोह में पहली बार सम्मिलित हुआ हूँ। मैं इन बहिनों की संयम-साधना में दृढ़ता से अभिभूत हूँ। इनको धन्यवाद इनके माता-पिता और परिवारजनों को साधुवाद।

समारोह के **मुख्य अतिथि श्री जसराज जी चौपड़ा** ने अपने हृदयोद्‌गार रखते कहा- मित्रों! जीर्ण-शीर्ण वस्त्र त्यागना मुश्किल है तो संसार छोड़ना कितना कठिन है, आप कल्पना तो करें। भौतिकता और भोगों की आज बहार है उसमें संयम शीतलता की फुहार है। मैं बालोतरा की धर्मधरा को नमन करता हूँ, यहाँ कल पांच बहिनें दीक्षित होंगी। मित्रों! वैराग्य की भावना जब मन में आती है तो ही दीक्षा फलित होती है। जैन धर्म में मुमुक्षु की भावना, दृढ़ इच्छा शक्ति और संयम-पालन के प्रति जागरूकता जान-देखकर दीक्षा दी जाती है। चाणक्य का चिन्तन समझाते चौपड़ा साहब ने कहा- कल का क्या भरोसा? जीवन जब क्षणभंगुर है तो जो करना है उसे कर लें। ये बहिनें दीक्षित होकर अपना जीवन निर्माण तो करें ही, संघ की जाहोजलाली करें, संत में अरिहन्त की आभा होती है।

दीक्षा महोत्सव पर आचार्यश्री-उपाध्यायश्री सहित संत पधारे हैं यह बालोतरा की, दीक्षार्थी बहिनों की, वीर परिवार की और आप-हम-सबकी पुण्यवानी का सुफल है। धन्य हैं ये बहिनें, धन्य हैं इनके माता-पिता। दीक्षित होकर स्व-पर कल्याण करें, यही आशीर्वाद हैं।

समारोह के अध्यक्ष रत्नसंघ के **राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल** ने संघ की ओर से जागीरदार परिवार, बालोतरा श्री संघ एवं दीक्षा महोत्सव पर पधारे सभी श्री संघों का तथा देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त करते कहा कि आप धर्मधरा बालोतरा में धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना करने वाले गुरु भगवन्तों की सेवा में उपस्थित हुए हैं तो अध्यात्म चेतना वर्ष में कुछ-न-कुछ व्रत-नियम की श्रद्धा समर्पित किये बिना न जायें। संघ में बालोतरा सहित भरतपुर-बैंगलुरू एवं चांगोटोला में दीक्षा महोत्सव पर जबरदस्त उत्साह के लिये शासनप्रेमियों के प्रति साधुवाद व्यक्त करते हुए उन्होंने अपनी भावना रखी।

कार्यक्रम संचालक श्री ओमप्रकाश जी बाँठिया ने लम्बे समय तक शान्त विराजने के लिए उपस्थित जन समुदाय का आभार प्रदर्शित करते हुए, वरघोड़ा, दीक्षा महोत्सव, अक्षय तृतीया, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का स्मृति-दिवस, बड़ी दीक्षा विषयक आवश्यक जानकारी देते हुए सभी से अपेक्षा रखी कि हम-सब त्याग-तप की श्रद्धा समर्पित करने में तत्पर रहें।

जय-जयकार के जयनादों के साथ समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ।

वरघोड़ा

संघ ने वरघोड़े का कार्यक्रम 14 मई को सायं 4 बजे रखा। भीषण गर्मी की परवाह किए बिना विशाल जनसमूह ने शोभा यात्रा के प्रारम्भ से होकर अन्त तक जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए और मंगलगीत गाते हुए तथा गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के सन्देश उच्चारित करते हुए शोभा यात्रा कार्यक्रम का आदि से अन्त तक आकर्षण बनाए रखा। बालोतरा के सुज्ञ श्रावकों ने स्थान-स्थान पर शीतल पेय के आतिथ्य का लाभ लिया। शोभा यात्रा श्री वर्द्धमान आदर्श विद्या मन्दिर पहुँच कर सम्पन्न हुई।

15 मई, 2010

अभिनिष्क्रमण कार्यक्रम

15 मई का मंगल प्रभात जन-जन को हर्षित-प्रमुदित करने वाला रहा।

आगन्तुकों ने प्रातः आचार्यप्रवर-उपाध्याय प्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन किए। वर्द्धमान स्कूल में चाय-नाश्ते की सुन्दर व्यवस्था थी। हजारों लोगों की व्यवस्था तभी सफल होती है जब पर्याप्त स्थान हो, पूरे कार्यकर्त्ता हों, और व्यवस्थानुसार कार्य-योजना अमल में लाई जाय। हजारों लोग अल्पाहार से निवृत्त हो जूनाकोट के पास जागीरदार स्ट्रीट पहुँचे। अभिनिष्क्रमण-यात्रा में पारिवारिक-परिजन, इष्ट-मित्र एवं विभिन्न श्री संघों से पधारे भाई-बहिन तो थे ही, बालोतरा एवं आसपास के संघ-समाज और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के महानुभावों ने भी विरक्ता बहिनों के प्रति आत्मीयता दर्शाकर आशीर्वाद दिया। पाँचों विरक्ता बहिनें जय-जयकारों के जयनादों के बीच हाथ जोड़े सभी का अभिवादन करती हुई गुरु-चरणों में वर्द्धमान स्कूल पहुँचती उसके पहले हजारों भाई-बहिनों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया। सामायिक-साधना करने वालों की बैठने की अलग व्यवस्था थी तो सबसे आगे अतिथियों और वीर परिवारजनों के लिए पूर्व से व्यवस्था सुनिश्चित थी।

दीक्षा-कार्यक्रम

प्रातः करीब 11 बजे स्कूल के बरामदे में आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर पाट पर एवं शेष संत-सतीवृन्द बरामदे में विराज रहे थे। बरामदे के ठीक नीचे पाटे लगे हुए थे। जिन पर दीक्षार्थी बहिनें वन्दन-नमन कर दीक्षा-पाठ अंगीकार कर सके एतदर्थ पर्याप्त स्थान पहले से इस तरह बना रखा था कि जन समुदाय विरक्ता बहिनों को बिना हिले-डुले देख सके। आचार्यप्रवर-उपाध्याय प्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द ऊँचे बरामदे में विराजमान थे इसलिये जन समुदाय की नजरें बरामदे में विराजित चारित्रात्माओं पर केन्द्रित थी। दीक्षा कार्यक्रमों में बालोतरा विराजित **ज्ञानगच्छीय श्रद्धेय श्री लक्ष्मी मुनि जी म.सा. श्रद्धेय श्री धर्मेशमुनि जी म.सा. तथा महासती श्री सुशीला जी म.सा. महासती श्री भावना जी म.सा.** आदि सतीवृन्द के भी दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग पर समुपस्थित रहने से समाज में परस्पर प्रेम-सम्बन्ध की बात देखने को मिली।

प्रातः करीब 11 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विरक्ता बहिनें गुरु चरणों में उपस्थित हो रही हैं, जय-जयकार के जयनादों से बिना किसी सूचना के विशाल जनमेदिनी स्वतः जान गई कि अब दीक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया है। विरक्ता बहिनों ने जो वस्त्राभूषणों से सुसज्जित थी, आचार्यप्रवर-उपाध्याय प्रवर

प्रभृति संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन किया और जन समुदाय के समक्ष हाथ जोड़े खड़ी हो गई।

कार्यक्रम संचालक **श्री ओमप्रकाश जी बाँठिया** ने गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान की कृपा का उल्लेख पूर्व में हुए चातुर्मास एवं चातुर्मास की प्रमुख उपलब्धियों का सार-संक्षेप रखते यह कह कर जानकारी दी कि गुरु हस्ती ने अपनी साधना से सिवांची पट्टी की धड़ाबंधी समाप्त कर प्रेम की गंगा बहाई। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने व्यसन निवारणार्थ प्रेरणा की, वह आज भी हमारे दिल-दिमाग में छाई हुई है। उपाध्याय श्री के चातुर्मास में धर्म-ध्यान का ठाट रहा, रत्नसंघ के अलावा यहाँ ज्ञानगच्छ, आचार्य श्री नानेश, श्रमण संघ आदि सभी परम्पराओं के संत-सतियों का आवागमन-चातुर्मास होते रहते हैं। 45 वर्ष पूर्व गुरु हस्ती की प्रेरणा से स्थापित पाठशाला आज विशाल वटवृक्ष के रूप में है, पर्युषण के आठ दिनों में व्यापार-व्यवसाय छोड़कर धर्म-ध्यान में प्रवृति करने का आदर्श भी गुरु हस्ती की देन है। मैं सभी विरक्ता बहिनों को अपनी भावना व्यक्त करने का समय दूँ यह संभव नहीं है। विरक्ता बहिनों के प्रतिनिधि के रूप में मुमुक्षु वर्षा विचाराभिव्यक्ति करेंगी। **सुश्री वर्षा** ने संक्षेप में अपनी ओर से एवं अपनी सभी सहयोगी मुमुक्षु बहिनों की ओर से किसी के प्रति किसी का मन दुःखा हो उसके लिए क्षमायाचना की एवं सर्वजीव राशि के प्रति भी अन्तर्मन से क्षमायाचना के भाव रखे। दीक्षा महोत्सव पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी को उपकारी मानते हुए मुमुक्षु बहिन ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र में उन्हें आगे बढ़ाने की भावना रखी।

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने बुलन्द आवाज में कहा कि ये बहिनें वेष परिवर्तन हेतु प्रस्थान करने जा रही हैं, आचार्य श्री इन बहिनों को मांगलिक सुना रहे हैं। विरक्ता बहिनें संघ शिरोमणि संघनायक से मंगल पाठ श्रवण कर हाथ जोड़े-जोड़े वेष परिवर्तन हेतु अन्य कमरों में जाने के लिए प्रस्थान कर गई।

रत्नसंघीय संरक्षक मण्डल के संयोजक **आदरणीय श्री मोफतराज जी मुणोत** ने कहा कि आज बड़ा शुभ दिवस है। आज रत्नसंघ में दस दीक्षाएँ हो रही हैं जिनमें पाँच दीक्षाएँ धर्मधरा बालोतरा में हो रही हैं। जागीरदार परिवार, बालोतरा संघ और व्यवस्था में लगे संघ-समाज के सुज्ञजनों के प्रति धन्यवाद-साधुवाद देते हुए मुणोत साहिब ने मुमुक्षु बहिनों के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

उच्च न्यायालय के **न्यायाधिपति माननीय श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया** ने कहा कि पाँच मुमुक्षु बहिनें गुरु के मुखारविन्द से दीक्षित हो रही हैं। ये

बहिनें जीवन पर्यन्त संयम का पालन करेंगी। संयम के प्रति सजग मुमुक्षु बहिनों व वीर परिवार को प्रणाम शब्द सम्बोधित कर टाटिया साहब ने कहा कि संयम साधु जीवन में तो रखना ही है, गृहस्थ जीवन में भी जरूरी है। संयम सुनने-सुनाने तक ही नहीं, उसे आचरण में लाने की जरूरत है। हमें भी प्रण करना चाहिये कि हम गृहस्थ जीवन में संयम का पालन करेंगे। मुमुक्षु बहिनों व वीर परिवार के प्रति भी न्यायमूर्ति श्री टाटिया साहिब ने संक्षिप्त में किन्तु प्रभावशाली शब्दों में शुभकामना व्यक्त की।

महासती श्री संयमप्रभा जी म.सा. ने गुरुभक्ति में अपनी भावना व्यक्त करते कहा कि गुरु दर्शन का अर्थ है अहं का विसर्जन। महासती जी ने गुरु कृपा को उन्नति का मंत्र बताया। **महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा.** ने कहा कि संसार सागर से पार होने के लिये उत्कृष्ट है दीक्षा। दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति दीक्ष् धातु से हुई है। कठोर आत्मसंयम के लिए तत्पर होना दीक्षा है। भेद विज्ञान की दृष्टि से मिथ्यात्व को दूर करना दीक्षा है। सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि साधक की दीक्षा है। भीतर में रही ग्रन्थियों को भेदकर गुरु-गुरुणी की आज्ञा जीवन में साकार हो जाय तो वह सफल दीक्षा है। महासती जी ने दीक्षा लेकर शासन चमकाने की प्रेरणा की।

महासती श्री रूचिता जी म.सा. ने अपनी भावना में कहा कि हमने परम्परा को पकड़ा है, परमात्मा को नहीं, इसीलिये पृथ्वी पर पाप पनप रहा है। इस पाप से हटने का एक मात्र रास्ता है संयम। दीक्षा अध्यात्म योग का आलोक है। कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग सब दीक्षा में समाहित है। **महासती श्री विनीत प्रभा जी म.सा.** ने अपने विचार रखते हुए कहा कि यहाँ पर कषायों की ललकार नहीं, संयम की जय-जयकार है। पाँच मुमुक्षु बहिने पाँच महाव्रत अंगीकार करने जा रही हैं इसके पीछे संयम की शक्ति है। **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.** ने संयम-पथ पर अग्रसर होने वाली बहिनों के प्रति शुभकामना करते हुए कहा कि आप गुरु-गुरुणी की आज्ञा में रहकर स्व-पर का कल्याण करें।

ज्ञानगच्छीय महासती श्री भावना जी म.सा. ने कहा- जलता हुआ दीपक अनेक दीपकों को जलाता है, वही शक्ति संयम में रही हुई है। सद्गुरु भगवन्तों का सहयोग पुण्यवानी से प्राप्त होता है। इन बहिनों को गुरु हीरा जैसे सुयोग्य गुरु का सुयोग मिला है, आप सब संयम में उत्तरोत्तर आगे बढ़ें यही मंगल

भावना है।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने कहा कि ये मुमुक्षु आत्माएँ बद्ध कर्मों को काटने के लिए कटिबद्ध हैं। ये बहिनें महासती बनने जा रही हैं। महासती कब होती है? संयम पालने का महान् सत्त्व होता है तो महासती बनती है। साधना में संकट आए तो समता को ढाल बना लेना। आराधना में बाधा आए तो आचार्य भगवन्त का शरणा ले लेना। पुरुषार्थ में परीषह आए तो प्रमोदभाव से सहन कर लेना। **श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.** ने कहा कि वीर के शासन में वीरों को स्थान मिलता है। हे जीव! तूं बाहर में क्यों युद्ध करता है, युद्ध ही करना है तो कषायात्मा के साथ युद्ध कर। मुनि श्री ने मानव, आदमी और नर शब्द का हार्द भी समझाया, मुण्डन के पूर्व पाँचों इन्द्रियों और चारों कषायों को जीतना जरूरी है।

श्री दर्शनमुनि जी म.सा. ने कविता की पंक्तियाँ रखते कहा- "मेरे सिर पर रख दो, गुरुवर अपने दोनों हाथ, बड़ा उपकार होगा, बड़ा कल्याण होगा।" मुनिश्री ने दीक्षा में गुण है अपार वीरजी बखाणियो रे" बोल में भजन की प्रस्तुति भी की। **श्री बलभद्रमुनि जी म.सा.** ने कहा कि आज मानव इच्छाओं का गुलाम बना हुआ है। इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह निरन्तर प्रयास भी करता रहता है, लेकिन इन मुमुक्षु बहिनों ने गुरु भगवन्तों के श्री चरणों में इच्छाओं को त्याग कर संयम में रमण करने का संकल्प किया वही इनकी विशेषता है। **श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा.** ने मुमुक्षु बहिनों के संयम-साधना की ओर बढ़ने पर प्रमोद व्यक्त किया। **श्री लोकचन्द्र जी म.सा.** ने कहा कि जो पानी पड़ा रहता है वह गन्दा होता है बहने वाला पानी निर्मल-स्वच्छ होता है। बहना साधना है। ये बहिनें साधना पथ पर अग्रसर होती रहे, कहीं विराम न लें। पर इन्हें यह जरूर ध्यान रखना होगा कि बाहर के बहावों में न बहें, भीतर के स्वभाव में बहें।

श्री योगेशमुनि जी म.सा. ने "दीक्षा के गुण अपार" बोल में भजन के अनन्तर संयम तारण हार है पर प्रकाश डाला। मानव जीवन की विशेषता रेखांकित करते मुनिश्री ने कहा कि मानव जीवन खोजी है वह खोज करता रहता है। एक खोज परमाणु तक पहुँचती है तो एक परमात्मा तक।

ज्ञानगच्छीय संतरत्न श्री धर्मेश मुनि जी म.सा. एवं श्री लक्ष्मीमुनि जी म.सा. ने भी अपने आशीर्वचन में आत्मार्थी बनने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शन का सुयोग मिला, ये बहिनें ऐसे गुरु के

सान्निध्य में आत्मगुण विकसित करें यही मंगल मनीषा है।

दीक्षा-पाठ कार्यक्रम

प्रवचन के चलते, मुमुक्षु बहिनें जो दीक्षा स्थल पर आते समय वस्त्राभूषणों से सुसज्जित थीं, वेष परिवर्तन पश्चात् उपस्थित हुई तो सैकड़ों-हजारों हाथ साधुवेष में विरक्ताओं को देखते ही जुड़ गए।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने साधुवेष में समुपस्थित दीक्षार्थी बहिनों से कहा कि जब तक आप 'करेमि भन्ते' के पाठ से दीक्षित न हों तब तक आप माता-पिता के चरण स्पर्श कर सकती हैं, यहाँ उपस्थित सभी से क्षमायाचना भी करें। दीक्षार्थी बहिनों ने माता-पिता, पारिवारिक-परिजन एवं संघ-समाज के सभी जनों से आशीर्वाद लिया एवं क्षमायाचना की।

आचार्यप्रवर ने माता-पिता एवं पारिवारिक-परिजनों से अनुज्ञा प्रदान करने हेतु खड़े होकर दीक्षा की आज्ञा चाही तो पाँचों विरक्ता बहिनों के माता-पिता, दादा-दादी, भाई-भाभी, चाचा-चाची एवं अन्य परिजनों ने खड़े होकर सहर्ष दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की। आचार्य प्रवर के संकेत पर बालोतरा श्री संघ एवं रत्नसंघ के शीर्ष पदाधिकारियों ने भी खड़े होकर अनुमति प्रदान की।

आचार्यप्रवर ने फरमाया- आज दूज है। दीक्षार्थी बहिनें दूज के चाँद की तरह गुणश्रेणी में आगे बढ़ें।

आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेणं तस्सउत्तरी का पाठ बोलकर दीक्षार्थी बहिनों को आलोचना-सूत्र के माध्यम से ध्यान करवाया। कायोत्सर्गशुद्धि-सूत्र, चतुर्विंशतिस्तव पाठ बोलते समय सभी संतरत्नों ने समवेत स्वर में लोगस्स का पाठ उच्चरित किया।

करेमिभंते का पाठ बोलने के पूर्व आचार्य प्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में फरमाया कि संसार में अनेक मंत्र हैं, तंत्र हैं जो विघ्न निवारण कर सकते हैं, शक्ति का संचरण भी कर सकते हैं। मंत्रों के स्मरण से, चिन्तन से, मनन से तीव्र बुखार उतर सकता है। बिच्छु और साँप का ज़हर उतारने वाले मंत्र आपने देखें होंगे, सुने होंगे। आकाश में उड़ान भरने वाले मंत्र सुने होंगे। मंत्रों से वर्षा हो सकती है। सुख-शांति और आनन्द देने वाले कई मंत्र हो सकते हैं। भूत-प्रेत-याकिनी-डाकिनी जैसी बाधाएँ मंत्र शक्ति से दूर हो सकती हैं, पर भगवान ने एक ऐसा मंत्र बताया जो

आत्मा को पवित्र बना सकता है, पूज्य बना सकता है, आराधक बना सकता है। भगवान ने जो मंत्र बताया वह पापों को दूर भगा सकता है। वह मंत्र है सामायिक का। वह मंत्र है समाधि का। वह मंत्र है शांति का, समसरता का। शील की शक्ति विघ्न-बाधाओं को दूर करने वाली है। मैं इन दीक्षार्थी बहिनों को वही मंत्र सुना रहा हूँ।

आचार्यप्रवर ने 'करेमिभंते' के पाठ से सामायिक का जीवन पर्यन्त के लिए प्रत्याख्यान करवाया। जनसमुदाय जो अपलक दीक्षा-पाठ देख-सुन रहा था, करेमिभंते के पाठ को श्रवण कर श्रमण भगवान महावीर की जय, प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की जय, सभी संत-सतीवृन्द की जय, दीक्षा लेने वाली वीरांगनाओं की जय जैसे अनेक जयघोष स्वप्रेरित भावना से गुंजायमान करते हुए दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना का लाभ ले रहे थे। भक्तों ने गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के नाम से प्रचलित नारों का उच्चारण भी भावनापूर्वक किया। जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए जनसमुदाय श्रद्धानवत था, दीक्षा और संयम के महत्त्व के प्रति आबालवृद्ध सबकी शुभ भावना थी।

दीक्षा-पाठ के पश्चात् **तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि दीक्षा की पाठशाला है- एकान्त और दीक्षा का पाठ है-मौन। दोष दूर करने हेतु दृढ़ निश्चय का नाम है दीक्षा। अतीत के पापों से सम्बन्ध तोड़कर वर्तमान में जागरूक रहकर भविष्य में आत्मशुद्धि के रास्ते आगे बढ़ने की यात्रा शुरू हो चुकी है, नवदीक्षिता साध्वियाँ अपना मनोरथ सिद्ध करें, यही मंगलमनीषा है।

महान्अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में पूछा- आप यहाँ क्यों आए हैं? क्या आप दीक्षा देखने आए हैं, सुनने-सुनाने ही आए हैं या कुछ ग्रहण करने के लिए आए हैं? आप दीक्षा अंगीकार नहीं कर सकते हैं तो छोटी दीक्षा तो ले ही सकते हैं। महान् अध्यवसायी मुनि श्री ने दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर शीलव्रत के खंद करने की प्रभावी प्रेरणा की।

दीक्षा महोत्सव का कार्यक्रम लगभग 1.45 बजे तक चला। आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के अतिशय प्रभाव से विशाल जनमेदिनी में स्वप्रेरित अनुशासन तो बना रहा ही, अपूर्व शांति एवं कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति उल्लास और आत्मविश्वास के साथ सानन्द सम्पन्न हुई।

प्रतीक रूप में वीरपिता श्री दामोदर जी जैन एवं वीर दादा श्री जवेरीलाल जी सालेचा (जागीरदार) ने शीलव्रत के खंद किए। व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित करने वालों से अनुरोध किया गया कि वे जब चाहें आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर से व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार अवश्य करें, खाली हाथ न जावें।

आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण कर जन समुदाय दूर से वन्दन-नमन करते हुए दीक्षा स्थल से भोजन स्थल की ओर बढ़ा। हर्ष-हर्ष जय-जय। गुरु हीरा-गुरु मान के जय-जयकार के जयनाद अनवरत गुंजित होते रहे।

बालोतरा के आबाल-वृद्ध सभी समाजबन्धु पूरे दो दिन दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर हर्षित-उल्लसित भावों में कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सजग रहे। समीपवर्ती सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्री संघ एवं देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुजनों की कार्यक्रम में भागीदारी गर्मी की तीव्रता में भी बराबर बनी रही। जागीरदार परिवार ने दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम के लाभार्थी के रूप में उदारता पूर्वक एवं भावनापूर्वक सेवा का लाभ लिया, हर आगत ने संघ-सेवी सुश्रावक श्री हनुमानचन्द जी, पृथ्वीराज जी, जवेरीलाल जी, महावीरचन्द जी, पवनकुमार जी आदि सभी सालेचा परिवार की आत्मीयता, अपनत्व और सेवाभावना की सराहना की।

भरतपुर नगर में मुमुक्षु एलिजा ने स्वीकारा संयम पथ

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा एवं श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि मुनिपुंगवों की मंगल मनीषा से श्री राजेन्द्रसूरि जैन कीर्ति मन्दिर ट्रस्ट, सेवर रोड़, भरतपुर के विशाल प्रांगण में रत्नसंघीय **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4** के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु बहिन सुश्री एलिजा जैन (विजय श्री) की भागवती दीक्षा 15 मई को दोपहर 1 बजे श्री राजेन्द्र सूरि जैन कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट, भरतपुर के प्रांगण में संघ की गरिमानुसार अत्यन्त हर्ष व उल्लास के साथ सम्पन्न हुई। महासती मण्डल का दीक्षास्थल पर पधारना हुआ तो जनसमुदाय ने जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद कर महासती-मण्डल का अभिनन्दन किया। महासती-मण्डल ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। महासती मण्डल ने करीब 1 बजे दीक्षार्थी के माता-पिता एवं

पारिवारिकजनों से आज्ञा अनुमति मांगी तो दीक्षार्थी के परिजनों ने सहर्ष अनुज्ञा प्रदान की। महासती-मण्डल ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों की अनुमति चाही तो उन्होंने भी सहर्ष सहमति स्वीकृति प्रदान की। महासती जी के संकेत रूप निर्देश से दीक्षार्थी मुमुक्षु एलिजा जैन ने परिवारजनों के साथ उपस्थित जनसमुदाय से हाथ जोड़कर क्षमायाचना की।

महासती सौभाग्यवती जी म.सा. ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर आलोचना सूत्र, तस्सउत्तरी, इच्छाकारेणं का काउसग्ग, कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ तथा चतुर्विंशतिस्तव पाठ का उच्चारण किया। तत्पश्चात् दूसरा चउवीसत्थव कराया इसके बाद 'आज दीक्षा है सिरमौर गुरु उपकार कराया'' भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् 'करेमि भंते' का पाठ 1 बजकर 26 मिनट पर उच्चारण किया गया। महासती मण्डल ने फरमाया कि दीक्षार्थी बहिन जीवन भर के लिए पापों का त्याग कर रही है, आप दीक्षा की अनुमोदना में व्रत-नियम अंगीकार करें। श्रीमती माया जैन धर्मपत्नी अशोक जैन, पाईबाग भरतपुर एवं श्रीमती राजुल जैन धर्मपत्नी सुमेरचन्द जी जैन, पाई बाग भरतपुर ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। करीब 5-6 हजार श्रावक-श्राविकाओं ने शान्त सहज भाव में बैठकर दीक्षापाठ कार्यक्रम अपलक नेत्रों से देखा, पाठों को सुना और करेमि भंते पाठ के समापन के साथ हर्ष-हर्ष, जय-जय का उच्चारण कर अपना उत्साह दर्शाया तथा गगनभेदी जयघोष कर दीक्षा की अनुमोदना की। दीक्षा पाठ के बाद नवदीक्षिता साध्वी को महासतियाँ जी ने अपने पास पाट पर बिठाया।

दीक्षा महोत्सव पर चेन्नई, जोधपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, कानपुर, आगरा, मथुरा, कोटा, अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, आलनपुर, अलवर, नौगांवा, मुबारिकपुर, रामगढ़, नदबई, खेरली, खौह, हरसाना, मौजपुर, हिण्डौन सिटी, गंगापुर सिटी, मण्डावर महुआ, फरीदाबाद, अजमेर, दिल्ली, पहरसर, सेवर आदि अनेक ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं ने दीक्षा महोत्सव पर पधारकर शासन की प्रभावना की। दीक्षा पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने व्रत-नियम अंगीकार कर अपना जीवन पावन किया। भरतपुर संघ की आवास, भोजन, यातायात आदि सभी व्यवस्थाएँ विभिन्न समितियों के अन्तर्गत सुचारू बनी रहीं। श्री वर्द्धमान श्वे. स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री जैन रत्न बालिका मण्डल के सदस्य तो सक्रिय थे ही समूचे जैन समाज ने दीक्षा-महोत्सव पर भावनापूर्वक सहर्ष सेवा प्रदान की। पक्षियों की नगरी भरतपुर में पहली बार दीक्षा महोत्सव का आयोजन विवेक कुमार जी जैन के संयोजकत्व में सुन्दर व श्रेष्ठ कार्यक्रम के रूप में याद किया जायेगा।

शोभायात्रा- 14 मई 2010 को मुमुक्षु बहिन एलिजा की शोभायात्रा सुसज्जित बग्गी में वीर परिवार के निवास स्थान वासन गेट, भरतपुर से प्रारम्भ हुई। शोभायात्रा में जन-समुदाय द्वारा भजन-गीतों के अतिरिक्त जय-जयकार तथा संयम के नारों के साथ 'गुरु हस्ती के दो फरमान सामायिक स्वाध्याय महान्', 'गुरु हीरा का है आह्वान निर्व्यसनी हो हर इंसान' के जयनाद पूरे रास्ते गुंजायमान हो रहे थे। शोभायात्रा करीब 2 घंटे में समापन स्थल पर पहुँची।

अभिनन्दन समारोह- 15 मई 2010 को दीक्षा पूर्व प्रातः 9 बजे विरक्ता बहिन एवं वीर परिवार के स्वागत में अभिनन्दन-समारोह का आयोजन रखा गया। समारोह की अध्यक्षता रत्नसंघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा** ने की। मुख्य अतिथि के रूप में **श्री हरिसिंह जी महुआ,** पूर्व सचेतक राजस्थान सरकार थे। **श्री गिरीश जी चौधरी,** प्रदेश सचिव राजस्थान कांग्रेस कमेटी विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। रत्नसंघ के मंत्री माननीय **श्री मनमोहनचन्द जी बाफना, श्री सुमेरचन्द्र जी जैन,** अ.भा. श्री पल्लीवाल जैन महासभा के अध्यक्ष **श्री देवकीनन्दन जैन,** महामंत्री **श्री श्रीचन्द्र जी जैन,** क्षेत्रीय प्रधान **श्री राहुल जी जैन,** अ.भा.श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के मार्गदर्शक **श्री नेमीचन्द जी चौपड़ा,** मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार के उपनिदेशक **श्री एम.पी. जैन,** अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्षा **श्रीमती मधु जी सुराणा, डॉ. मंजुला जी बम्ब,** पोरवाल समाज के अध्यक्ष **श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, कोटा** का सम्माननीय अतिथि के रूप में सान्निध्य प्राप्त हुआ। श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष **श्री धर्मेन्द्र जी जैन** एवं दीक्षा आयोजन समिति के संयोजक **श्री विवेक कुमार जी जैन** ने भी मंच को सुशोभित किया।

दीक्षा आयोजन समिति के संयोजक श्री विवेक कुमार जी जैन ने अपने स्वागत भाषण में कहा- ''इस आध्यात्मिक चेतना वर्ष में आचार्यप्रवर ने

पल्लीवाल क्षेत्र पर उपकार करते हुए भरतपुर में दीक्षा कराने की अनुमति प्रदान की, जिससे मैं आचार्य श्री का कृतज्ञ हूँ। भरतपुर की जायी जन्मी एलिजा की दीक्षा उसकी जन्मभूमि पर ही सम्पन्न हो रही है। इस दीक्षा महोत्सव के अवसर पर प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामर्थ्य के अनुसार व्रत-नियम अंगीकार कर दीक्षा की अनुमोदना कर शासन की प्रभावना करनी चाहिए। दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम की क्रियान्विति में पल्लीवाल क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति का उत्साह प्रमोदजन्य है।

अभिनन्दन समारोह में विरक्ता बहिन के सम्मान में अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया वहीं वीर परिवार के स्वागत में रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन से बहुमान किया गया। विरक्ता बहिन, वीर माता-पिता एवं अतिथियों का माल्यार्पण से स्वागत, साफा पहनाकर बहुमान एवं शाल व चूंदड़ी से सत्कार किया गया। मुमुक्षु एलिजा बहिन ने समारोह में अपने हृदयोद्‌गार प्रस्तुत करते हुए कहा कि-

मैंने ईश्वर को नहीं देखा है, देखा है अपने गुरुवर को,
ज्ञान सिन्धु जिसमें समा गया, मैंने देखा उस गागर को।
सूरज जिसके चरणों में आकर के शीश झुकाता है,
संयम आनन्द दाता है, हमको विश्वास दिलाता है।
हिमगिरि का उन्नत मस्तक, जहाँ नतमस्तक हो जाता है,
मोक्ष महल का वासी वो, इस धरती पर यायावर है।
मेरी श्रद्धा, मेरे ईश्वर का नाम ही, हीरा गुरुवर है।।

जीवन संस्कार के मंगलमय प्रसंग पर मैं अपने जन्म देने वाले माता-पिता को शीतल प्रेम की छाया देने वाले ताऊ-ताई, मामा-मामी, भाई-बहिन आदि सभी परिजनों का उपकार मानती हूँ, जिन्होंने तप, संयम और त्याग, वैराग्य के मार्ग पर अग्रसर होने के मेरे संकल्प को मजबूत किया है।

अध्यक्ष महोदय श्री बोथरा साहब ने युगद्रष्टा युगमनीषी आचार्य श्री हस्ती के कीर्तिमानों का उल्लेख करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, सम्माननीय अतिथि, दीक्षार्थी परिजनों एवं कोने-कोने से आए साधर्मियों को हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'मुक्ति के पथिक' एवं श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन गोपालगढ़ द्वारा प्रकाशित 'विजयश्री संयम गीतिका' का विमोचन भी हुआ।

पूज्य गुरुदेव **आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** द्वारा फरमाये गये कल्याणकारी भाव पढ़कर सुनाए गए-

"भरतक्षेत्र के पल्लीवाल क्षेत्र के भरतपुर नगर में भगवान् महावीर के जयवंत शासन एवं पूज्य कुशलेश द्वारा आरोपित, आचार्य रत्नेश द्वारा संशोधित, युगमनीषी आचार्य श्री हस्ती द्वारा संवर्धित रत्नसंघ में प्रथम पावन प्रव्रज्या का पुनीत प्रसंग भव्य जीवों के 'सौभाग्य' का सूचक है। जीवन की 'सुश्री' अभिवृद्धि कर 'शारदा' (सरस्वती) वत् अज्ञान-तिमिर का हरण कर कर्म-लीला को समाप्त करने का भव्य प्रसंग मन को आह्लादित करने वाला, दूरस्थ होते हुए भी अन्तरंग में आनन्द की अनुभूति करवाने वाला है।

प्रव्रज्या- कषायों का उपशम, विषयों का वमन, इन्द्रियों का दमन, पाप का प्रक्षालन, गुरुचरणों में नमन, अमरत्व को प्राप्त करने का चरण, वीतरागता को वरण करने की सहज, सरल, अनन्त सत्य के स्रष्टा-द्रष्टा तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा प्ररूपित प्रक्रिया है।

दीक्षा- कष्ट में सहिष्णुता, परीषह-उपसर्गों में तितिक्षा, समभावी जीवन की विवक्षा "णो हीणे णो अइरित्ते" की भावना का निर्माण करने की शिक्षा है। ऐसी स्व-पर कल्याणकारिणी, पाप प्रक्षालिनी, मोक्ष प्रदायिनी प्रव्रज्या पथ पर उत्साह उमंग से परिजनों के लाड-प्यार में पली मुमुक्षु आत्मन् एलिजा मुस्तैदी-चरणों से आगे बढ़ रही है। उनकी मोक्षमार्ग की यात्रा 'छंदं णिरोहेण उवेइ मोक्खं' प्रभु महावीर के अन्तिम शिक्षा वचन को पूरित करती हुई आर्य वचन 'तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए, तप्पुरक्कारे, तस्सण्णीए, तण्णिवेसणे' आत्मसात् करती हुई कर्मों को परास्त कर जीवन संग्राम में विजयश्री को प्राप्त करे, ऐसी मंगलमनीषा है।"

बैंगलुरु में चार मुमुक्षु बहिनें प्रव्रजित

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से एवं परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति मुनिपुंगवों की मंगलमनीषा से फूलों की नगरी, बैंगलुरु में मराठा हॉस्टल के विशाल प्रांगण में **मुमुक्षु बहिन श्रीमती मंजू जी डागा, मुमुक्षु सुश्री शिल्पा जी श्रीश्रीमाल, मुमुक्षु सुश्री प्रीति कानूंगा और मुमुक्षु सुश्री शिल्पा बागरेचा** की भागवती दीक्षा 15 मई, 2010 को संघ की परम्परानुसार हर्ष-उल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुई। रत्नसंघीय व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द

से एवं महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री चारित्रलता जी आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में दीक्षा महोत्सव प्रारम्भ हुआ।

14 मई 2010

चारों मुमुक्षुओं की भव्य शोभायात्रा वीर परिवार के निवास स्थान से प्रारम्भ होकर मणिधारी एनक्लेव, चामराज पेट स्थानक होते हुए मराठा हॉस्टल तक पहुँची। शोभायात्रा के दौरान मुमुक्षु बहिनों द्वारा वर्षीदान किया गया तथा गगनभेदी नारों के द्वारा पूरा वातावरण गुंजायमान हो रहा था। भव्य जनमेदिनी इस शोभायात्रा में सम्मिलित थी।

शोभायात्रा मराठा हॉस्टल पहुँचकर अभिनन्दन समारोह में परिवर्तित हो गई। समारोह में VTU बेलगाँव के **वाइस-चांसलर माननीय डॉ. प्रकाशचन्द जी खींचा मुख्य अतिथि** के रूप में पधारे। **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष माननीय श्री पी.एस. सुराना** ने समारोह की अध्यक्षता की। भारतीय जनता पार्टी, बैंगलुरू के कोषाध्यक्ष **माननीय श्री लहरसिंह जी सिरोया**, जैन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के मुख्य मार्गदर्शक **माननीय श्री के.एस. शांतामणि** व शासन सेवा समिति के सह-संयोजक **माननीय श्री कैलाशचन्द जी हीरावत** विशिष्ट एवं सम्माननीय अतिथि के रूप में पधारे। चारों वीर माता-पिता, दीक्षा महोत्सव प्रमुख **श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल**, दीक्षा संयोजक **श्री उत्तमचन्द जी भण्डारी, बैंगलोर** रत्नसंघीय **अध्यक्ष श्री यशवंतराज जी सांखला**, मंत्री **श्री रमेश जी गुंदेचा** के साथ सभी संघों के संघाध्यक्ष मंचासीन होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे। दीक्षार्थी बहिनों को अभिनन्दन-पत्र एवं दीक्षार्थी बहिनों के परिवारजनों को रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन प्रदान कर उनका भावभरा बहुमान किया गया। सभी मुमुक्षुओं ने संसार की असारता एवं संयम जीवन के सार से युक्त उद्गारों से धर्मसभा को संबोधित किया। अभिनन्दन समारोह के दौरान ही बैंगलोर एवं कर्नाटक प्रांतीय पारिवारिक निर्देशिका का विमोचन डॉ. प्रकाशचन्द जी खींचा एवं श्री लहरसिंह जी सिरोया के कर-कमलों द्वारा किया गया।

15 मई 2010

शनिवार, 15 मई को महाभिनिष्क्रमण यात्रा सभी मुमुक्षुओं के निवास स्थान से प्रारम्भ होकर चामराज पेट स्थानक आई, जहाँ महासती **श्री ज्ञानलता जी म.सा.** ने सभी मुमुक्षुओं को मंगल आशीष प्रदान कर मांगलिक श्रवण

करवाया तथा वेष परिवर्तन हेतु संकेत किया।

महासती श्री प्रतिष्ठाजी म.सा. ने "दीक्षा रो लाग्यो है मैलो.." भजन के माध्यम से धर्मसभा को बांधे रखा। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए **महासती श्री संगीताश्री जी म.सा.** ने फरमाया कि धर्मसभा व मनुष्य जीवन दुर्लभ है। मनुष्य जीवन ही ऐसा जीवन है जिसमें जीव जन्म-मरण के चक्र से उबर सकता है। **महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा.** ने फरमाया कि एक धर्मसाधना जीवन के सभी पापों को नष्ट कर देती है और एक पापकर्म धर्मसाधना के सभी पुण्यों को नष्ट कर देता है। इसलिए पाप कर्मों से बचकर संयम पथ अपनाना चाहिए। **महासती श्री प्रतिष्ठा जी म.सा.** ने फरमाया कि संयम जीवन हीरे-जवाहरात से भी अधिक मूल्यवान होता है। जो मनुष्य संयम को अपनाता है वह लाखों भवों से छुटकारा पा सकता है। **महासती श्री चारित्रलता जी म.सा.** ने फरमाया कि आज का दिन पावन है, चार-चार चारित्रिक आत्माएँ दीक्षा ग्रहण करने जा रही है, ये दूसरा जन्म धारण करने जा रही है।

वेष परिवर्तन कर मुमुक्षु बहिनें महासती-मण्डल के समक्ष पहुँची। वीर परिवारों एवं संघ के पदाधिकारियों से आज्ञा प्राप्त कर **महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** ने 'करेमि भंते' के पाठ का उच्चाण करवाया। दीक्षा विधि सम्पन्न होते ही जय-जयकारों से पूरा वातावरण गुंजायमान हों गया। दीक्षा के पावन प्रसंग पर श्री सुखराज जी कानुंगा एवं उनकी धर्मपत्नी (महासती श्री प्रीति जी म.सा. के सांसारिक छोटे दादाजी-दादीजी) ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा फरमाये गये कल्याणकारी भावों का वाचन किया गया-

"युगमनीषी, युगद्रष्टा, महामहिम जैन जगत् के ज्योतिर्धर आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के पावन चरण रज से पवित्र बनी हुई कर्नाटक की बैंगलोर नगरी की पावन धरा, जहाँ के सुज्ञ-विज्ञ, अनेकता में एकता के सूत्र से बंधे रहने वाले श्रावकरत्नों को स्थानकवासी परम्परा के सर्वप्रथम तृतीय पद अधिष्ठाता महामनस्वी स्व-नाम धन्य गणि गजेन्द्र का स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धर्म के मर्म को समझकर जीवननिर्माण का सुअवसर प्राप्त हुआ। उसी फूलों की नगरी में चार-चार 'ज्ञान' कलिकाओं का 'चारित्र' में चरण बढ़ाना, प्रव्रज्यापथ को स्वीकार करना, भवभंजन हारिणी दीक्षा की शिक्षा को प्राप्त

कर समाधि की ओर अग्रसर होने का 'भाग्योदय' से प्राप्त पावन प्रसंग तन की अनुपस्थिति में भी मन को प्रमुदित करने वाला है।

पावन प्रव्रज्या जीवन की 'प्रतिष्ठा', स्व में स्व की 'निष्ठा' है। सुषुप्त आत्म-शक्तियों के जागरण का 'संगीत' है। आधि, व्याधि, उपाधि को समाप्त कर समाधि को प्राप्त करने की 'भावना' है।

दीक्षा क्रोध को क्षमा से, अहं को विनय से, माया को सरलता से एवं लोभ में संतोषवृत्ति का प्रकटीकरण करने वाली भव्य शिक्षा है। उपसर्ग-परीषहों को जीतने की तितिक्षा है। संवर-निर्जरा की विवक्षा है। संक्षेप में कहा जाय तो दीक्षा-जीवन का सर्वांगीण विकास, सम्पूर्ण कर्मों का नाशकर सिद्धालय में चिर-वास की प्रक्रिया है।

तीर्थेश महावीर के जयवंत शासन में उज्ज्वल विशुद्ध संयम धर्म का पालन करने में निरन्तर गतिमान होने वाले रत्नसंघ में मोक्षमार्ग के 4 चरण रूप 4 घाती कर्मों का क्षय कर अरिहन्त पद प्राप्त करने की अभीष्ट अभिलाषा से संयम पथ पर अग्रसर हो रही इन मुमुक्ष-आत्माओं की संयम यात्रा "आणाए मामगं धम्मं" की आराधना से "समणोऽहं" (समणी) की उक्ति स्वनामवत् स्मृतिपटल पर अंकित करते हुए आचारांग के आगम वचन 'णो लोगस्सेसणं चरे' को आत्मसात् करती रहेंगी, जिससे इनका संयमी जीवन 'यशवन्त' बने, ऐसी मंगल मनीषा है।

चांगोटोला में एक विरक्ता बहिन की भागवती दीक्षा

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. ने विरक्ता बहिन मंगलाजी को वि.सं. 2067 द्वि. वैशाख शुक्ला दशमी रविवार, 23 मई 2010 को जैन स्थानक भवन, चांगोटोला में 'करेमि भंते' के पाठ से दीक्षा प्रदान की। दीक्षा पूर्व 22 मई को प्रातः 8 बजे शोभायात्रा में चांगोटोला के जैन-जैनेत्तर भाई-बहिनों के साथ समीपस्थ ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं ने जय-जयकार के नाद कर शोभायात्रा को भव्यता प्रदान की। मध्याह्न में विरक्ता बहिन एवं वीर परिवार के सम्मान में अभिनन्दन-समारोह का आयोजन रखा गया जिसमें संघ संरक्षक माननीय श्री ईश्वरलाल जी ललवानी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। अभिनन्दन-समारोह की अध्यक्षता रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने की। माननीय श्री रतनलाल जी बाफना, माननीय श्री जयचन्द जी मरलेचा- माननीय श्री दीपकचन्द जी बाफना, माननीय श्री मदनलाल जी बाघमार एवं माननीय श्री

मूलचन्द जी चोरड़िया का सान्निध्य विशिष्ट अतिथि के रूप में प्राप्त हुआ। चांगोटोला श्री संघ एवं रत्नसंघ के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में विरक्ता बहिन को अभिनन्दन-पत्र, वीर परिवार को रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति सम्मान देकर उनका अभिनन्दन किया गया। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के साथ विरक्ता बहिन एवं वीर परिवारजनों का माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर बहुमान एवं पुरुषों को वीरता का प्रतीक चूंदड़ी का साफ़ा एवं बहिनों को चूंदड़ी ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

मध्यप्रदेश के बालाघाट जिलान्तर्गत चांगोटोला में रत्नसंघीय दीक्षा महोत्सव पर स्थानीय क्षेत्र के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं में जबरदस्त उत्साह देखा गया। दीक्षा-महोत्सव में स्थानीय श्री संघ की आत्मीयता-अपनत्व को समारोह अध्यक्ष श्री बोथरा साहब ने अनुकरणीय बताया। मुख्य अतिथि श्री ललवानी साहब एवं विशिष्ट अतिथियों ने विरक्ता बहिन के संयम पथ पर अग्रसर होने पर अपनी-अपनी शुभकामनाओं के साथ विरक्ता बहिन के प्रति मंगल कामना व्यक्त की। विरक्ता बहिन के ओजस्वी विचारों से संयम-साधना के प्रति दृढ़ता की भावना पर उपस्थित जन समुदाय ने प्रमोद व्यक्त किया। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. सहित साध्वी मण्डल ने संयम की महत्ता पर प्रेरक विचार रखे। बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम 30 मई को चांगोटोला में रखने की घोषणा से चांगोटोला श्री संघ में अपार हर्ष है।

नवदीक्षिता साध्वियों की बड़ी दीक्षा सानन्द सम्पन्न

बालोतरा- धर्मधरा बालोतरा में नवदीक्षिता पाँचों साध्वियों को **आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** ने द्वितीय वैशाख शुक्ला नवमी, 22 मई 2010 को नवदीक्षिता साध्वियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ करवाया। **आचार्यप्रवर** ने अपने संक्षिप्त किन्तु प्रभावी उद्‌बोधन में फरमाया कि शिक्षा के पश्चात् दीक्षा की जरूरत है। दीक्षा के बिना शिक्षा जीवन-विकास में उतनी उपयोगी नहीं हो सकती। आगम के शब्द 'जाइसम्पन्ने' पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने फरमाया- यद्यपि जैन धर्म में जाति व कुल को महत्त्व नहीं दिया जाता, इसीलिए तो कहा जाता है कि "कम्मुणा बम्भणो होई"। यह बात होते हुए भी जन्म के साथ जाति व कुल को भी देखा जाता है। क्यों? तो जातिवान ली हुई प्रतिज्ञा को, स्वीकार किए हुए काम को पार लगाता है, पूरा करता है। जातिवान बैल भले ही

कष्ट पा लेगा, उसकी गर्दन झुक सकती है, हड्डी टूट सकती है, किन्तु वह बोझ जो ढो रहा है, उसे पार उतारेगा। जातिवान घोड़ा प्राण तक देकर मालिक की रक्षा करने का प्रयास करता है। यही बात सामायिक-चारित्र के लिए कही जाती है। जाति, कुल और विनय की बात रखी जाती है। बड़ी दीक्षा के लिए ज्ञान और क्रिया की बात भी रखी जाती है। समिति-गुप्ति, नौ तत्त्व, छः काय के साथ प्रकृति की सामंजस्यता, कषायों की उपशमता और आचरण देखा जाता है। जघन्य सात दिन, मध्यम चार माह, उत्कृष्ट छः माह में छेदोपस्थापनीय चारित्र (बड़ी दीक्षा) में आरूढ़ करवाया जा सकता है।

जैन भागवती दीक्षा जो आपने 15 मई को देखी वह थ्योरिटिकल दीक्षा थी, आज छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाया जा रहा है, यह प्रेक्टिकल दीक्षा है। कोई व्यक्ति पुलिस में भर्ती होता है तो उसे ट्रेनिंग दी जाती है। इसी तरह नवदीक्षित संत हो या सती उसे पहले ट्रेनिंग दी जाती है। कैसे बैठना, कैसे खड़ा रहना, कैसे खाना, कैसे पीना, कैसे सोना ये सब ट्रेनिंग के अन्तर्गत देखा जाता है। इन साध्वियों ने सात दिन की ट्रेनिंग में पाँच समिति-तीन गुप्ति, पाँच महाव्रत के पालन के साथ छः काया के जीवों की रक्षा कैसे करना, यह समझ लिया है। इसीलिए इन्हें छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाया जा रहा है।

आचार्यप्रवर ने भूमिका विषयक चिन्तन प्रदान कर नमस्कार महामंत्र से लेकर एक-एक सूत्र पाठ का उच्चारण किया। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम चार अध्ययन के उच्चारण के साथ एक-एक महाव्रत का स्वरूप समझाया। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय विषयक अब तक लगे पापों की निंदा, गर्हा द्वारा शुद्धीकरण के साथ साधक हर क्रिया करते हुए यतना का कैसे ध्यान रखे, चिन्तन प्रस्तुत किया। संसार के सब जीवों को अपने समान समझना, हर प्राणी की प्राण-रक्षा का भाव रखना और सभी जीवों के साथ आत्मवत् व्यवहार करना साधक के लिए क्यों आवश्यक है, विस्तार से समझाया।

आचार्यप्रवर ने जीव-अजीव के स्वरूप के साथ ज्ञान और क्रिया विषयक चिन्तन रखते हुए क्रोध-मान-माया-लोभ से किनारा कर सिद्ध स्वरूप तक की व्याख्या की। सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास के साथ अनुकूलता-प्रतिकूलता में समभावपूर्वक रहकर परीषहजयी बनने की प्रेरणा प्रदान की।

छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाकर आचार्यप्रवर ने नवदीक्षित

साध्वियों का नया नामकरण किया। नवदीक्षिता साध्वी कोमल को **कोमल श्रीजी,** दीपिका को **दीपिका श्रीजी,** समता को **कृपा श्री जी,** ट्विंकल को **तितिक्षाप्रभा जी** और वर्षा को **वर्षाश्रीजी** नाम दिया गया। आचार्यप्रवर ने भरतपुर एवं बैंगलुरू में नवदीक्षिता साध्वियों के नामकरण एवं क्रम का भी निर्धारण किया।

स्थानीय श्रीसंघ के उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति श्रीसंघ की हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के **महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी** ने कहा कि बालोतरा श्रीसंघ की गुरुभक्ति, जागीरदार परिवार की संघनिष्ठा और आप-सबकी सेवाभावना की सुपरिणति है कि रत्नसंघ में पाँच मुमुक्षु बहिनों की 15 मई को जैन भागवती दीक्षा उमंग-उल्लास के साथ संघ की गौरव-गरिमा के अनुरूप सानन्द सम्पन्न हुई।

हम गृहस्थ जैन भागवती दीक्षा को वृहद् आयोजन के रूप में देखते हैं, लेकिन साधु जीवन में छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ होने का नाम है- बड़ी दीक्षा। जब तक बड़ी दीक्षा नहीं होती तब तक नवदीक्षिता साध्वियों को आहार-पानी लाकर दिया जाता है, आज की दीक्षा के बाद सम्मिलित आहार का साम्भोगिक-व्यवहार प्रारम्भ हो जायेगा। अब ये नवदीक्षिता साध्वियाँ गोचरी ला सकती हैं, धोवन पानी ला सकती हैं। दीक्षा के बाद आज तक ये नवदीक्षिता साध्वियाँ परीक्षण काल में रहीं। इनकी योग्यता जान-समझकर इन्हें बड़ी दीक्षा दी जाती है। बड़ी दीक्षा सात दिन पश्चात्, चार माह बाद और छह माह बाद में हो सकती है, यह विधान है।

बालोतरा श्रीसंघ की पुण्यवानी है कि आपको दीक्षा महोत्सव का सुन्दर सुयोग मिला, तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षयं तृतीया का लाभ मिला, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के स्मृति-दिवस पर त्याग-तप और व्रत-प्रत्याख्यान की श्रद्धा समर्पित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो आज बड़ी दीक्षा का आयोजन भी इस धर्मनगरी को प्राप्त हुआ। आपने भक्तिभावना से प्राप्त योग का अच्छा उपयोग कर संघ की जाहोजलाली की, मैं बालोतरा श्रीसंघ के अध्यक्ष/मंत्री सहित सभी अधिकारियों एवं संघ सदस्यों का रत्नसंघ की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं धन्यवाद-साधुवाद देता हूँ अनन्य गुरुभक्त उदारमना संघ-सेवी श्रावकरत्न श्री हनुमानचन्द जी, पृथ्वीराजजी, जवेरीलाल जी, महावीरचन्द जी एवं समस्त सालेचा जागीरदार परिवार की गुरुभक्ति और संघनिष्ठा की भावना पर। आपने तन-मन-धन से और समर्पित भाव से दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम के लाभार्थी के रूप में सुयश प्राप्त किया वहीं आत्मीयता और अपनत्व के साथ साधर्मी वात्सल्य सेवा-लाभ का अनुपम आदर्श उपस्थित किया है। मैं रत्नसंघ की ओर से उदारमना परिवार की भक्ति और सेवाभावना को अनुकरणीय मानता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ।

मैं नवदीक्षिता महासतियाँ जी म.सा. से आशा करता हूँ कि आप ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग, साधना-आराधना के साथ गुरु-गुरुणी की आज्ञा आराधन में और स्व-पर कल्याण में सतत पुरुषार्थ करते हुए अपना लक्ष्य सिद्ध करने में सफलता का वरण करें।

भरतपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के मुखारविन्द से नवदीक्षिता महासती की बड़ी दीक्षा वैशाख शुक्ला नवमी दिनांक 22 मई 2010 को दोपहर 2 बजे श्री जैन महावीर भवन, बासन गेट में सम्पन्न हुई। बड़ी दीक्षा पर महासती मण्डल ने नवदीक्षिता महासती श्री एलिजा जी को दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययनों की वाचनी दी । नवदीक्षिता महासती ने संकल्प लेकर छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकार किया। नवदीक्षिता **महासती जी का नाम विजयश्री** जी रखा गया।

बैंगलोर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से चारों नवदीक्षिता महासतियों जी की बड़ी दीक्षा दिनांक 22 मई को बैंगलोर में सम्पन्न हुई। छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाकर महासती जी ने नवदीक्षित साध्वियों का नया नामकरण किया । नवदीक्षिता साध्वी मंजू जी को **नव्यप्रभा जी,** शिल्पा जी को **भविताश्री जी,** प्रीति जी को **प्रीतिश्री जी,** शिल्पा जी को **शिक्षाश्री** जी नाम दिया गया।

चांगोटोला- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से 30 मई 2010 को शासकीय मिडिल स्कूल, चांगोटोला में नवदीक्षिता साध्वी जी की बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई। छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाकर महासती जी ने नवदीक्षित साध्वी मंगला जी का नाम **मैत्रीप्रभा जी** दिया।

गोटन में श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत अतिथिगृह का उद्घाटन

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन द्वारा नवनिर्मित श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत अतिथिगृह का दिनांक 17 मई 2010 को प्रातः 10.30 बजे तपस्वी बहिन श्रीमती प्रकाशदेवीजी बाफना धर्मपत्नी श्री चैनरूपचन्द जी बाफना के कर-कमलों से विशाल जनसमूह की उपस्थिति में उद्घाटन हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता संघ के कार्याध्यक्ष श्रीमान् गौतमचन्द जी हुण्डीवाल-चेन्नई ने की। वरिष्ठ सुश्रावक सरलमना श्री भंवरलाल जी मुथा- पीपाड़, मुख्य अतिथि एवं श्रीमान् त्रिलोकचन्द जी लुणावत-आचीणा (इन्दौर) एवं संघ के महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी-जोधपुर विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। सम्माननीय अतिथि के रूप में वैष्णव संत श्री गरीबदास जी महाराज, श्रावकरत्न श्री रतनलाल जी कोठारी एवं युवक परिषद् के निदेशक श्री सुमतिचन्द जी मेहता उपस्थित थे। युवासाथी श्री सुरेश जी ओस्तवाल ने आगत अतिथियों का शब्दों से भावभीना स्वागत किया। कार्यक्रम के अन्त में संघमंत्री श्री चैनरूपचन्द जी बाफना ने आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश जी सालेचा ने किया।

कोलकाता में 'आचार्य हस्ती की साधना और विचार-दर्शन' पर व्याख्यान

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता के निमन्त्रण पर इस वर्ष 16 मई 2010 अक्षय तृतीया, रविवार को आचार्य हस्ती की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने 'आचार्य हस्ती की साधना और उनका विचार-दर्शन' विषय पर मुख्यातिथि के रूप में सम्बोधित किया। डॉ. जैन ने कहा कि आचार्य हस्ती महान् आध्यात्मिक सन्त एवं उत्तम दार्शनिक थे। उनके विचार प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को समुन्नत बनाने के साथ उसके सामाजिक जीवन को भी सुन्दर बनाने में सक्षम हैं। आचार्य हस्ती ने बालकों में संस्कारों के वपन की बात मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत की तो युवकों को भी धर्म से कुशलतापूर्वक जोड़ा। महिलाओं में क्रान्तिकारी वैचारिक परिवर्तन हुए तो श्रावकों को भी उन्होंने दायित्व बोध कराया। आचार्य हस्ती ने स्वाध्याय के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को प्रकाश से भरना चाहा तो सामायिक के द्वारा उसको चित्त से

शान्त बनाना चाहा। वे अप्रमत्त एवं सजग साधक थे। ध्यान, मौन, जाप आदि के साथ साहित्य-साधना में भी सन्नद्ध रहे तो जन-जन को व्यसनमुक्त एवं सम्यक् सोच से युक्त बनाने हेतु प्रयत्नशील रहे। डॉ. जैन ने कहा कि आचार्य हस्ती का वैचारिक स्तर उच्च एवं प्रस्तुति सरल थी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता के अध्यक्ष श्री सरदारमल जी कांकरिया ने की। जैन सभा के ट्रस्टी श्री रिखबदास जी भंसाली एवं युवा उद्योगपति, समाजसेवी श्री जितेन्द्र जी मेहता विशिष्ट अतिथि थे। कांकरिया सा एवं श्री भंसाली सा ने आचार्य हस्ती एवं आचार्य हीरा के साधनाशील एवं वैचारिक उदात्त जीवन का महत्त्व प्रतिपादित किया। कोलकाता संघ के महामंत्री डॉ. गुमानसिंह जी पीपाड़ा ने अतिथियों एवं समागतों के प्रति स्वागत वचन कहे तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. निर्मला जी पीपाड़ा ने कुशलतापूर्वक किया। डॉ. देवराज बोहरा ने भी विचार प्रकट करते हुए आचार्य श्री की करुणाशीलता को रेखांकित किया। कार्यक्रम में अक्षयतृतीया विषयक लघुनाटिका प्रस्तुत की गई। भाविनी एवं प्रतिभा जी मेहता ने प्रभावी भजन प्रस्तुत किए। श्री दिलीप जी मेहता ने सामूहिक वन्दना करायी एवं अन्त में आचार्य महाप्रज्ञ जी को भी श्रद्धांजलि दी गई।

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 1 अगस्त को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 14 तक की आगामी परीक्षा 1 अगस्त 2010, रविवार को दोपहर 12.30 से 03.30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

1. नये व पुराने सभी परीक्षार्थियों को आवेदन-पत्र भरना आवश्यक है। आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में 30 जून 2010 तक जमा कराना अनिवार्य है। गत परीक्षा में जिन्होंने भाग लिया है, उसकी दिनांक, कक्षा एवं प्राप्तांक अवश्य भरें ताकि आगामी परीक्षा हेतु अनुमति देने में शिक्षण बोर्ड कार्यालय को सुविधा रहे।
2. यदि किसी परीक्षार्थी अथवा केन्द्राधीक्षक को आवेदन-पत्र, पुस्तकें आदि की आवश्यकता हो तो तुरन्त बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करें।
3. आवेदन-पत्र ऑनलाइन शिक्षण बोर्ड की वेबसाइट www.jainratnaboard.com पर भी भर सकते हैं।

4. शिक्षण बोर्ड के ईमेल info@jainratnaboard.com पर भी परीक्षा सम्बन्धी जानकारी भेज सकते हैं।
5. आवेदन-पत्र भरते समय परीक्षार्थी अपना मोबाइल नम्बर, ई-मेल आदि अवश्य भरें ताकि उन्हें परीक्षा के रोल नम्बर, परीक्षा परिणाम आदि की जानकारी SMS तुरन्त ही उपलब्ध कराई जा सके।

सम्पर्क सूत्र- श्रीमती सुशीला जी बोहरा, संयोजक-9414133879, श्री राजेश कर्नावट, सचिव- 9414128925, श्री धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-9351589694, कार्यालय-0291-2630490

'सुचरित्रम्' पर खुली किताब प्रतियोगिता

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शांत क्रान्ति जैन श्रावक संघ, उदयपुर एवं चेन्नई शाखा द्वारा आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. विरचित 'सुचरित्रम्' पुस्तक पर खुली किताब प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इसमें प्रथम पुरस्कार 21000/-, द्वितीय पुरस्कार 11000/-, तृतीय पुरस्कार 5000/- चतुर्थ पुरस्कार 2000/- तथा 100 प्रतियोगियों को 200/- (प्रत्येक) का प्रोत्साहन पुरस्कार देय है। सभी उत्तीर्ण प्रतियोगियों को भी पुरस्कार दिया जाएगा। प्रश्नपुस्तिका भरकर जमा करवाने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त 2010 है। सुचरित्रम् पुस्तक का मूल्य 200/- एवं प्रश्नपुस्तिका 50/- तथा डाक द्वारा मंगवाने पर पुस्तक का मूल्य 270/- व प्रश्नपुस्तिका 60/- है। **सम्पर्क सूत्र -** Shree Akhil Bhartiya Jay Jain Tatwa Gyan Abhiyan Sansthan, Chennai B.O. 12, Veerappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.) Tel. 044-25381892, 09840894777 (M.)

अध्यात्म चेतना वर्ष में अनेक कार्यक्रम

सौन्दती- 'आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी' के अवसर पर गीत-गायन प्रतियोगिता का आयोजन 21 अप्रेल 2010 को किया गया, जिसमें 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में 100-150 सामायिक तथा 1 घंटे नवकार मंत्र का जाप हुआ। प्रतियोगिता में डिम्पल तातेड़-प्रथम, प्रियंका राणमल जी लुंकड़ा-द्वितीय, मयूरी एवं दिया गोगड़-तृतीय स्थान पर रहीं। अनाथ आश्रम की 25 बच्चियों को नवकार मंत्र सिखाया गया। 19 अप्रेल 2010 को आयोजित नवकार मंत्र के शुद्ध उच्चारण व लेखन-प्रतियोगिता में कल्पना-प्रथम, विद्या-द्वितीय और गीता-तृतीय स्थान पर रहीं।

बैंगलुरु- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, बैंगलुरु द्वारा आध्यात्मिक, सामाजिक एवं पारिवारिक चेतना जगाने के लिए तथा अहिंसक जीवनशैली को अपनाने के लिए महिलाओं के समक्ष सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण में होने वाली क्रूरता के बारे में जानकारी एक प्रोजेक्टर के माध्यम से सचित्र प्रस्तुत की गई। इस कार्यक्रम को देखकर 150 महिलाओं ने अपनी मर्यादाओं के अनुसार त्याग-पत्र भरे। इस प्रोजेक्ट को श्री दिनेश जी एवं सीमा जी भंसाली ने तैयार किया। अध्यात्म-चेतना वर्ष पर एक नवीन कार्यक्रम करने का प्रयास महिलाओं द्वारा किया गया।

जलगाँव- आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के सुअवसर पर श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जलगाँव ने प्रतिमाह प्रथम रविवार दोपहर 3 से 4.30 बजे तक नवकार महामंत्र का जाप एवं गुरु-गुणानुवाद करने का संकल्प लिया, जिसका शुभारम्भ 2 मई 2010 को बड़ी संख्या में गुरु भक्त भाई-बहिनों की उपस्थिति में सुन्दर आयोजन के साथ हुआ। इस कड़ी में युवक परिषद् के सदस्यों ने घर-घर जाकर प्रति रविवार एक सामायिक हेतु स्वाध्याय भाऊ मण्डल में आने की प्रेरणा की। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा से स्थापित स्वाध्याय भाऊ मण्डल का सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम प्रति रविवार को विगत दस वर्षों से निरन्तर गतिमान है।

उदयपुर- आचार्य हस्ती तथा उपाध्याय पुष्कर मुनि जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उदयपुर की साहित्यिक संस्था युगधारा की ओर से 16 मई 2010 को थियोसोफिकल सोसायटी सभागार में 'संत और साहित्यकार' विषय पर साहित्य संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम संयोजक डॉ. दिलीप धींग ने विषय प्रवर्तन करते हुए दोनों ही संत महापुरुषों के जीवन की खूबियाँ बताईं तथा साहित्य में अहिंसा व अध्यात्म से जुड़े मूल्यों को स्थान देने का आग्रह किया। कितने ही रचनाकारों ने पहली बार आचार्य हस्ती के बारे में कुछ जाना। इस अवसर पर साहित्य में अध्यात्म-चेतना के समावेश के लिए चण्डीगढ़ की लेखिका लक्ष्मी रूपल का अभिनन्दन किया गया। मुख्य अतिथि कथाकार अनुपम सक्सेना ने कहा कि साहित्यकार संत से जुड़ेगा तो उसका साहित्य ऊर्जावान और कालजयी बनेगा। रचनाकारों को गजेन्द्र व्याख्यानमाला पुस्तकें दी गईं।

उदयपुर- अहिंसा विचार मंच के अध्यक्ष डॉ. दिलीप धींग के सत्प्रयासों से आचार्य हस्ती के आचार्य पदारोहण दिवस (अक्षय तृतीया) पर उदयपुर में अहिंसा

दिवस घोषित हुआ तथा 16 मई 2010 को उदयपुर नगर परिक्षेत्र में समस्त बूचड़खाने बन्द रखे गए। अक्षयतृतीया को अगता दिवस घोषित करने में नगर परिषद्, उदयपुर की सभापति श्रीमती रजनी डांगी का विशेष सहयोग रहा।

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर- जोधपुर में निवास करने वाले रत्नसंघीय परिवारों की जानकारी हेतु ''जोधपुर रत्नसंघीय निर्देशिका द्वितीय संस्करण'' प्रकाशित हुआ है। निर्देशिका में रत्नसंघीय परिवारों की महत्त्वपूर्ण जानकारियों का समावेश किया गया है।

ब्यावर- दिनांक 18 मई से 30 मई 2010 तक बालक-बालिकाओं का धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर ब्यावर में आयोजित हुआ। उक्त शिविर में 136 शिविरार्थियों ने भाग लेकर सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल के साथ ही कई शास्त्रों एवं विषयों का गूढ़ ज्ञान प्राप्त किया। श्री विजयराज जी कोठारी इस शिविर के संयोजक थे। श्री अमित जी बाफना द्वारा शिविर में विशेष सहयोग के साथ ही श्री विमलचन्द जी सुराणा, मनीष जी मेहता, दिलीप जी भण्डारी, नौरतनमल जी बोथरा, लक्ष्मीचन्द जी भण्डारी आदि का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

बैंगलुरु- श्री साधुमार्गी जैन संघ, बैंगलोर द्वारा सप्तदिवसीय ज्ञान चेतना संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 410 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

लासलगांव- श्री महावीर जैन विद्यालय के वसतीगृह में 15 जून 2010 से कक्षा 5 से 10वीं तक, कक्षा 11व 12वीं (आर्ट्स, कॉमर्स, साइन्स) के छात्रों एवं आई.टी.आई. के छात्रों के लिए प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। होनहार एवं आर्थिक स्थिति से कमजोर छात्रों को सहयोग भी दिया जाएगा। **सम्पर्क सूत्र**- श्री महावीर जैन विद्यालय, लासलगाँव, ता. निफाड़, जिला-नासिक (महा.), फोन नं. 02550-266358

वैशाली- प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली द्वारा महावीर जयन्ती के अवसर पर 28 मार्च 2010 को जगदीशचन्द्र माथुर स्मृति व्याख्यानमाला सम्पन्न हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' पूर्व महाविद्यालय निरीक्षक, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज्फ्फरपुर ने की तथा प्रो. रामकिशोर सिंह, अध्यक्ष, दर्शन विभाग, लंगर सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर मुख्य वक्ता थे। व्याख्यानमाला में 1. प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली के स्वर्ण जयन्ती गौरव ग्रन्थ 2. तिलोयपण्णत्ति का

सांस्कृतिक अध्ययन 3. माइग्रेशन इन बिहार : ए सोशियो डेमोग्रेफिक एनालिसिस' - इन तीन पुस्तकों का लोकार्पण हुआ।

कोरा (सिकन्द्राबाद)- श्रमण संघीय उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी म.सा. 'भीम' आदि ठाणा 5 तथा महासती श्री कंचनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 की निश्रा में मुमुक्षु मोनिका तातेड़ और मंजु तातेड़ की दीक्षा सम्पन्न हुई।

बधाई/चुनाव

चेन्नई- सुश्री रक्षा सुपुत्री सरिता-प्रेमचन्द जी बाघमार ने तमिलनाडू मेट्रिकुलेशन बोर्ड+2 की परीक्षा में 98.25 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। आपने लेखाशास्त्र (एकाउन्ट्स) और गणित में शतप्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं। इसी परीक्षा में श्री गौरव सुपुत्र किरण-राजेन्द्र जी बाघमार ने 97.6 प्रतिशत अंक अर्जित किए तथा लेखाशास्त्र (एकाउन्ट्स) में उन्होंने शत प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। आप दोनों स्व. श्रीमती उगमादेवी-घीसूलाल जी बाघमार के सुपौत्री एवं सुपौत्र हैं।

फतेहगढ़- श्री रोहित डांगी पुत्र श्री रिखबचन्द जी डांगी एवं सुपौत्र धनराज जी डांगी ने सी.ए. एवं सी.एस. में प्रथम श्रेणी प्राप्त की। वर्तमान में आप पी.डब्ल्यू.सी., मुम्बई में कार्यरत हैं।

जोधपुर- युवारत्न श्री अंकित जी भण्डारी (सोफ्टवेयर इंजीनियर) सुपुत्र श्री

लखपतचन्द जी भण्डारी ने डेनवर, अमरीका में Next Genration VOIP Techonology विषयक सेमिनार में भाग लिया। साध्वीप्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. के आप सांसारिक भतीजे हैं।

जोधपुर- सुश्री शिवांगी चौपड़ा सुपुत्री श्रीमती अनुपूर्णा-महीपतराज जी चौपड़ा

(सुपौत्री श्रीमती संतोष देवी-नरपतराज जी चौपड़ा, पूर्व मंत्री, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर) जोधपुर ने सी.बी.एस.ई. की सैकेण्डरी परीक्षा सभी विषयों में ए1 ग्रेड से उत्तीर्ण की है। सुश्री शिवांगी प्रतिभाशाली एवं धार्मिक रुचिशील छात्रा है। आप आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाएँ भी नियमित रूप से देती रहती है।

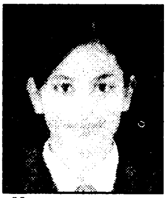

जोधपुर- सुश्री पूजा मेहता सुपुत्री श्रीमती चन्द्रा-कुलदीप जी मेहता (सुपौत्री श्रीमती उत्तम-श्री अर्जुनराज जी मेहता(रामसा) ने सी.बी.एस.ई. की सैकेण्डरी परीक्षा सभी विषयों में ए 1 ग्रेड से उत्तीर्ण की। आप स्व. श्री माणकराज जी मेहता की पड़पौत्री हैं।

बैंगलुरु- सुश्री मीनल मेहता पुत्री श्री सज्जनराज जी मेहता ने पी.यू.सी. द्वितीय वर्ष में 95.66 प्रतिशत अंक तथा सांख्यिकी में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

बैंगलुरु- सुश्री मेघा भंसाली पुत्री श्री कैलाश जी भंसाली ने पी.यू.सी. द्वितीय वर्ष में 95.33 प्रतिशत तथा तीन ऐच्छिक विषयों में शत प्रतिशत अंक अर्जित किए।

सूरत- सुश्री रिद्धि पुत्री श्री निहालचन्द जी नाहर एवं सुपौत्री श्रीमती विजयकंवर-श्री सोहनलाल जी नाहर ने बी.कॉम. परीक्षा में वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी में तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

जोधपुर- सुश्री मेघना मेहता पुत्री श्री अनिल कुमार मेहता एवं सुपौत्री श्री अमरमल

जी मेहता ने 12वीं (सीबीएसई) में 93 प्रतिशत अंक एवं बिड़ला पब्लिक स्कूल, दोहा-कतर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्कूल की ओर से उन्हें चार गोल्ड मेडल एवं 25000/- की राशि दी गई।

जोधपुर- श्री रचित भंडारी सुपुत्र श्री सुरेश जी-रचना जी भंडारी एवं सुपौत्र श्री

बदेहचन्द जी, जोधपुर ने सी.बी.एस.ई. की सैकेण्डरी परीक्षा सभी विषयों में ए1 ग्रेड से उत्तीर्ण कर सेंट ऐन्स स्कूल में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के संयुक्त मंत्री श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी के दौहित्र हैं।

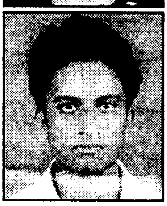

मालपुरा (टोंक)- श्री सिद्धार्थ जैन सुपुत्र श्रीमती सूरज-सुशील कुमार जी जैन ने सीनियर सैकेण्डरी (वाणिज्य) अजमेर बोर्ड में 89.38 प्रतिशत अंक प्राप्त कर राजस्थान में 12वाँ स्थान प्राप्त किया है।

पीपाड़- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पीपाड़ शाखा के चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष श्री प्रसन्नराज जी मुथा (परेशजी), उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र जी चौधरी, मंत्री श्री सुरेन्द्र जी गुन्देचा, कोषाध्यक्ष श्री निर्मल

जी चोरडिया तथा सहमंत्री श्री पदम जी लुणावत का मनोनयन किया गया।

जयपुर- सुश्रावक गुरुभक्त श्री प्रमोद जी लोढ़ा 8 मई 2010 को ज्वैलर्स ऐसोसिएशन, जयपुर के सम्पन्न चुनावों में कोषाध्यक्ष पद पर विजयी रहे हैं।

चेन्नई- श्री एस.एस. जैन संघ, साहुकार पेट की कार्यकारिणी सभा में 30 अप्रेल 2010 को श्री चुन्नीलाल जी बाघमार अध्यक्ष पद के लिए चुने गये। उन्होंने उपाध्यक्ष पद पर श्री गौतमराज जी सुराणा एवं श्री उत्तमचन्द सा खारीवाल को, मंत्री पद पर श्री मनोहरमल जी कोठारी को तथा कोषाध्यक्ष पद पर श्री गौतमचन्द जी मुथा को मनोनीत किया है।

मुम्बई- अभी हुए चुनावों के अन्तर्गत श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई का अध्यक्ष श्रीमान् रायचन्द जी हीरावत को सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया है। श्री जैन रत्न युवक परिषद्, मुम्बई के अध्यक्ष के रूप में श्री बसंतराज जी जैन को तथा मंत्री के रूप में श्री विरेन्द्र जी डागा को मनोनीत किया गया। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, मुम्बई की अध्यक्ष श्रीमती मंजू जी जैन को तथा मंत्री श्रीमती देवबाला जी भंडारी को मनोनीत किया गया।

श्रद्धाञ्जलि

श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी का संथारापूर्वक स्वर्गगमन

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 दिनांक 23 मार्च को प्रातः नए स्थानक भवन से विहारकर नवकार कॉलोनी बालोतरा पधारे। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 का भी नए स्थानक भवन से आसोतरा की ओर 23 मई को प्रातः विहार हुआ। सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 नए स्थानक, बालोतरा विराजमान थे कि 23 मई को रात्रि एवं 24 मई के ब्रह्ममुहूर्त में प्रातः लगभग 03.15 बजे श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. का संथारे के साथ स्वर्गगमन हो गया।

श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. का स्वास्थ्य 23 मई को सामान्य था। वे आचार्यप्रवर को विहार कराने भी पधारे, सायं प्रतिक्रमण पश्चात् शास्त्र-स्वाध्याय का नित्य की भांति क्रम यथावत् बना रहा। रात्रि में श्वास की तीव्रता जान-देखकर

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने करवट बदलवाने, कपड़े से शरीर पौंछने जैसी प्रक्रिया से स्वास्थ्य-लाभ पहुँचाने का प्रयास किया, साथ-ही-साथ श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. से पृच्छा की कि आप संथारे के प्रत्याख्यान करना चाहें तो करवाये जा सकते हैं। आत्मार्थी श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. ने संथारा ग्रहण करने की स्वीकृति प्रदान की तो तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. से परामर्श कर सागारी संथारा करवाया। संथारालीन मुनि श्री को आत्म-जागरणा में सहायक शास्त्र स्वाध्याय का सम्बल देने का भी रात्रि में बराबर लक्ष्य रखा गया।

आत्मार्थी संतरत्न के संथारा सीझने की सूचना 4 बजे के लगभग एक-दूसरे को एक-दूसरे के माध्यम से पहुँचनी प्रारम्भ हुई। इस कारण आसपास के ग्राम-नगरों के भक्तजन बालोतरा पहुँचने लगे। श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. के सांसारिक सुपुत्र एवं परिवारजन भी चेन्नई से दिल्ली एवं दिल्ली से जोधपुर हवाई यात्रा के माध्यम से पहुँचे और अन्तिम संस्कार में पहुँचकर पार्थिव देह को मुखाग्नि दी।

बालोतरा श्रीसंघ के द्वारा अपराह्न करीब 3.30 बजे जय-जयकारों का जयघोष करते हुए पार्थिव देह को चांदी से निर्मित बैकुण्ठी में बैठाकर नए स्थानक भवन से शहर के प्रमुख बाजारों से होकर ओसवाल स्वर्गाश्रम ले जाया गया जहाँ पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार किया। बालोतरा शहर में हजारों लोगों ने मुनिश्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। पार्थिव देह के दाह संस्कार तक नमस्कार महामंत्र एवं लोगस्स का जाप चलता रहा।

जनसमुदाय ने नए स्थानक भवन पहुँचकर आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण की।

दिनांक 25 मई 2010 को स्थानक भवन में श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. के प्रति श्रद्धा समर्पित करने हेतु गुणानुवाद सभा का आयोजन रखा गया, जिसमें उनके जीवन को रेखांकित किया गया। उसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है-

झाक (बिलाड़ा) में पौष माह की पूर्णिमा को वि.सं. 1998 में जन्मे श्री बाबूलाल जी सुराणा सुपुत्र श्री हस्तीमल जी सुराणा ने चैत्र शुक्ला द्वितीया चतुर्थी वि.सं. 2059 दिनांक 17 अप्रेल 2002 को घोटी (महा.) में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की तथा दीक्षा

के अनन्तर उनका नाम 'बलभद्रमुनि' रखा गया। संयम जीवन के आठ वर्षों में उन्होंने आगम स्वाध्याय एवं सेवा के क्षेत्र में अच्छी छवि अंकित की। उत्तराध्ययन सूत्र, नन्दीसूत्र, दशवैकालिक, सुखविपाक आदि कई आगम उन्हें कण्ठस्थ थे। थोकड़े सीखने-सिखाने में उनकी विशेष रुचि थी। छहों कर्मग्रन्थों के ज्ञाता सन्त थे। वे संयम के प्रति जागरूक एवं अप्रमत्त साधक थे। आठों चातुर्मास आचार्यप्रवर की सन्निधि में बालकेश्वर-मुम्बई, इचलकरंजी, बैंगलोर-शूले, चेन्नई-वैपेरी, बंगारपेट, बीजापुर, मुम्बई (कांदिवली) एवं पालड़ी-अहमदाबाद में हुए। दीक्षा के पूर्व वे एक अच्छे स्वाध्यायी थे तथा पर्युषण में सेवा देने गए थे।

गुणानुवाद सभा में आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के साथ संघ पदाधिकारियों एवं भक्तजनों ने भी स्वर्गस्थ मुनि के गुणकीर्तन-गुणस्मरण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। जोधपुर, जयपुर, अजमेर, पाली, नागौर, सवाईमाधोपुर, अलीगढ़-रामपुरा आदि अनेक स्थानों पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर दिवंगत मुनिश्री को श्रद्धांजलि दी गई एवं उनका गुणानुवाद किया गया। मुनिश्री की रिक्तता का सबको अनुभव होता रहेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ का देवलोकगमन

तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 9 मई को अपराह्न 90 वर्ष की वय में राजस्थान के सरदारशहर में देहावसान हो गया। 10 मई की शाम उनकी पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार किया गया। झुंझनु जिले के टमकोर ग्राम में जन्मे बालक नथमल ने 29 जनवरी 1931 को आचार्य कालूगणी के पास 11 वर्ष की वय में विद्याध्ययन किया तथा अपनी प्रज्ञा एवं मेधा के बल पर सन् 1978 में वे महाप्रज्ञ कहलाए। वे विद्वान्, साधक एवं विचारक संत थे। प्राकृत, संस्कृत एवं हिन्दी में उनकी अनेक कृतियाँ हैं। आचारांग पर उन्होंने भाष्य लिखा तथा साधारण पाठकों के लिए उनकी अनेक उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हैं। प्रेक्षाध्यान एवं जीवन-विज्ञान के प्ररूपण में उनकी महती भूमिका रही। आचार्य तुलसी के वे समर्पित शिष्य थे। उनमें गहन एकात्मता थी। आचार्य तुलसी द्वारा प्रारम्भ किए गए अणुव्रत आन्दोलन में उनकी प्रमुख भूमिका रही। सन् 1979 में वे युवाचार्य बने तथा सन् 1995 में आचार्य पद पर अभिषक्त हुए। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के साथ उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई- The nation and the family. आचार्य महाप्रज्ञ के पश्चात् मुनि महाश्रमण को आचार्य बनाया गया है।

चेन्नई- संघ संरक्षक, सरलस्वभावी, श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, उदारमना सुश्रावक

श्री कनकमल जी चोरडिया पुत्र स्व. श्री कल्याणमल जी चोरडिया का 90 वर्ष की आयु में 14 मई 2010 को सायंकाल 7.40 बजे संथारापूर्वक समाधिभावों में देहावसान हो गया। आपने ज्ञानवान, क्रियानिष्ठ एवं परम्परा के विज्ञ श्रावक के रूप में पहचान बनाई। आप स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, साहुकार पेट-चेन्नई के दो बार अध्यक्ष रहे तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-चेन्नई के लम्बे समय तक अध्यक्ष रह चुके थे। पिछले 30 वर्षों से व्यापार से निवृत्ति लेकर आप अपना अधिकांश समय व्रत-प्रत्याख्यान और सामायिक-स्वाध्याय में व्यतीत करते थे। श्री चोरडिया सा में व्रतों के प्रति सजगता, नियमों में दृढ़ता, तप में तत्परता, जीवन में सरलता, लक्ष्मी की सदुपयोगशीलता, गुरु के प्रति समर्पण एवं संघ के प्रति एकनिष्ठता जैसे आदर्श श्रावक के गुण विद्यमान थे। वर्ष 1969 से 1991 तक आप प्रतिवर्ष नियमित रूप से परमश्रद्धेय स्व. आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के चातुर्मास में दो मास से अधिक सेवा में रहकर साधना किया करते थे। आपके लम्बे समय से रात्रि चौविहार के प्रत्याख्यान थे। प्रत्येक चतुर्दशी को प्रायः पौषध के साथ उपवास एवं अन्य पर्व तिथियों पर एकासन, दया एवं आयंबिल करते थे। चेन्नई एवं जोधपुर की अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं से आप तन-मन-धन से जुड़े हुए थे। आपकी स्मृति में चेन्नई, बैंगलोर एवं जोधपुर श्रीसंघों ने श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और समाज के अनेक महानुभावों ने उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

इचलकरंजी- गुरुभक्त धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री धनराज जी मुथा सुपुत्र श्री

चुन्नीलाल जी मुथा (पीपाड़ शहर) का 29 अप्रेल 2010 को 78 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, सेवा, सादगी एवं मृदुभाषी आदि गुणों से सुवासित था। आपने 45 वर्ष की उम्र में सजोड़े शीलव्रत अंगीकार कर लिया था। आपका अधिकांश समय धर्म-आराधना एवं ज्ञान-ध्यान में व्यतीत होता था। आप अपने पीछे पत्नी श्रीमती विद्यादेवी, पुत्र लादुजी एवं पौत्र राहुल, हर्ष आदि का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

चेन्नई- सुश्राविका श्रीमती मोहनीदेवी छाजेड़ धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचन्द जी

छाजेड़ (नागौर निवासी) का 10 अप्रेल 2010 को हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। आपने एक से ग्यारह की लड़ी, वर्द्धमान तप, तीर्थंकर तप, दो वर्ष लगातार एकान्तर, पिछले 28 वर्ष से चौविहार आदि अनेक तपस्याएँ की थीं। प्रतिदिन 5 से ज्यादा सामायिक, पोरसी, एकासन करती थीं। आपके संस्कारों की ही देन है कि आपके पुत्र पदमचन्द जी सैदांपेट जैन संघ, एस.एस. जैन संघ के मंत्री हैं तथा वे वहाँ पधारने वाले सभी संत-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहते हैं। आपके जंवाई श्री सुधीरकुमार जी सुराणा क्रोमपेठ संघ के मंत्री, स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई के सह-संयोजक तथा आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति के सह संयोजक के रूप में संघ की सेवा कर रहे हैं।

जोधपुर- श्रीमती ताराकंवर गांग धर्मपत्नी स्व. श्री हुकमराज जी गांग का 22

अप्रेल 2010 को 92 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आपने दस बार अठाई, दो बार दस की तपस्या एवं वर्षीतप किए हैं। आप नित्य छह सामायिक करती थीं। आप अपने पीछे दो पौत्र एवं चार पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

दिल्ली- समाजसेवी, कर्मयोगी सुश्रावक श्री खूबचन्द जी जैन (तातेड़) सुपुत्र स्व.

श्री गोपालचन्द जी जैन का 84 वर्ष की वय में दिनांक 03 मई 2010 को देहावसान हो गया। आप सौम्य प्रकृति एवं धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत सुश्रावक थे। नित्य सामायिक, साधु-साध्वी के दर्शन, प्रवचन-श्रवण का लाभ लेते थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

भरतपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री विरेन्द्र जी जैन (कोठारी) का 11 मई 2010 को

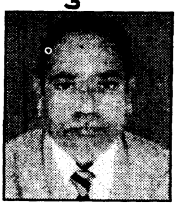

देहावसान हो गया। आप श्री वर्द्धमान श्वे. स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, भरतपुर के स्तम्भ थे और पिछले 10 वर्षों से मंत्री पद का निर्वहन कर रहे थे। आपके मंत्री पद के काल में ही 20 वर्ष के पश्चात् भरतपुर में सन् 2005 में महासती सौभाग्यवती जी म.सा. के चातुर्मास का लाभ मिला और सन् 2010 में विरक्ता बहन एलिजा का दीक्षा प्रसंग का सौभाग्य मिला। आपकी गुरु हस्ती व गुरु हीरा के प्रति अनन्य श्रद्धा

व भक्ति थीं। आप वर्ष में एक बार आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन का लाभ अवश्य लेते थे।

भरतपुर- वरिष्ठ सुश्रावक श्री प्रेमचन्द जी जैन (पहरसर वाले) का 72 वर्ष की

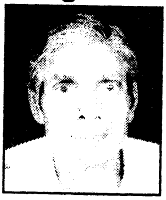

उम्र में 20 मई 2010 को देहावसान हो गया। आप पर्युषण में स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने जाते थे। आपकी गुरु हस्ती, गुरु हीरा के प्रति निष्ठा थी। आप वर्द्धमान श्वे. स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, भरतपुर के अध्यक्ष रहे थे। आपके दोनों पुत्र भी संत-सतियों की सेवा में अग्रणी रहते हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोडकर गए हैं।

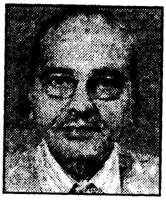

आगरा- सेवाभावी सुश्रावक श्री विरेन्द्र कुमार जी गादिया का 12 मई 2010 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता एवं सादगी से परिपूर्ण था तथा समाज सेवा के लिये सदैव तत्पर रहते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

क्या कहेंगे लोग

जमाने का रंग-ढंग अजब का है,
अजब का क्या सुनाऊँ गजब का है।
दुनिया में आज का ये सबसे बड़ा रोग,
ऐसा नहीं करूँगा तो क्या कहेंगे लोग।।

घर की हालत भले होवे खस्ता,
मेहमानों के नाश्ते में काजू पिस्ता।
कार, टी.वी., फ्रीज का वो करे उपयोग,
ऐसा नहीं करूँगा तो क्या कहेंगे लोग।।

साथियों का जैसा वह संग पाता है,
दुनिया के रंग में वह रंग जाता है।
कर्ज सिर चढ़ा के भी लगाता है भोग,
ऐसा नहीं करूँगा तो क्या कहेंगे लोग।।

संकलन : श्री धीरज डोसी, जोधपुर

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

5000/- विदेश में जिनवाणी की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

136-F SHRI RAJEEV JI JAIN, ELTCOH CITY,MD-21042 (USA)

5000/- जिनवाणी की आजीवन संरक्षण-सदस्यता हेतु प्रत्येक

115 श्री विजय कुमार जी सुराणा (नागौर वाले), कोलकात्ता (पश्चिम बंगाल)

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

715 SHRI LALCHAND JI GOGAD, Balhongal,Belgaon (Karnataka)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12622 श्रीमती इन्दु जी बोहरा, बोहरा मेंशन, प्रभात टॉकिज के पीछे, अजमेर (राजस्थान)
12623 प्रो.(डॉ.) निर्मलकुमार जी पगारिया,संचारनगर एक्सटेंशन, खण्डिया रोड़,इन्दौर(म.प्र.)
12624 श्री सुरेन्द्र जी भण्डारी, डी-23, कीर्ति नगर, भदवासिया रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
12625 श्री केतन जी देसर्ता, शक्ति नगर, पावटा सी रोड़,ग्लैरी पब्लिक स्कूल,जोधपुर (राज.)
12626 Sh.Mayankji Kothari,Jamli Galli,Boriwalz(W), Mumbai(M.H.)
12627 श्री प्रकाशचन्द जी चोरड़िया, इच्छवपुर, बुरहानपुर (मध्यप्रदेश)
12628 श्री दिनेश कुमार जी कोठारी, जामठी, तालुका–बोंदवड, जिला–जलगाँव (महाराष्ट्र)
12629 श्री प्रमोदजी चौपड़ा,हितैश मेडिकल स्टोर, वाकोद, तालुका–जामनेर, जलगाँव (महा.)
12630 श्री हरकचन्द जी लूंकड, वाकोद, जामनेर, जलगाँव (महाराष्ट्र)
12631 श्री सुनील कुमार जी छाजेड़, 177, शनिपेठ, 28 नं. स्कूल के पीछे, जलगाँव (महा.)
12632 श्री रमेशचन्द जी चतुरमुथा, प्लॉट नं. 7, दादुसिंह कॉलोनी, शिरपुर, धुलिया (महा.)
12633 श्री पुरुषोत्तम कडु जी शिंदे, नौन्द्रा (ममुराबाद), धामणगाँव, जलगाँव (महाराष्ट्र)
12634 श्री सन्तोष कुमार जी सुराणा, रेणुका कॉलोनी, चाँदवड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12635 श्री दिनेश जी जैन, 703 ए, वामा बिल्डिंग, संघवी नगर, मीरा रोड़, थाना (महाराष्ट्र)
12636 श्री निर्मल कुमार जी जैन, प्लाट नं. 40, शान्ति कॉलोनी, बासबदनपुरा, जयपुर (राज.)
12637 श्री मदनलाल जी जीरावाला, चूड़ीगरों का बास, बालोतरा, जिला–बाड़मेर (राजस्थान)
12638 श्री नितीन कुमार जी सुराणा, खरगाई नाका, भड़गाँव रोड़,चालीसगाँव,जलगाँव (महा.)
12639 श्री मनोज कुमार जी कोठारी, रूकमणी नगर, रामानन्द के नीचे, जलगाँव (महाराष्ट्र)
12640 श्री राजीवजी मेहता,मेहता सदन,325/2,दयानन्द कॉ.(नरसिंगपुरा),अजमेर (राज.)
12642 श्री प्रमोद कुमार जी जैन, 81-बी, राम नगर एक्सटेंशन, देवासा (मध्यप्रदेश)
12643 श्री दिलीप कुमार जी जैन, द्वारा : अरिहन्त ट्रेडर्स, पुरानी धान मण्डी, कोटा (राज.)
12644 श्री विनोद कुमार जी पोरवाल, उम्मेद भवन, बम्बों का मौहल्ला, पुरानी टोंक (राज.)
12645 श्री शैलेन्द्र जी बोथरा, डी-26, बी.टी.एम., ग्राउण्ड फ्लोर, भीलवाड़ा (राजस्थान)
12646 श्री सुरेशकुमारजी सालेचा, 69, विमलनाथ कॉलोनी, बालोतरा, जिला–बाड़मेर (राज.)
12647 Shri Rakesh ji Jain, B-77, Sector No. 9, Rohini, Delhi
12649 श्री हँसमुख भाई जी जैन, 4 टाउन हॉल शोपिंग सेन्टर, जामनगर (गुजरात)
12652 श्री सुमेरचन्द जी जैन, 78, सूर्य नगर, आगरा–282002 (उत्तरप्रदेश)
12653 श्री पुष्पदन्तजी जैन,बजरंग निवास, गुलाबबाड़ी अन्दर,आर्य समाज रोड़, कोटा (राज.)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12641 श्री मैनेजर महोदय, सार्वजनिक वाचनालय, भीनासर, जिला-बीकानेर (राजस्थान)
12648 Shri S.M. Prakash Chand ji, Madurawtakam(Tamilnadu)
12650 Shri P. Ramesh Chand ji Jaangad, Chennai(Tamilnadu)
12651 श्री तेजसिंहजी नाहर, आँचलियों का मौहल्ला, बड़ी मस्जिद के पास, बेगूँ, चित्तौड़गढ़

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

5000/- कल्याणमल कनकमल चौरडिया ट्रस्ट, चेन्नई, द्वारा कनकमल जी चोरडिया के दिनाँक 14 मई, 2010 को संथारापूर्वक समाधिमरण होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

5000/- श्रीमती चाँदबाई जी बरड़िया (अलवर वाले), अहमदाबाद, स्व. श्री पूनमचन्द जी पुत्र श्री जवाहरलाल जी बरड़िया की पुण्यस्मृति में भेंट।

2500/- श्री दामोदर प्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्री सुश्री दीपिका जी जैन की जैन भागवती दीक्षा बालोतरा में आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री धनरूपचन्द जी मेहता (पीपाड़ वाले),बैंगलुरु, पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त आदि ठाणा के बालोतरा में सपरिवार दर्शन लाभ एवं पाँच दीक्षा प्रसंग तथा पारणक महोत्सव सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री विजय कुमार जी, जितेन्द्र कुमार जी सुराणा (नागौर वाले), कोलकात्ता, श्रीमती रतन देवी धर्मपत्नी श्री विजय कुमार जी सुराणा कोलकात्ता के बालोतरा में वर्षीतप का पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री राजूलाल जी, नरेन्द्रमोहन जी, जिनेन्द्र कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री समता जी जैन सुपुत्री श्री नरेन्द्रमोहन जी-श्रीमती चमेली देवी जी जैन की भागवती दीक्षा 15 मई, 2010 को बालोतरा में आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1300/- श्री ऐलिसब्रिज स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-पालड़ी, अहमदाबाद, ससंघ पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा के बालोतरा में दर्शन लाभ, अक्षय तृतीया एवं पाँच दीक्षा सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुशील जी जैन, जयपुर, श्री एस. सी. जैन की पुत्रवधू श्रीमती शालिनी जी जैन धर्मपत्नी श्री सुशील जी जैन की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री एस. पदमचन्द जी छाजेड़, चेन्नई, पूज्य माताश्री स्व. श्रीमती मोहनीदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचन्द जी छाजेड़ की पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्री पी.सी. जैन, श्रीमती चन्द्रा जी अंबानी, रचित जी जैन, जोधपुर, स्व. श्री चंचलमल जी अबानी एवं स्व. श्रीमती पारसकंवर जी अबानी की पुण्यतिथि पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री आर. सी. सिंघवी एवं उनके पारिवारिक जन, जोधपुर, श्रीमती मानकँवर जी एवं श्री किस्तूरचन्द जी सिंघवी की शादी की 75वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सुगनदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, नदबई, पूज्य आचार्य भगवन्तश्री के परोक्ष कृपा प्रसाद से श्रीमती सुगनदेवी जी के एकान्तर वर्षीतप की आराधना सुखसाता पूर्वक सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री अमितकुमार जी, अभिजीत कुमार जी मेहता (पीपाड़ वाले), बैंगलुरु, पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त आदि ठाणा के बालोतरा में मातुश्री श्रीमती मंजू जी मेहता के

वर्षीतप के पारणे पर सपरिवार दर्शन लाभ तथा पाँच दीक्षा सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्रीमती माया जी जैन धर्मपत्नी श्री अशोक जी जैन, भरतपुर, विरक्ता बहन सुश्री ऐलिजा जी जैन की जैन भागवती दीक्षा प्रसंग पर शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री प्रकाशमल जी, सुनील कुमार जी, हर्ष जी बोथरा, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त आदि ठाणा के बालोतरा में दर्शन लाभ एवं पाँच दीक्षा सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री हस्तीमल जी सुराणा (नागौर वाले), कोलकात्ता, वर्षीतप पारणा, जैन भागवती दीक्षा तथा पूज्य आचार्य भगवन्त के सपरिवार दर्शन लाभ प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

600/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर,अपने विवाह की 44 वीं वर्षगाठ एवं सुपौत्र राहुल गांग सुपुत्र योगिता एवं राजेशजी गांग के 15वें जन्मदिवस दिनाँक 11 जून, 2010 के उपलक्ष्य में।

501/- श्री कल्याणमल जी जैन, चौरू, धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवी जी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

500/- श्री अमरलाल जी मेहता, जोधपुर, मेघना मेहता सुपुत्री अनिलकुमार जी मेहता(सी.ए.) के सी.बी.एस.ई. की दसवीं की परीक्षा में 93 प्रतिशत व बिड़ला पब्लिक स्कूल डोहकतर में श्रेष्ठ आने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री गौतमचंद जी हेमराज जी जैन, मु.पो. मुई वाया कुश्तला, जिला-सवाईमाधोपुर, आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर से देव गुरु धर्म का स्वरूप समझने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री महावीर प्रसाद जी जैन, श्रीमती विमला देवी जैन, जवाहरनगर, कोटा में दिनाँक 2 नवम्बर, 2009 को विदुषी महासती सौभाग्यवती जी म.सा. से आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री राजेन्द्र कुमार जी सुरेश जी मेहता (सी.ए.), मुम्बई दिनांक 27.4.2010 को जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती संतोष देवी-नरपतराज जी चौपड़ा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री शिवांगी चौपड़ा सुपुत्री श्रीमती अनुपूर्णा-महीपतराज जी चौपड़ा के सी.बी.एस.ई. सैकण्डरी परीक्षा A-one ग्रेड से उत्तीर्ण करने की खुशी में भेंट।

500/- श्री दाड़मचन्द जी, मुकेश कुमार जी, हर्ष जी रांका, भीलवाड़ा श्रीमती अनुराधा जी रांका धर्मपत्नी श्री दाड़मचन्द जी रांका के दो वर्ष से निरन्तर एकान्तर वर्षीतप की साधना चलने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती रूकमणी देवी जी तातेड़, दिल्ली, श्री खूबचन्द जी तातेड़ का दिनांक 03 मई, 2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

500/- श्री धनरूपमल जी हीरावत, जयपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त एवं उपाध्याय भगवन्त आदि ठाणा के बालोतरा में दर्शन लाभ प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री बुधमल जी, पदमचन्द जी, चैनराज जी, मृगेश जी कोठारी, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त आदि ठाणा के बालोतरा में दर्शन लाभ एवं पाँच दीक्षा सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती निर्मला जी, श्री शरदचन्द जी, सुनीलचन्द जी, नवीन कुमार जी गादिया, आगरा, स्व. श्री वीरेन्द्र कुमार जी गादिया की पुण्यस्मृति में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल में साहित्य प्रकाशन हेतु प्राप्ति-स्वीकार

30000/- श्री केवलमल जी लोढ़ा, जयपुर, सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार जी लोढ़ा की सुपुत्री सौ.कां. मनाली

का शुभ विवाह दिनांक 07 फरवरी, 2010 को सम्पन्न होने की खुशी में पूज्य पिताश्री श्री केवलमल जी लोढ़ा द्वारा लिखित पुस्तक 'जैनागम स्तोक रत्न' के पुनः मुद्रण हेतु भेंट।

20000/- श्री राजूलाल जी, नरेन्द्रमोहन जी, जिनेन्द्र कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री समता जी जैन सुपुत्री श्री नरेन्द्रमोहन जी-श्रीमती चमेली देवी जी जैन की भागवती दीक्षा 15 मई, 2010 को बालोतरा में आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से सम्पन्न होने की खुशी में तथा पुस्तक 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

5000/- श्री ज्ञानेश कुमार जी मुणोत, नवसारी, स्व. श्री अंकित कुमार जी मुणोत की प्रथम पुण्यस्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

स्वाध्याय संघ हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

5000/- चैनकंवर कनकमल चोरडिया ट्रस्ट, चेन्नई, श्रीमान् रंगरूपमल जी चोरडिया को संरक्षक सदस्य बनाने हेतु भेंट।

2100/- श्री राजूलाल जी, नरेन्द्रमोहन जी, जिनेन्द्र कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री समता जी जैन सुपुत्री श्री नरेन्द्रमोहन जी-श्रीमती चमेली देवी जी जैन की भागवती दीक्षा 15 मई, 2010 को बालोतरा में आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त साभार

25000/- श्री रिखबचन्द जी सुभाषचन्द जी अशोककुमार जी श्रेणिक कुमार जी धोका, मैसूर, पूज्य पिताजी श्री विमलचन्द जी धोका की पावन स्मृति में भेंट।

5100/- श्री चुन्नीलाल जी बाघमार, मेड़ता सिटी, हाल मुकाम चेन्नई, अपने सुपुत्र चि. जतनराज बाघमार के बालोतरा में वर्षीतप का पारणा करने के उपलक्ष्य में भेंट।

3100/- श्री आनन्दकुमार जी विनोदकुमार जी नाहटा, बंगारपेट, पूज्य माताश्री श्रीमती कमलाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री हीरालाल जी नाहटा के वर्षीतप के पारणा के उपलक्ष्य में भेंट।

श्राविका मंडल जयपुर हेतु प्राप्ति-स्वीकार

10000/- श्रीमती पूर्णिमा जी-विनोद जी लोढ़ा, जयपुर, पुत्र चि. विज्ञान (सुपौत्र श्री केवलमल जी लोढ़ा) संग पूर्वी के साथ सगाई होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

आगामी पर्व

जयेष्ठ शुक्ल 8 शनिवार	19.06.2010	अष्टमी
जयेष्ठ शुक्ल 11 मंगलवार	22.06.2010	आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ
जयेष्ठ शुक्ल 14 शुक्रवार	25.06.2010	चतुर्दशी, क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. की 165 वीं पुण्यतिथि
जयेष्ठ शुक्ल 15 शनिवार	26.06.2010	पक्खी,
आषाढ़ कृष्ण 2 सोमवार	28.06.2010	214 वां क्रियोद्धारक दिवस
आषाढ़ कृष्ण 8 सोमवार	05.07.2010	अष्टमी
आषाढ़ कृष्ण 14 शनिवार	10.07.2010	चतुर्दशी
आषाढ़ कृष्ण 30 रविवार	11.07.2010	पक्खी
आषाढ़ शुक्ल 8 रविवार	18.07.2010	अष्टमी

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 05 सितम्बर से 12 सितम्बर 2010 तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 15 जुलाई 2010 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम...................जिला...............प्रान्त.................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...

....

4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं...

....

5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन...

....

6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?..
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव...
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street, Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), मो.09380997333

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

Gurudev

SURANA™

yes, the best — TMT RE-BARS

DRI Plant

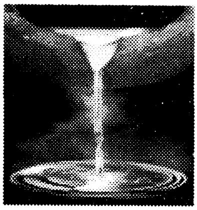

Electric Arc Furnace

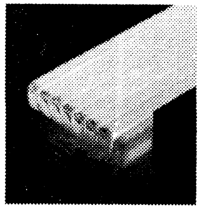

Billets

Rolling Mil

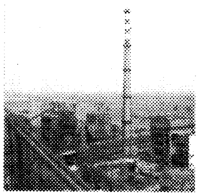

Captive Power Plant

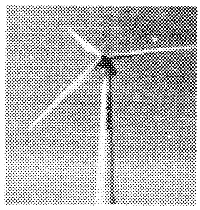

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/

Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी ।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर

आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन समर्पित करने के लिए एवं आचार्य श्री के फरमान सामायिक - स्वाध्याय का शंखनाद करने के लिए अखिल भारतीय श्री रत्न युवक परिषद् के तत्त्वाधान में 21 मई, 2010 से 6 जून, 2010 तक ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन शाखा स्तर पर किया जा रहा हैं। अधिक जानकारी एवं केन्द्रीय सहयोग के लिए सम्पर्क करें - जितेन्द्र सा डागा (9829011589) एवं परेश सा कोठारी (9314512649)

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाईये,
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/- के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें -

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
7. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगांव (09422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें -

B. Budhmal Bohra

No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.) • Telefax : 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 6 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जून, 2010 ★ ज्येष्ठ, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।